अर्कादी स्त्रुगात्स्की, बोरीस स्त्रुगात्स्की

मुन्ना

साहसिक और वैज्ञानिक
गल्प माला

रादुगा प्रकाशन में 'साहसिक और वैज्ञानिक गल्प माला' की पुस्तकों में से प्रकाशित हो चुकी हैं: अ० तोलस्तोय 'चार दिन की चांदनी', अ० तोलस्तोय 'अएलीता', अ० बेल्यायेव 'एक था जलथलिया ...'।

अर्कादी स्त्रुगात्स्की,
बोरीस स्त्रुगात्स्की

मुन्ना


रादुगा प्रकाशन · मास्को


पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५


राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादक: योगेन्द्र नागपाल
चित्रकार: ओ० ओर्लोवा

Аркадий Стругацкий
Борис Стругацкий

МАЛЫШ

На языке хинди

Strugatsky A.,
Strugatsky B.

SONNY BOY

In Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-003230-X

अध्याय एक

शून्य और सन्नाटा

"पता नहीं क्यों," माया बोली, "मुझे अजीब सा खटका हो रहा है।..."

हम ग्लाइडर के पास खड़े थे, वह जमीन पर आंखें गड़ाये थी और ठंड से जमी रेत पर एड़ी ठकठका रही थी।

मेरी समझ में नहीं आया, क्या जवाब दूं। मुझे कोई खटका नहीं हो रहा था, लेकिन यह जगह मुझे भी पसंद नहीं आयी थी। आंखें सिकोड़कर मैं आइसबर्ग को देखने लगा। एक विशाल, कंगूरेदार, दूधिया चट्टान की तरह वह क्षितिज पर उभरा हुआ था, उसकी सफ़ेदी चकाचौंध करती थी। अत्यधिक ठंडा और अत्यधिक निश्चल था वह—एकदम अखंड, किसी भी तरह की झिलमिल और धूप-छांव के खेल का कोई चिन्ह तक नहीं। लगता था लाखों साल पहले जैसे वह इस सपाट तट पर आ लगा था, बस वैसे ही और लाखों बरस तक यहीं खड़ा रहेगा—अपने उन सब बंधुओं के लिए ईर्ष्या का कारण बना, जो खुले महासागर में भटकते फिरते हैं। सुरमई-पीला बालुई तट अरबों तुषार कणों से चमचमाता हुआ उसकी ओर चला गया था, दायीं ओर समुद्र था—तरल सीसे जैसा, धातु जैसा ठंडा-यख, उसकी सतह पर ऊर्मियां फैली हुई थीं, क्षितिज के पास वह स्याह काला था और उसमें अस्वाभाविक निष्प्राणता थी। बायीं ओर गरम चश्मों और दलदल के ऊपर मटमैले कोहरे की परतें फैली हुई थीं। कोहरे के पीछे कंटीले टीलों का आभास होता था और उनके आगे स्याह चट्टानें सिर उठाये खड़ी थीं। तट के साथ-साथ जहां तक नजर जाती थी हिम

के चकत्तोंवाली ये चट्टानें चली गयी थीं। चट्टानों के ऊपर फैला निरंभ्र आकाश भी निरानंद था। बर्फ़ीले, मटमैले-बैंगनी आकाश में छोटा सा, तापहीन सूरज उग रहा था।

वंडरहूज़ ने ग्लाइडर में से निकलकर झट से सिर पर फ़र का हुड ताना और हमारे पास चला आया।

"मैं तैयार हूं," उसने सूचना दी। "कोमव कहां है?"

माया ने कंधे उचका दिये और ठंड से जमी उंगलियों पर फूंक मारी।

"आता होगा," अनमनी सी वह बोली।

"आज आप किधर जा रहे हैं?" मैंने वंडरहूज़ से पूछा। "झील पर?"

वंडरहूज़ ने सिर को थोड़ा पीछे को झुकाया, निचला होंठ आगे निकाला और अपनी नाक के सिरे के ऊपर उनींदी नज़र मुझ पर डाली—इस मुद्रा में वह हूबहू ज्ञान गलमुच्छोंवाला बूढ़ा ऊंट लगता था।

"बोर होते हो यहां अकेले," सहानुभूति भरे स्वर में वह बोला। "मगर सहना पड़ेगा, क्या ख्याल है?"

"यही ख्याल है कि सहना पड़ेगा।"

वंडरहूज़ ने सिर और भी पीछे झुका लिया और उसी ऊंटों जैसे दंभ के साथ आइसबर्ग पर नज़र डाली।

"हां," सहानुभूति भरे स्वर में वह बोला। "बिल्कुल पृथ्वी जैसा है, लेकिन पृथ्वी नहीं। पृथ्वी-सदृश जगतों के साथ यही मुसीबत है। हमेशा यही लगता है कि तुम्हें धोखा दिया गया है, लूट लिया गया है। पर, ख़ैर, इसका भी आदी हुआ जा सकता है। क्या ख्याल है तुम्हारा, माया?"

माया ने कोई जवाब नहीं दिया। आज वह कुछ ज़्यादा ही उदास थी, या फिर गुस्से में थी। बहरहाल माया के साथ ऐसा होता रहता है, उसे यह अच्छा लगता है।

हमारी पीठ पीछे एक हल्के छपाके के साथ हैच की झिल्ली फटी और कोमव रेत पर कूदा। चलते-चलते ही, जल्दी में वह फ़र कोट की ज़िप बंद कर रहा था।

"तैयार?"

"तैयार," वंडरव्रूज़ बोला। "आज किधर जायेंगे? फिर से झील पर?"

"हूं," गले पर ज़िप ठीक करते हुए कोमव ने कहा। "जहां तक मैं समझा हूं, माया, आज आपके ज़िम्मे वर्ग चौसठ है। मेरे निर्देशांक-बिंदु हैं: झील का पश्चिमी तट, टीला नं० सात, टीला नं० बारह। समय-सारिणी रास्ते में तय कर लेंगे। पपोव, आप रेडियो संदेश भेज दीजियेगा, मैं रेडियो-रूम में रख आया हूं। ग्लाइडर के ज़रिये मेरे साथ संपर्क रहेगा। वापसी स्थानीय समय के अनुसार अठारह शून्य-शून्य पर। देर होने पर सूचना दे देंगे।"

"समझ गया," बिना किसी उत्साह के मैंने कहा। देरी होने की संभावना का यह ज़िक्र मुझे अच्छा नहीं लगा था।

माया चुपचाप ग्लाइडर के पास गयी। कोमव ने आखिर ज़िप बंद कर ली, छाती पर हाथ फेरा और ग्लाइडर के पास चला गया। वंडरव्रूज़ ने मेरा कंधा दबाया।

"इन सब नज़ारों पर नज़रें मत गड़ाये रहना," उसने सलाह दी, "ज़्यादातर घर पर ही रहने की कोशिश करना, पढ़ते रहना। बेकार की सोचों में मत पड़ना।"

वह इत्मीनान से ग्लाइडर में घुसा और पायलट की सीट पर जमकर उसने हाथ हिलाया। माया ने भी आखिर चेहरे पर मुस्कान लाकर हाथ हिला दिया। कोमव ने मेरी ओर देखे बिना ही सिर हिलाया, कॉकपिट बंद हो गया और वह मेरी आंखों से ओझल हो गया। ग्लाइडर निस्स्वर चला, तेज़ी से आगे और ऊपर को उठा, फिर तुरंत ही छोटा सा काला बिंदु बनकर विलीन हो गया। मैं अकेला रह गया।

थोड़ी देर तक मैं फ़र कोट की जेबों में हाथ घुसाये खड़ा रहा और यह देखता रहा कि मेरे जवान कैसे काम कर रहे हैं। रात भर उन्होंने खूब काम किया था, थकावट से मुरझा गये थे और अब अपने ऊर्जाग्राहक पूरी तरह

खोले दनादन उस पतले पेय के घूंट भर रहे थे, जो बेदम बैंगनी सूरज उंडेल रहा था। और किसी बात की चिंता उन्हें नहीं थी। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए था, यहां तक कि उन्हें मेरी भी ज़रूरत नहीं थी, कम से कम उस समय तक जब तक उनका प्रोग्राम पूरा नहीं हो जाता। हां, वह बेढब मोटू टॉम, हर बार जब मैं उसके दृष्टि-परिसर में आता तो माथे पर लाल संकेत जला देता। यह समझा जा सकता था कि वह शिष्टतावश सलाम कर रहा है, लेकिन मैं जानता था कि इसका अर्थ बस इतना है: "यहां सब ठीक-ठाक है, काम कर रहे हैं। कोई नया आदेश तो नहीं?" मेरे पास कोई नया आदेश नहीं था। मेरे पास तो बस ढेरों एकांत था और था सन्नाटा ही सन्नाटा, मुर्दनगी भरा सन्नाटा।

यह ध्वनि प्रयोगशाला की वह बोझिल खामोशी नहीं थी, जिससे कान बजने लगते हैं, और न ही पृथ्वी पर उपनगरीय संध्या की वह प्यारी नीरवता थी, जो अपनी स्निग्धता से मस्तिष्क को ताज़गी प्रदान करती है, मन को शांत करती है और संसार में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ है उसके साथ तुम्हें एकाकार करती है। यह खास ही तरह का सन्नाटा था—बींधता हुआ, पारदर्शी, निर्वात जैसा, जिससे सारी तंत्रिकाएं तन जाती हैं—एक विशाल और एकदम सूखे जगत का सन्नाटा।

फंदे में फंसे शिकार की तरह मैंने मुड़कर देखा। वैसे तो शायद अपने बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिए था: "मैंने मुड़कर देखा।" लेकिन मैंने वास्तव में बस यों ही नहीं, बल्कि फंदे में फंसे शिकार की तरह मुड़कर देखा था। बैंगनी सूरज निस्स्वर चमक रहा था। इसका कुछ करना चाहिए था।

मिसाल के लिए आखिर हिम्मत करके आइसबर्ग तक जाया जा सकता था। आइसबर्ग तक कोई पांच किलोमीटर की दूरी थी। हमारे आम निर्देशों में तो ड्यूटी पर नियुक्त

व्यक्ति को यान से सौ मीटर से अधिक दूर जाने की सख्त मनाही है। शायद, किन्हीं दूसरी परिस्थितियों में निर्देशों का उल्लंघन करके जोखिम उठाने का ज़बरदस्त प्रलोभन होता। लेकिन यहां इसमें कोई तुक नहीं थी। यहां मैं पांच क्या पच्चीस किलोमीटर दूर भी जा सकता था—न मेरा कुछ बिगड़नेवाला था, न यान का, न ही दसियों दूसरे यानों का, जो मुझसे दक्षिण में इस ग्रह के सभी जलवायु कटिबंधों में उतरे थे। इन टेढ़े-मेढ़े झुरमुटों में से मुझे खा डालने के लिए कोई रक्तपिपासु वीभत्स जीव नहीं निकलेगा—यहां ऐसा कुछ नहीं है। यहां ऐसा नहीं होगा कि समुद्र से कोई तूफ़ान उठे और यान को इन मनहूस चट्टानों पर पटक दे—यहां न कोई तूफ़ान देखे गये हैं, न भूकंप आदि कोई अन्य प्राकृतिक विपदाएं। यहां कैम्प से जैव संकट की घोषणा का कोई निर्विलंब संदेश नहीं आयेगा—यहां जैव संकट उत्पन्न नहीं हो सकता, यहां न कोई ऐसे वाइरस हैं, न कोई ऐसे बैक्टीरिया, जो बहुकोशिक जीवों के लिए खतरनाक हों। कुछ भी तो नहीं है इस ग्रह पर, सिवाय समुद्र, चट्टानों और बौने वृक्षों के। यहां निर्देशों का उल्लंघन करने में क्या मज़ा है भला!

निर्देशों का पालन करना भी यहां एकदम नीरस है। किसी दूसरे, ढंग के जैव सक्रियतावाले ग्रह पर मैं खाक ऐसे खड़ा होता—अवतरण के तीसरे ही दिन जेबों में हाथ डाले। वहां तो मुझे दम लेने की फ़ुर्सत न होती। प्रहरी-टोही को ट्यून करना, उसे छोड़ना और प्रति दिन ट्यूनिंग की जांच करनी होती। यान के गिर्द और निर्माण स्थली के गिर्द भी 'पूर्ण जैव निरापदता क्षेत्र' बनाना होता। यह देखना होता कि इस क्षेत्र पर ज़मीन के नीचे से कोई आक्रमण न हो जाये। हर दो घंटे बाद फ़िल्टरों की जांच करनी और उन्हें बदलना होता: यान के बाहरी फ़िल्टर और भीतरी फ़िल्टर तथा व्यक्तिगत फ़िल्टर—सभी की। सभी अपशिष्ट पदार्थों को, फ़िल्टरों को भी दफ़नाने का प्रबंध

करना होता। हर चार घंटे बाद साइबरयंत्रों की संचालन पद्धतियों का रोगाणुनाशन, विगैसन और रेडियोधर्मिता निष्क्रियण करना होता। 'क्षेत्र' के बाहर छोड़े गये डाक्टरी सेवा के रोबोटों की सूचनाओं पर नज़र रखनी होती। और भी कितनी ही छोटी-मोटी बातें होतीं: मौसम सर्वेक्षण गुब्बारे, भूकंपीय टोह, भूस्खलन, दावानल, ज्वालामुखियों के विस्फोट।...

मैंने कल्पना की कि कैसे मैं अंतरिक्षीय पोशाक पहने, पसीने से तर काम कर रहा हूं, नींद पूरी न होने के कारण झल्लाया हुआ हूं, दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा, मोटू टॉम की तंत्रिका गंडिकाएं धो रहा हूं, और प्रहरी-टोही मेरे सिर के ऊपर मंडराता हुआ मूढ़मति की तरह बीसवीं बार दोहरा रहा है कि उस झाड़ी तले किसी अज्ञात प्रजाति का डरावना मेंढक निकल आया है, उधर ईयरफ़ोन में बुरी तरह परेशान डाक्टरी रोबोटों के संकट संकेत गूंज रहे हैं, जिन्हें यह पता चला है कि यहां का अमुक स्थानीय वाइरस बाल्टरमैंस टेस्ट पर असामान्य परिणाम दे रहा है, सो सिद्धांतत: वह जैवनाकाबंदी तोड़ सकता है। वंडरहूज एक डाक्टर और कप्तान के नाते यान में बैठा है और चिंतापूर्वक मुझे यह सूचना दे रहा है कि दलदल में धंस जाने का खतरा पैदा हो गया है। उधर कोमव पूर्णत: भावशून्य स्वर में यह सूचना दे रहा है कि ग्लाइडर का इंजन चींटियों जैसे कीड़े खा गये हैं और अब ये चींटियां उसकी अंतरिक्षीय पोशाक पर अपने दांत आज़मा रही हैं।... उफ़! वैसे तो ऐसे ग्रह पर मुझे कोई ले जाता ही न। मुझे ठीक ऐसे ग्रह पर ही भेजा गया है, जिसके लिए कोई निर्देश नहीं लिखे गये हैं, क्योंकि उनकी यहां कोई ज़रूरत ही नहीं है।

हैच के सामने मैं रुका, तलों पर चिपक गये रेत के कण झाड़ दिये, यान के गरमाहट देते बगल पर हाथ रखकर थोड़ी देर खड़ा रहा, और फिर झिल्ली में उंगली

गाड़ दी। यान में भी खामोशी थी, लेकिन यह घरेलू खामोशी थी, आरामदेह, खाली घर की खामोशी। फ़र कोट उतारकर मैं सीधा रेडियो रूम में चला गया। अपने कंट्रोल डेस्क के पास मैं नहीं रुका—सरसरी नजर से ही मैं समझ गया था कि सब कुछ ठीक-ठाक है। सीधा जाकर वायरलैस पर बैठ गया। रेडियो संदेश मेज पर रखे हुए थे। मैंने कोडित्र ऑन किया और संदेश फ़ाइल करने लगा। पहले रेडियो संदेश में कोमव ने बेस कैम्प को प्रस्तावित डेरों के बिंदु निर्देशांक सूचित किये थे, कल झील में छोड़े गये पोनों के बारे में रिपोर्ट दी थी और कितामुरा को परामर्श दिया था कि सरीसृपों के मामले में जल्दबाज़ी न करे। यह सब तो कमोबेश समझ में आता था, लेकिन केंद्रीय सूचनालय के नाम जो संदेश था, उससे मैं बस इतना ही समझ पाया कि कोमव को चार स्तरीय सूचकांक के (जो कुल जमा नौ अंकों और चौदह यूनानी वर्णों का है) द्विसामान्य मानवाभ के वाई फ़ैक्टर के आंकड़ों की सख्त जरूरत है। यह तो पूर्ण और अबोधगम्य उच्च विजातिमनोविज्ञान था, जो मेरे लिए, शून्य सूचकांकवाले किसी भी सामान्य मानव की ही भांति, काला अक्षर भैंस बराबर था। कोई जरूरत भी नहीं थी मुझे इसे समझने की।

संदेश पंच करके मैंने स्पैशल चैनल ऑन किया और एक ही आवेग में सारी सूचनाएं भेज दीं। फिर मैंने रेडियो संदेश रजिस्टर कर लिये और तब मेरे दिमाग में यह बात आयी कि मुझे भी अपनी पहली रिपोर्ट भेज देनी चाहिए। वैसे, रिपोर्ट का यहां मतलब ही क्या था: "ई० आर०-2 ग्रुप, निर्माण-कार्य मानक 15 के अनुसार, पूर्ति इतने प्रतिशत, तिथि, हस्ताक्षर।" बस। मुझे उठकर अपने स्विच बोर्ड पर जाना पड़ा, ताकि कार्य-पूर्ति के चार्ट पर नजर डाल सकूं। वहां पहुंचते ही मैं तुरंत समझ गया कि यह रिपोर्ट भेजने की बात क्यों अचानक मुझे सूझी। बात

रिपोर्ट की नहीं थी, बस, एक अनुभवी साइबरटेक्नीशियन के नाते कुछ देखे और सुने बिना ही मुझे काम में गड़बड़ी का अहसास हो गया था: टॉम फिर से थम गया था, बिल्कुल कल की ही तरह, बिना किसी वजह के। कल की ही भांति मैंने झुंझलाकर कंट्रोल कॉल का बटन दबाया: "क्या बात है?" कल की ही भांति थमने का संकेत तुरंत बुझ गया और उसके स्थान पर लाल बत्ती जल उठी: "यहां सब ठीक-ठाक है, काम कर रहे हैं। कोई नया आदेश तो नहीं?" मैंने उसे काम जारी रखने का आदेश दिया और दृश्यपटल ऑन कर दिया। जैक और रैक्स जतन से काम कर रहे थे, टॉम भी चल पड़ा, लेकिन पहले कुछ सेकंडों में वह कुछ अजीब ढंग से, मानो किसी से बचकर निकलता हुआ आगे बढ़ा, परंतु फिर सीधा हो गया।

"अरे याड़ी," मेरे मुंह से निकला, "लगता है तू ज्यादा ही थक गया, तेरी सफ़ाई करनी चाहिए।" मैंने टॉम की डायरी देखी। आज शाम को उसकी सफ़ाई का समय था। "ठीक है, शाम तक किसी तरह गुज़ारा कर लेंगे। क्या ख्याल है?"

टॉम को कोई एतराज़ नहीं था। थोड़ी देर तक मैं उन्हें काम करते देखता रहा, फिर मैंने दृश्यपटल बुझा दिया: आइसबर्ग, दलदल पर कोहरा, काली चट्टानें... इन सबको देखते रहने की कोई इच्छा नहीं थी।

मैंने रिपोर्ट भेज ही दी और तुरंत ही ई॰ आर॰-6 से संपर्क किया। वादिक ने झट से उत्तर दिया, मानो मेरी ही प्रतीक्षा कर रहा हो।

"कहो, क्या खबर है?" हमने एक दूसरे से पूछा।

"यहां तो कोई खबर नहीं," मैंने जवाब दिया।

"हमारे यहां छिपकलियां मर गयीं," वादिक ने बताया।

"वाह रे!" मैं बोला। "डा॰ म्बोगा का चहेता शिष्य

कोमव कितनी बार तो चेतावनी दे चुका है: सरीसृपों के मामले में जल्दबाज़ी मत करो।"

"जल्दबाज़ी कौन कर रहा है?" वादिक ने आपत्ति की। "मेरी राय पूछो तो वे यहां बच ही नहीं पायेंगे। बला की गर्मी है!"

"तैरते हो?" मैंने ईर्ष्या से पूछा।

वादिक थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला:

"डुबकी लगा लेते हैं, कभी-कभार।"

"ऐसी क्या बात है?"

"समुद्र सूना है," वादिक ने कहा। "जैसे कि कोई विराट टब हो... तुम नहीं समझ पाओगे। आम आदमी ऐसे टब की कल्पना भी नहीं कर सकता। मैं यहां तैरते-तैरते तट से पांच किलोमीटर दूर जा पहुंचा था, पहले तो सब ठीक था, फिर मुझे ख्याल आया कि यह तो तरण-ताल नहीं महासागर है! और मेरे अलावा यहां एक भी जीव नहीं है... नहीं, दोस्त, तुम यह नहीं समझ पाओगे। मैं तो डूब ही चला था।"

"हुं," मेरे मुंह से निकला, "मतलब, तुम्हारे यहां भी..."

और कुछेक मिनट तक हम इधर उधर की बातें करते रहे, फिर बेस कैंप ने वादिक को बुलाया और हमने जल्दी से विदा ली। मैंने ई० आर०-9 को वायरलैस पर बुलाया। हंस ने जवाब नहीं दिया। बेशक, मैं ई० आर०-1, ई० आर०-3, ई० आर०-4 और इस तरह ई० आर०-12 तक से बारी-बारी संपर्क कर सकता था, यह बातें कर सकता था कि कितना सूना, कैसा निष्प्राण स्थान है यह, लेकिन क्या फ़ायदा था इस सबका? सोचा जाये तो कुछ भी नहीं। सो मैंने वायरलैस ऑफ़ कर दिया और अपने कंट्रोल डेस्क पर चला गया। थोड़ी देर तक तो मैं बस यों ही बैठा रहा—मॉनिटरों पर नज़रें टिकाये यह सोच रहा था कि हमने जिस काम का बीड़ा उठाया है, उससे हम दोहरा

भला कर रहे हैं: हम न केवल पांटावासियों को अवश्यंभावी विनाश से बचा रहे हैं बल्कि इस ग्रह का भी उद्धार कर रहे हैं—इसका यह सूनापन, यह निष्प्राण सन्नाटा और निष्प्रयोजन अस्तित्व समाप्त कर रहे हैं। फिर मेरे दिमाग में यह विचार आया कि पांटावासी विचित्र ही नस्ल के होंगे, तभी तो हमारे विजातिमनोविज्ञानियों ने यह फ़ैसला किया होगा कि यह ग्रह ही उनके लिए सबसे उपयुक्त है। उनके पांटा ग्रह पर जीवन अवश्य ही विचित्र होगा। उन्हें यहां लायेंगे—बेशक, शुरू में सबको नहीं, हर कबीले के दो-दो, तीन-तीन प्रतिनिधियों को ही—और वे यह ठंड से जमा रेतीला तट, यह आइसबर्ग, यह रीता सागर और सूना बैंगनी आकाश देखेंगे और कहेंगे: "अत्युत्तम! बिल्कुल हमारे अपने ग्रह जैसा!" नहीं, विश्वास नहीं होता। यों तो उनके आने तक यह ग्रह इतना सूना नहीं रहेगा। झीलों में मछलियां होंगी, झुरमुटों में पंछी, छिछले जल में सीपियां। शायद छिपकालियां भी यहां रहने लगें।... और फिर पांटावासियों के पास और कोई चारा भी तो नहीं है। मान लीजिये, हमें पता चल जाये कि हमारा सूर्य फटनेवाला है और तब पृथ्वी पर किसी तरह का जीवन नहीं बचेगा, तो हम भी कोई नखरा न दिखाते, सोचते: "कोई बात नहीं, जैसे-तैसे जी लेंगे।" वैसे पांटावासियों से तो किसी ने कुछ पूछा ही नहीं है। वे तो समझ ही नहीं पायेंगे। उन्हें अभी यह भी नहीं पता कि अंतरिक्ष क्या होता है। उन्हें तो यह भी नहीं पता चलेगा कि वे दूसरे ग्रह पर आ बसे हैं।...

अचानक मुझे कोई आवाज़ सुनाई दी। ऐसे लगा कि कोई छिपकली पास से गुज़री है। थोड़ी देर पहले वादिक से हुई बातचीत के कारण ही शायद छिपकली का ख्याल आया होगा। वास्तव में तो यह ध्वनि प्रायः अश्रव्य थी और बिल्कुल ही अस्पष्ट। फिर रेडियो रूम के एक कोने में कुछ चटका और तुरंत ही कहीं पानी की धार बही। मकड़ी के

जाले में फंसी मक्खी की भिनभिनाहट श्रव्यता की सीमा पर ही थी, झुंझलाहट भरी तेज़ बड़बड़ाहट सुनायी दे रही थी। फिर से गलियारे में छिपकली दौड़ गयी। मैंने महसूस किया कि तनाव के कारण मेरी गर्दन अकड़ रही है और मैं उठ गया। कंट्रोल डेस्क के सिरे पर रखे मोटे संदर्भ ग्रंथ को मेरा हाथ लगा और वह भयंकर शोर करता हुआ फ़र्श पर गिर पड़ा। मैंने उसे उठाया और ज़ोर से वापस डेस्क पर पटक दिया। मार्च धुन ज़ोर से गुनगुनाता हुआ और पांव पटकता हुआ मैं गलियारे में चला गया।

यह सब सन्नाटे की वजह से है। सन्नाटे और शून्यता के कारण। वंडरहूज़ रोज़ शाम को हमें बड़ी स्पष्टता से यह समझाता है। मनुष्य प्रकृति नहीं है, वह शून्यता को बरदाश्त नहीं कर सकता। यदि वह अपने को शून्यता में पाता है तो उसे भरने के प्रयास करता है। यदि किन्हीं ठोस वस्तुओं से रिक्तता दूर नहीं कर सकता तो उसमें कल्पित दृश्य और ध्वनियां भर देता है। इन दिनों में कल्पित ध्वनियां मैं न जाने कितनी सुन चुका था। शायद शीघ्र ही काल्पनिक दृश्य भी प्रकट होने लगेंगे।...

मैं गलियारे में मार्च करता जा रहा था, खाली केबिनों, पुस्तकालय, अस्त्रागार को पार करता हुआ, डाक्टरी कक्ष के पास से गुज़रते हुए मुझे हल्की सी गंध का आभास हुआ—ताज़ी और साथ ही अप्रिय गंध, अमोनियम क्लोराइड की गंध जैसी। मैं थम गया, सूंघने लगा। जानी-पहचानी गंध थी, लेकिन समझ में नहीं आता था कि है क्या। मैंने शल्य कक्ष में झांककर देखा। सदा ऑन रहनेवाले साइबरसर्जन—छत से लटकते विशाल सफ़ेद बहुभुज—ने अपनी हरी आंखों से मेरी ओर देखा और भुजाएं हिलाते हुए काम करने की तत्परता दर्शायी। यहां गंध अधिक तीव्र थी। मैंने अतिरिक्त पंखा चला दिया और आगे चल पड़ा। ज़रा सोचो तो, कितनी तीक्ष्ण हो गयी

हैं मेरी इंद्रियां—मेरी घ्राण शक्ति तो कभी किसी काम की नहीं रही।

अपना गश्ती मार्च मैंने रसोई में पूरा किया। यहां भी भांति-भांति की गंध आ रही थी, लेकिन इन गंधों पर मुझे कोई एतराज़ नहीं था। कोई कुछ भी कहे रसोई में तो गंध आनी ही चाहिए। दूसरे यानों पर तो रसोई हो या रेडियो रूम—सब स्थान एक जैसे होते हैं। मेरे यहां ऐसा नहीं है, न होगा। मेरे यहां अपना कायदा है। सफ़ाई अपनी जगह है, पर रसोई से सुगंध आनी चाहिए—स्वादिष्ट व्यंजनों की भूख चमकानेवाली महक। यहां मुझे दिन में चार बार मेन्यू तैयार करना होता है। सो भी ऐसे में जबकि भूख बिल्कुल लगती ही नहीं क्योंकि, लगता है, भूख का सूनेपन और सन्नाटे के साथ ज़रा भी मेल नहीं बैठता।

मेन्यू तैयार करने में मुझे कम से कम आधा घंटा लगा। यह कठिन समय था, परंतु मुझसे जो कुछ भी बन सकता था मैंने किया। फिर बावर्ची को ऑन किया, उसे मेन्यू समझाया और यह देखने चल दिया कि मेरे जवान कैसे काम कर रहे हैं।

रेडियो रूम की दहलीज़ पर पहुंचते ही मैं समझ गया कि कोई दुर्घटना हुई है। मेरे डेस्क पर तीनों मॉनिटर पूर्ण विराम दिखा रहे थे। दौड़कर डेस्क तक गया और दृश्यपटल ऑन कर दिया। मेरा कलेजा बैठ गया: निर्माण स्थली सूनी पड़ी थी। ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने कभी सुना भी नहीं था कि ऐसा हो सकता है। सिर झटककर मैं बाहर के हैच की ओर लपका। साइबरों को कोई ले गया... कोई उल्का पिंड टॉम के सिर पर आ गिरा है... प्रोग्राम पगला गया है... असंभव, असंभव! मैं लपकता हुआ निर्गम कक्ष में पहुंच गया, फ़र कोट लेकर पहनने लगा, मगर बांहें आस्तीनों में नहीं पड़ रही थीं, ज़िपें जाने कहां खो गयी थीं। इधर मैं फ़र कोट से यों जूझ रहा था, उधर मेरी आंखों के सामने खौफ़नाक नज़ारा घूम रहा था:

कोई अनजाना मेरे टॉम को पालतू कुत्ते की तरह अपने पीछे-पीछे लिये जा रहा है, तीनों साइबर सीधे कोहरे की ओर, दलदल से उठती धुंध की ओर बढ़ते जा रहे हैं, वे मटमैले कीचड़ में धंसते जाते हैं और सदा के लिए विलुप्त हो जाते हैं।... पूरे ज़ोर से मैंने झिल्ली पर लात मारी और बाहर कूद गया।

मेरा सिर चकरा गया। साइबर यहां, यान के पास थे। तीनों के तीनों ने माल हैच के पास जमघट लगा रखा था, एक दूसरे को हौले से धकेल रहे थे, मानो हर कोई दूसरों से पहले यान के पेटे में पहुंच जाना चाहता हो। यह नामुमकिन था, यह खौफ़नाक था। वे मानो जल्दी से जल्दी पेटे में छिप जाने को, किसी से बचने को उतावले थे।... द्वितीयक प्रकृति में ऐसी परिघटना ज्ञात है—पागल हो गया रोबोट, ऐसी घटनाएं अत्यंत विरली होती हैं, कभी कोई निर्माण रोबोट भी पगलाया हो—ऐसा तो मैंने सुना तक नहीं था। लेकिन इस समय मैं ऐसे तनाव में था कि ऐसा कुछ देखकर भी मुझे आश्चर्य न होता। परंतु कुछ नहीं हुआ। मुझे देखकर टॉम ने कुलबुलाना बंद कर दिया और बत्ती जला दी: "आदेश की प्रतीक्षा में हूं।" मैंने दृढ़तापूर्वक हाथों से इशारा किया: "वापस लौटो, काम जारी रखो"। टॉम ने तुरंत बैक गियर ऑन किया, घूमा और निर्माण स्थली पर वापस पहुंच गया। जैक और रैक्स ने भी उसका अनुसरण किया। उधर मैं हैच के पास खड़ा था, मेरा गला बिल्कुल सूख गया था, टांगें बेदम हो गयी थीं, जी कर रहा था थोड़ी देर के लिए जहां हूं वहीं बैठ जाऊं।

परंतु मैं बैठा नहीं। मैं अपना हुलिया ठीक करने लगा। मेरा फ़र कोट टेढ़ा-मेढ़ा बंद था, कान ठंड से अकड़ रहे थे, माथे और गालों पर पसीना तेज़ी से जम रहा था। धीरे-धीरे, अपनी हर गति पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते हुए मैंने चेहरा पोंछा, फ़र कोट ठीक से बंद किया,

हुड को आंखों पर झुकाया, और दस्ताने पहने। बेशक, यह कबूल करते शर्म आती है, लेकिन सच्चाई यह है कि मुझे डर लग रहा था। सही-सही कहा जाये तो यह डर नहीं था, बल्कि जो डर मैंने अनुभव किया था उसके अवशेष थे, जिनमें लज्जा का भाव मिला हुआ था। अपने ही साइबरों से डर गया साइबरटेक्नीशियन।... मेरे लिए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि इस घटना के बारे में कभी भी और किसी को भी नहीं बताऊंगा। ज़रा सोचो तो, मेरी टांगों में कंपकंपी हो रही थी, अभी तक वे बेदम हैं, और इस वक्त मेरी सबसे बड़ी इच्छा यही है कि यान में लौट जाऊं, शांत चित्त से इस सारी घटना पर विचार करूं, कुछ संदर्भ ग्रंथ देखूं, सारे मामले को समझने की कोशिश करूं। वास्तव में तो मैं शायद अपने जवानों के पास जाते डर रहा हूं।...

दृढ़ निश्चय के साथ मैंने हाथ जेब में डाले और निर्माण स्थली की ओर बढ़ चला। साइबर ऐसे काम कर रहे थे जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। टॉम ने सदा की भांति विनम्रतापूर्वक नये आदेश मांगे। जैक कंट्रोल टॉवर की नींव तैयार कर रहा था, जैसा कि उसे प्रोग्राम के अनुसार करना चाहिए था। रैक्स अवतरण पट्टी के तैयार हिस्से पर एक सिरे से दूसरे की ओर चलता हुआ उसकी सफ़ाई कर रहा था। उनके प्रोग्राम में कहीं कुछ गड़बड़ी रह गयी लगती है। पट्टी पर कोई कंकड़-पत्थर बिखेर रखे हैं।... ये तो यहां नहीं थे और इनकी कोई ज़रूरत भी नहीं है, इनके बिना भी निर्माण सामग्री पर्याप्त है। हां, टॉम तब जो रुका था तब से वे कुछ ऐसा कर रहे थे जो उनके प्रोग्राम में दर्ज नहीं था। पट्टी पर टहनियां बिखरी पड़ी हैं।... मैंने नीचे झुककर एक टहनी उठायी और यह टहनी अपनी टांग पर मारते हुए एक चक्कर लगाया। क्यों न इन्हें इसी क्षण रोक दूं, सफ़ाई का समय आने का इंतज़ार किये बिना ही? क्या वाकई मैंने प्रोग्राम में कहीं कोई गलती कर

दी है? कुछ समझ में नहीं आता।... ईक्स ने सारे कंकड़-पत्थर जमा करके उनकी एक ढेरी लगा दी थी, उसी पर टहनी फेंककर मैं घूमा और यान की ओर चल दिया।

·

अध्याय दो

सन्नाटा और आवाज़ें

अगले दो घंटे तक मैं व्यस्त रहा, इतना व्यस्त कि न सन्नाटे का मुझे आभास रहा, न शून्य का। सबसे पहले तो मैंने हंस और वादिक से सलाह-मशविरा किया। हंस को मैंने जगा दिया था, वह उनींदे में बस बड़बड़ाने लगा, बारिश और निम्न वायुमंडलीय दाब की, और पता नहीं क्या बेसिरपैर की बातें करने लगा। वादिक को मैं बड़ी देर तक यह यकीन दिलाता रहा कि मैं मज़ाक नहीं कर रहा, उसे बुद्धू नहीं बना रहा। उसके लिए यकीन करना वाकई मुश्किल था, क्योंकि मैं तनाव की उस स्थिति में पहुंच चुका था जब अनायास ही हंसी फूटती है और रोके नहीं रुकती। अंततः मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मुझे कोई मज़ाक-वज़ाक नहीं सूझ रहा, कि मेरी इस हंसी का कारण बिल्कुल भिन्न है। तब वह भी गंभीर हो गया और बताने लगा कि उसका भी बड़ा साइबर बीच-बीच में अचानक अपने आप रुक जाता है, लेकिन इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है: बेहद गर्मी है, तकनीकी मानकों की चरम सीमा पर काम हो रहा है और पद्धति का अभी अनुकूलन नहीं हो पाया है। शायद सारी बात यह है कि मेरे यहां भीषण ठंड है? शायद, यही वजह हो—मैं अभी तक कुछ तय नहीं कर पाया था। मैं तो वादिक से यही पता लगाना चाहता था। इस पर वादिक ने ई० आर०-8 की चतुर

नीना को कॉल किया, हम तीनों ने मिलकर इस संभावना पर गौर किया, कुछ तय नहीं कर पाये और तब चतुर नीना ने मुझे सलाह दी कि मैं बेस कैंप के चीफ़ साइबरइंजीनियर से संपर्क करूं, जो इन निर्माण पद्धतियों का ही माहिर है, एक तरह से ये उसी की संतानें हैं। यह तो मैं खुद भी जानता था, लेकिन इसमें मेरी हेठी के अलावा और क्या था कि अपने बूते पर काम करते हुए तीन दिन भी नहीं हुए और मैं चीफ़ से परामर्श मांगने लगा, सो भी ऐसे में जब कि मेरे पास कहने को कुछ नहीं है, कुछ भी तो नहीं।

तो मैं अपने कंट्रोल डेस्क पर जम गया, प्रोग्राम खोलकर उसे जांचने लगा—एक-एक निर्देश, एक-एक ग्रुप, एक-एक फ़ील्ड मैं जांचने लगा। कहीं कोई कसर नहीं निकली। प्रोग्राम का जो हिस्सा मैंने खुद तैयार किया था उनकी तो मैं पहले भी अपने सिर की कसम खाकर गारंटी देने को तैयार था, अब इसके साथ अपने ईमान की कसम भी खा सकता था। स्टैंडर्ड फ़ील्डों के मामले में बात इतनी स्पष्ट नहीं थी। उनमें से कई को मैं ठीक से नहीं जानता था, और अब अगर मैं हर ऐसे फ़ील्ड को नये सिरे से कंट्रोल करना चाहता तो काम वक्त पर कतई पूरा न हो पाता। सो मैंने बीच का रास्ता अपनाया। मैंने अस्थायी तौर पर प्रोग्राम में से वे सारे फ़ील्ड निकाल दिये, जिनकी फ़िलहाल ज़रूरत नहीं थी, प्रोग्राम को अधिक से अधिक सरल बना दिया, संचालन प्रणाली में प्रोग्राम फ़ीड किया और ऑन का स्विच दबाने ही वाला था, तभी सहसा मुझे इस बात की चेतना हुई कि मैं फिर से कुछ सुन रहा हूं—कुछ ऐसा, जो बिल्कुल विचित्र है, अत्यधिक जाना-पहचाना है, परंतु जिसकी यहां कोई गुंजायश ही नहीं।

बच्चा रो रहा था। कहीं दूर, यान के दूसरे सिरे पर, बहुत से दरवाज़ों के पीछे कोई बच्चा फूट-फूटकर रो रहा

था, रोते-रोते बेहाल हो रहा था। छोटा सा बच्चा, बिल्कुल छोटा सा। शायद एक साल का होगा। मैंने धीरे-धीरे हाथ ऊपर उठाये और हथेलियां कानों से सटा दीं। रोना बंद हो गया। कानों से हाथ हटाये बिना मैं उठा। सही-सही कहा जाये तो मैंने पाया कि थोड़ी देर से मैं कान बंद किये खड़ा हुआ हूं, मेरी कमीज़ पीठ से चिपक गयी है और मुंह खुला हुआ है। मुंह बंद करके मैंने हौले से हाथ कानों से हटाये। रोने की आवाज़ नहीं आ रही थी। सदा के जैसा कमबख्त सन्नाटा छाया हुआ था, बस किसी अदृश्य कोने में मकड़ी के जाले में फंसी मक्खी भिनभिना रही थी। मैंने जेब में से रूमाल निकाला, धीरे-धीरे उसकी तहें खोलीं और बड़े जतन से माथा, गाल और गर्दन पोंछी। फिर उतनी ही धीरे-धीरे रूमाल तह करते हुए मैंने डेस्क के आगे चक्कर लगाया। मेरे दिमाग में कोई विचार नहीं था। मैंने उंगली से ठकठक की और खांसा। सब ठीक था—मुझे सुनायी दे रहा था। मैंने वापस कुर्सी की ओर कदम बढ़ाया और तभी बच्चा फिर से रोने लगा।

पता नहीं कितनी देर तक मैं बुत बना खड़ा और सुनता रहा। सबसे भयानक बात यह थी कि आवाज़ बिल्कुल साफ़-साफ़ सुनायी दे रही थी। मुझे तो यह भी समझ में आ रहा था कि यह नवजात शिशु का रुदन नहीं है और न ही कोई चार-पांच साल का बच्चा ज़िद में आकर रो रहा है—यह तो कोई नन्हा बच्चा था, जिसे अभी चलना और बोलना नहीं आता था, लेकिन वह दुधमुंहा भी नहीं रहा था। मेरा एक भतीजा है ऐसा—साल से थोड़े ऊपर का...

रेडियो कॉल की कर्णभेदी घंटी बजी, इतनी अप्रत्याशित कि मेरा दिल धक से रह गया। डेस्क का सहारा लेकर मैं वायरलैस सेट तक पहुंचा और रिसीवर ऑन किया। बच्चा अभी भी रोता जा रहा था।

"कहो, कैसा चल रहा है?" वादिक ने पूछा।

"कुछ नहीं चल रहा," मैं बोला।

"कुछ नहीं सूझा?"

"नहीं," मैंने कहा और अचानक पाया कि माइक को हाथ से ढक रहा हूं।

"तुम्हारी आवाज़ ठीक नहीं आ रही," वादिक बोला। "क्या करने की सोच रहे हो?"

"देखते हैं," मैं बुदबुदाया, मैं खुद यह नहीं समझ रहा था कि क्या कह रहा हूं। बच्चा रोता जा रहा था। अब वह इतनी ज़ोर से नहीं रो रहा था, तो भी आवाज़ उतनी ही स्पष्ट थी।

"क्या बात है, स्तास?" वादिक ने चिंतित स्वर में पूछा। "सो रहे थे क्या?"

मेरा जी कर रहा था कह दूं: "सुनो, वादिक, यहां कोई बच्चा रोता जा रहा है। मैं क्या करूं?" लेकिन अभी मुझ में इतना समझने की अक्ल बची हुई थी कि इन शब्दों का क्या अर्थ लिया जा सकता है। सो, मैंने खंखारकर कहा:

"सुनो, मैं घंटे भर बाद तुमसे संपर्क करूंगा। यहां कुछ सूझ रहा है, पर अभी मुझे पक्का यकीन नहीं है..."

"अच्छा-ऽ-ऽ", हैरान-परेशान सा होकर वादिक ने कहा और वायरलैस बंद कर दिया।

मैं थोड़ी देर और वायरलैस के पास खड़ा रहा, फिर अपने डेस्क पर लौट आया। बच्चा कुछेक सिसकियां लेकर शांत हो गया। टॉम फिर से खड़ा हुआ था। फिर से यह डिब्बा रुक गया। जैक और रैक्स भी खड़े थे। मैंने पूरे ज़ोर से कंट्रोल कॉल का बटन दबाया। कोई असर नहीं हुआ। मुझे खुद को रोना आने लगा, पर तभी ख्याल आया कि पद्धति तो बंद पड़ी है। मैंने ही तो दो घंटे पहले प्रोग्राम की जांच शुरू करते समय उसे ऑफ़ कर दिया था। क्या काम कर पाऊंगा अब मैं! मुझे तो अब बेस कैंप को

बता देना चाहिए कि मेरी जगह किसी और को भेज दें! उफ़, कैसी बदकिस्मती है।... मैंने पाया कि मैं बुरी तरह तनावग्रस्त होकर फिर से वही सब शुरू होने का इंतज़ार कर रहा हूं। मैं समझ गया कि अगर मैं यहां रेडियो रूम में ही बैठा रहा तो हर वक्त मेरे कान खड़े रहेंगे, मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा, बस यही ख्याल रहेगा कि कोई आवाज़ तो नहीं आ रही और तब मुझे न जाने क्या-क्या सुनायी देने लगेगा! ...

मैंने दृढ़तापूर्वक रोबोटों की सफ़ाई का प्रोग्राम ऑन किया, अल्मारी में से औज़ारों का बक्सा निकाला और दौड़ता हुआ ही रेडियो रूम से बाहर निकल गया। मैं अपना आत्मनियंत्रण बनाये रखने की कोशिश कर रहा था, फ़र कोट भी इस बार जल्दी ही पहन लिया। चेहरे पर लगे बर्फ़ीली हवा के थपेड़े ने मेरी चुस्ती और बढ़ायी। मेरी एड़ियों तले ठंड से जमी रेत चरमरा रही थी और मैं मुड़कर देखे बिना निर्माण-स्थली की ओर सीधे टॉम की ओर बढ़ता जा रहा था। मैं इधर-उधर भी नहीं देख रहा था। आइसबर्ग, कोहरा, समुद्र—इस सब में अब मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे बस अपने काम से मतलब था और काम मेरे पास कम नहीं था।

सबसे पहले तो मैंने टॉम के प्रतिवर्त यानी रिफ़्लेक्स जांचे। प्रतिवर्त अत्युत्तम अवस्था में थे। "वैरी गुड!" मैंने ज़ोर से कहा और बैग में से नश्तर निकालकर हाथ की एक गति से ही पृष्ठ कपाल खोल दिया, जैसे कि परीक्षाओं में हम करते थे।

मैं मगन होकर काम कर रहा था, या शायद यह कहना अधिक उचित होगा कि मैं काम पर टूट पड़ा था। बड़ी तेज़ी से, बिल्कुल सटीक ढंग से, सब कुछ सोच-समझकर किसी मशीन की तरह ही मैं काम कर रहा था। पूरी ज़िंदगी में इससे पहले कभी ऐसे काम नहीं किया था। उंगलियां जम रही थीं, चेहरा अकड़ रहा था, सांस

भी जैसे-तैसे नहीं, सूझ-बूझ के साथ लेनी होती थी ताकि टॉम के मस्तिष्क के खुले भाग पर भाप न जमे, तो भी मैं यह सोचना तक नहीं चाहता था कि साइबरों को यान की वर्कशाप में ले जाकर उनकी सफ़ाई और मरम्मत करूं। मेरा चित्त हल्का होता जा रहा था, अब कोई भी अवांछनीय ध्वनि मुझे नहीं सुनायी दे रही थी, मैं भूल ही गया था कि मुझे ऐसी कोई ध्वनि भी सुनायी दे सकती है, टॉम की समन्वय प्रणाली में बदलने के लिए पुर्जे लेने मैं यान में भी दो बार हो आया था। "तुझे एकदम नया बना दूंगा," मैं काम करते हुए कहता जा रहा था। "अब तू कामचोरी नहीं करेगा। तेरा इलाज करके तुझे एकदम फ़िट कर दूंगा, पहलवान। बंदा बना दूंगा। बोल, बनना चाहता है न बंदा? क्यों नहीं! बंदा बन जायेगा, तो तुझे प्यार मिलेगा, तेरी सेवा-टहल होगी। क्या बताऊं तुझे? अभिगृहीतों का ऐसा ब्लॉक लेकर कहां तू बंदा बनेगा? ऐसे ब्लॉक के साथ तुझे सरकस में भी नहीं लेंगे। तू तो हर बात पर संदेह करने लगेगा, सोच में डूबा करेगा, टांड़ खुजलाना सीख जायेगा। क्यों यह सब किया जाये? क्या जरूरत है इन अवतरण पट्टियों और नींवों की? अब मैं तुझे, पहलवान..."

"शूरा," बिल्कुल पास ही फटा-फटा सा नारी कंठ कराहा। "कहां हो तुम, शूरा... दर्द हो रहा है..."

मैं सुन्न रह गया। मैं टॉम के पेट में लेटा हुआ था, उसकी मांसपेशियों के विशाल उभारों से चारों ओर से घिरा, मेरे पांव ही बाहर निकले हुए थे। अचानक मैं बुरी तरह से आतंकित हो गया, मानो कोई दुस्स्वप्न देख रहा होऊं। मैं नहीं जानता कि क्यों मैं चीख नहीं उठा, हिस्टीरिया में छटपटाने नहीं लगा। शायद थोड़ी देर के लिए मैं बेहोश हो गया था, क्योंकि काफ़ी देर तक मैं न कुछ सुन रहा था, न कुछ सोच रहा था, बस आंखें फाड़कर टॉम के तंत्रिका-दंड को देखता जा रहा था, जो

हरी हरी रोशनी में मेरी आंखों के बिल्कुल सामने चमक रहा था।

"क्या हो गया? कहां हो तुम? शूरा, मुझे कुछ नहीं दिख रहा..." असह्य पीड़ा से दोहरी होती स्त्री कराह रही थी। "यहां कोई है... जवाब दो न, शूरा! हाय, कितना दर्द हो रहा है! हाय, मेरी मदद करो, मुझे कुछ नहीं दिख रहा..."

वह कराह और रो रही थी, बारंबार एक ही बात दोहराये जा रही थी, मुझे लगा कि मैं उसका पसीने से तर, मृत्यु-पीड़ा से विकृत मुख देख रहा हूं, उसके अस्फुट स्वर में अब केवल अनुनय नहीं थी, केवल पीड़ा नहीं थी, उसमें आक्रोश था, आदेश था। मुझे ऐसी प्रायः शारीरिक अनुभूति हुई कि बर्फ़ीली चीमड़ उंगलियां मेरे मस्तिष्क की ओर बढ़ रही हैं, उसे अपनी मुट्ठी में भींचकर बुझा देना चाहती हैं। अर्धचेतना की अवस्था में ही दांत भींचते हुए मैंने बायें हाथ से न्यूमेटिक वाल्व टटोल लिया और पूरे ज़ोर से उसे दबा दिया। भयंकर गर्जन के साथ संपीडित आर्गान की धार फूटी, पर मैं वाल्व को दबाये ही चला जा रहा था, अपने मस्तिष्क से इस फटी-फटी, कराहती आवाज़ को पूरी तरह साफ़ कर देना चाहता था। मैं महसूस कर रहा था कि मैं बहरा हो रहा हूं और इस अनुभूति से मुझे बेहद राहत मिल रही थी।

फिर मैंने पाया कि मैं टॉम के पास खड़ा हूं, कुल्फ़ी की तरह जम गया हूं, अकड़ी उंगलियों पर फूंक मार रहा हूं और पागलों की तरह मुस्कराते हुए दोहराता जा रहा हूं: "ध्वनि आवरण, समझे? ध्वनि आवरण..." टॉम दायीं बगल पर बुरी तरह झुका खड़ा है, और मेरे चारों ओर का संसार तुषार और बालू कणों के विशाल, निश्चल बादल के पीछे छिप गया है। हाथ बगलों में दबाकर मैंने टॉम का चक्कर लगाया और देखा कि आर्गान की धार ने निर्माण-स्थली के एक सिरे पर विशाल गड्ढा बना दिया

है। थोड़ी देर तक मैं इस गड्ढे के सिरे पर खड़ा रहा, अभी भी ध्वनि आवरण की बात दोहराये जा रहा था, हालांकि यह महसूस करने लगा था कि अब यह दोहराना बंद करना चाहिए। तभी मुझे ख्याल आया कि मैं फ़र कोट के बिना पाले में खड़ा हूं और याद आया कि उसे मैंने वहीं फेंका था, जहां अब गड्ढा बना हुआ है। इस पर मैं यह याद करने लगा कि फ़र कोट की जेबों में कोई महत्वपूर्ण चीज़ तो नहीं थी, कुछ याद नहीं आया, और मैं हाथ झटककर लड़खड़ाते कदमों से यान की ओर दौड़ चला।

निर्गम कक्ष में मैंने सबसे पहले अपने लिए नया फ़र कोट लिया, फिर अपनी केबिन को चल दिया, दरवाज़े के पास पहुंचकर खांसा जैसे किसी को चेता रहा होऊं कि अंदर आ रहा हूं, अंदर जाकर मैं तुरंत ही पलंग पर लेट गया—दीवार की ओर मुंह करके और फ़र कोट सिर से पांव तक ओढ़कर। मैं भली-भांति समझ रहा था कि मेरी इन सभी गतियों में कोई अर्थ नहीं है, कि मैं किसी खास मकसद से केबिन की ओर चला था, मगर यह मकसद भूल गया हूं, और लेटकर यह दिखाने के लिए ही ओढ़ा है कि यही करने मैं यहां आया हूं।

यह शायद हिस्टीरिया जैसा ही कुछ था, थोड़ा होश संभालने पर मैं इस बात पर खुश ही हुआ कि मेरे हिस्टीरिया ने कोई प्रचंड रूप धारण नहीं किया। बहरहाल, मेरे लिए यह स्पष्ट था कि यहां अब मैं काम नहीं कर पाऊंगा। शायद अंतरिक्ष में कहीं भी किसी काम पर मुझे नहीं भेजा जायेगा। बड़े अफ़सोस की बात थी और शर्मिंदगी की भी, मैं सह नहीं पाया, पहले व्यावहारिक काम में ही विफल हो गया, जबकि पहली बार के लिए बिल्कुल निरापद और शांत ग्रह पर भेजा गया है। यह सोचकर भी मन बहुत दुखी हो रहा था कि मेरा तंत्रिका-तंत्र इतना निर्बल निकला। अब मुझे शर्म आ रही थी कि अब कस्पार

मनुक्यान अपनी अतिशय तंत्रीय उत्तेजनशीलता के कारण 'नूह' परियोजना के लिए प्रतियोगिता में रह गया था तो मुझे उस पर दया आयी थी, जिसमें आत्मसंतोष की भावना भी मिली हुई थी। भविष्य मुझे पूर्णतः अंधकारपूर्ण लग रहा था—शांत सेनेटोरियम, डाक्टरी जांच, चिकित्सा-उपचार, मनश्चिकित्सकों के सावधानी से पूछे गये प्रश्न और ढेरों सहानुभूति एवं अनुकंपा, चारों ओर से बढ़ती आती सहानुभूति और अनुकंपा की बाढ़।...

एक झटके से फ़र कोट परे फेंककर मैं उठ बैठा। "ठीक है," मैंने शून्य और सन्नाटे से कहा, "तुम जीते। मैं गर्वोव्स्की नहीं बन पाया। काट लेंगे दिन जैसे-तैसे... तो, यह बात है। आज ही मैं वंडरहूज़ को सारी बात बता दूंगा और कल शायद मेरी जगह किसी और को भेज दिया जायेगा। धत् तेरे की—वहां निर्माण-स्थली किस हालत में है! टॉम खुला पड़ा है, सारा काम समय सारणी से पीछे पड़ गया है, पट्टी के बगल में कमबख्त गड्ढा ऊपर से और बन गया है।..." अचानक मुझे याद आया कि मैं यहां क्या करने आया था, मेज़ का दराज़ खोलकर उसमें से वह क्रिस्टलफ़ोन निकाला, जिसमें इरुकाना के फ़ौजी मार्चों की धुनें रिकार्ड की हुई थीं। दायें कान की ललरी पर सावधानी से क्रिस्टलफ़ोन लटकाकर मैंने आखिरी बार अपने आप से कहा: "ध्वनि आवरण"। फ़र कोट को बगल में दबाकर मैं निर्गम कक्ष में पहुंचा, कुछेक बार गहरी सांस ली ताकि पूरी तरह शांत हो जाऊं, क्रिस्टल ऑन किया और बाहर निकल गया।

अब मैं मज़े में था। मेरे चारों ओर तथा मेरे भीतर तूर्यनाद हो रहा था, झांझ-मंजीरे गूंज रहे थे, ढोल बज रहे थे; नारंगी धूल में सने तेलेमी सैनिक भारी कदम रखते हुए प्राचीन नगर सैतैम से गुज़र रहे थे; बुर्जियां जल रही थीं, छतें ढह रही थीं और लड़ाकू भित्तीपातक अजदहे भयानक सीटियां बजा रहे थे, जिनकी कर्णभेदी आवाज़

शत्रु को विमूढ़ बना रही थी। सहस्रों वर्ष पहले की इन ध्वनियों से घिरा, उनके आवरण में छिपा मैं फिर से टॉम के भीतर घुसा और अब किसी बाधा के बिना मैंने उसकी सफ़ाई और मरम्मत का काम पूरा कर दिया।

जैक और रैक्स गड्ढे को पाटने का काम पूरा कर रहे थे, टॉम की आंतों में आर्गान के अंतिम लीटर भरे जा रहे थे, तभी मैंने सागर तट के ऊपर बड़ा होता काला धब्बा देखा। ग्लाइडर लौट रहा था। मैंने घड़ी पर नज़र डाली–स्थानीय समय के अनुसार शाम के छह बजने में दो मिनट शेष थे। मैंने यह दिन काट लिया था। अब ये ढोल-नक्कारे बंद किये जा सकते थे और फिर से इस सवाल पर गौर किया जा सकता था: क्या वंडरव्रूज़ को, बेस कैंप को परेशान करने की कोई ज़रूरत है, एवज़ी ढूंढ़ पाना इतना आसान नहीं होगा, और फिर आखिर यह एक दुर्घटना ही मानी जायेगी, इसकी वजह से सारे ग्रह पर काम रुक सकता है, तरह-तरह के आयोग चले आयेंगे, जांचें होने लगेंगी, साथ ही अगर यह कल्पना की जाये कि विजातिमनोविज्ञान का डाक्टर, संपर्कसमिति का सदस्य, 'नूह' परियोजना का विशेष अधिकारी, विज्ञान जगत के नभमंडल में उदीयमान सितारा, डाक्टर म्वोगा का चहेता शिष्य और स्वयं गर्बोव्स्की का नया सहायक गेन्नादी कोमव कैसी नज़रों से मुझे देखेगा... नहीं, इस सारी बात पर बारीकी से गौर करना चाहिए। मैं पास आते ग्लाइडर को देखता हुआ सोच रहा था: "इस सारी बात पर बारीकी से गौर करना चाहिए। पहली बात, मेरे पास अभी सारी शाम बाकी है, दूसरे, मुझे कुछ ऐसा पूर्वाभास हो रहा है कि यह सारी परियोजना हमें स्थगित करनी पड़ेगी। आखिर, मेरे हृदय की उथल-पुथल का वास्ता केवल मुझसे है, जबकि मेरे इस्तीफ़े का वास्ता अकेले मुझसे नहीं, बल्कि सब से है। और ध्वनि आवरण ने भी खूब अच्छा काम किया है। सो, फिलहाल चुप हो रहते हैं।"

माया और वंडरहूज की शक्ल देखते ही मेरे ये सारे विचार पलांश में ही ओझल हो गये। कोमव हमेशा जैसा ही लग रहा था और हमेशा की तरह ऐसे इधर-उधर नजर डाल रहा था, जैसे कि चारों ओर सभी कुछ अकेले उसका है, बहुत पहले से उसका है और इस सब से वह खासा बोर हो चुका है। माया का चेहरा फ़क था, नीला ही पड़ गया था, मानो उसकी तबीयत बहुत खराब हो। कोमव ने रेत पर छलांग लगा दी, मुझसे पूछा कि मैं रेडियो कॉल का जवाब क्यों नहीं दे रहा था, (तभी उसकी नजर मेरे कान से लटकते क्रिस्टलफ़ोन पर पड़ी, वह मुस्करा दिया और मेरे जवाब का इंतज़ार किये बिना ही यान में चला गया)। वंडरहूज भी इत्मीनान से ग्लाइडर में से निकलकर मेरी ओर आ रहा था—उदासी भरे अंदाज में सिर हिला रहा था, अब तो वह हूबहू किसी बीमार पड़े बूढ़े ऊंट जैसा लग रहा था। मगर माया अभी भी अपनी सीट पर निश्चल बैठी हुई थी, ठोढ़ फ़र के कालर में छिपाये, उसकी आंखें पथरायी लग रही थीं।

"क्या हुआ?" भयभीत स्वर में मैंने पूछा।

वंडरहूज ठीक मेरे सामने रुक गया। उसका सिर ऊपर उठ गया, निचला जवड़ा आगे निकल आया। मेरा कंधा पकड़कर उसने हौले से झंकझोरा। मेरा कलेजा बैठ गया, मैं कुछ सोच ही नहीं पा रहा था। उसने फिर से मेरा कंधा झकझोरा और बोला:

"बड़ी दुखद खोज है, पपोव। हमें एक ध्वस्त यान मिला है।"

जल्दी से थूक निगलकर मैंने पूछा:

"हमारा है?"

"हां। हमारा।"

माया ग्लाइडर से उतरी, अनमने भाव से मेरी ओर हाथ हिलाकर यान को चल दी।

"कितने लोग मारे गये हैं?" मैंने पूछा।

"दो जने," वंडरहूज ने जवाब दिया।

"कौन हैं?" मुश्किल से मैं पूछ पाया।

"अभी हम नहीं जानते। यान पुराना है। दुर्घटना कई साल पहले हुई थी।"

उसने मेरी बांह में बांह डाली और हम भी माया के पीछे-पीछे चल दिये। मेरे मन का बोझ थोड़ा कम हो गया था। शुरू में तो मैंने यही सोचा था कि हमारे अभियान में से कोई दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। पर तो भी...

"यह ग्रह मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगा," मेरे मुंह से निकला।

निर्गम कक्ष में पहुंचकर हमने फ़रकोट उतारे। वंडरहूज बड़े जतन से अपने फ़रकोट से कांटे और गोखरू साफ़ करने लगा। मैं उसके लिए रुका नहीं, माया के पास चला गया। माया पलंग पर लेटी हुई थी, घुटने मोड़कर, मुंह दीवार की ओर किये। इस मुद्रा से मुझे तुरंत ही कुछ याद आ गया और मैंने अपने आप से कहा: बस, शांत रहो, कोई भावुकता भरी सहानुभूति दिखाने की जरूरत नहीं है। मेज के पास बैठकर मैंने मेज पर उंगलियों से पटपट की और बिल्कुल कामकाजी अंदाज में पूछा:

"सुनो, क्या यान सचमुच पुराना है? वंडरहूज कहता है दुर्घटना कुछ साल पहले हुई है। यही बात है?"

"हां," थोड़ी देर बाद ही माया ने मुड़े बिना उत्तर दिया।

मैंने कनखी से उसे देखा। मेरा कलेजा सुन्न हो रहा था, लेकिन उसी कामकाजी अंदाज में मैं बोला:

"क्या मतलब है कई साल का? दस साल? बीस साल? कोई तुक नहीं बनती। इस ग्रह की खोज तो दो साल पहले ही हुई है।..."

माया ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने फिर से मेज पर उंगलियां पटपटायीं और अब पहले से कुछ धीमी आवाज में, लेकिन फिर भी कामकाजी आंदाज में ही बोला:

"वैसे तो, कोई पायोनियर, कोई पहले खोजी हो सकते हैं... कोई स्वच्छंद अनुसंधानकर्ता... जहां तक मैं समझा हूं, दो जने हैं वहां?"

इस पर वह उछल पड़ी, मेरी ओर मुंह करके, हाथ चादर पर जमाकर बैठ गयी।

"दो जने हैं।" वह चीखी। "हां! हां! दो जने हैं! पत्थर का कलेजा है क्या तुम्हारा? काठ के उल्लू!"

"ठहरो-ठहरो," स्तब्ध सा मैं बोला। "यह तुम क्या।..."

"क्या करने आये हो यहां?" वह अस्फुट स्वर में कह रही थी। "जाओ अपने रोबोटों के पास, उनके साथ ये बातें करो कि कितने साल बीत गये हैं, कोई तुक नहीं बनती, वहां दो जने क्यों हैं, तीन क्यों नहीं, सात क्यों नहीं।..."

"ठहरो भी, माया!" मैं हताश होकर बोला। "मैं यह थोड़े ही कहना चाहता था।..."

उसने चेहरा हाथों से ढांप लिया और बुदबुदायी:

"उनकी सारी हड्डियां टूटी हुई हैं... पर वे इसके बाद भी जिंदा रहे थे... कुछ करने की कोशिश करते रहे थे... सुनो," चेहरे से हाथ हटाकर वह बोला, "तुम जाओ, प्लीज़। मैं अभी आती हूं। जल्दी हीं।"

मैं हौले से उठा और बाहर निकल गया। मैं उसे छाती से लगाना, सांत्वना के दो शब्द कहना चाहता था, लेकिन सांत्वना देनी मुझे नहीं आती थी। गलियारे में मुझे कंपकंपी चढ़ गयी। मैं खड़ा होकर उसके रुकने का इंतज़ार करने लगा। तौबा, क्या दिन है! किसी को बता भी नहीं सकता। शायद, न बताना ही अच्छा होगा। मैंने आंखें खोलीं और देखा वंडरहूज़ रेडियो रूम के दरवाजे पर खड़ा है, मेरी ओर देख रहा है।

"कैसी है माया?" उसने हौले से पूछा।

शायद मेरे चेहरे से ही नज़र आता था कि वह कैसी

है, क्योंकि उसने उदासी से सिर हिलाया और रेडियो रूम में चला गया। मैं कदम घसीटता रसोई को चल दिया। बस आदतन ही, क्योंकि ग्लाइडर के लौटने के बाद हम सब हमेशा खाना खाते थे। लेकिन आज लगता है ऐसा नहीं होगा। कैसा खाना—मैंने बावर्ची को झाड़ दिया, क्योंकि मुझे लगा कि उसने मेन्यू में कुछ फेर-बदल कर दिया है। वास्तव में उसने कोई फेर-बदल नहीं किया था, खाना तैयार था, सदा की भांति अच्छा, लेकिन आज सदा जैसा नहीं होना चाहिए। माया तो शायद कुछ भी नहीं खायेगी, हालांकि यह जरूरी है कि वह कुछ खाये। सो, मैंने उसके लिए फेंटी हुई क्रीम के साथ फ्रूट जैली आर्डर कर दी—यही उसकी एकमात्र मनपसंद चीज है। कोमव के लिए कोई भी नयी चीज मैंने आर्डर नहीं की और वंडरहूज के लिए भी। हां, थोड़ा सोचकर आम मेन्यू में अंगूरी के कुछ गिलास जोड़ दिये—क्या पता कोई अपना हौसला बढ़ाने के लिए दो घूंट भरना चाहे।... फिर मैं रेडियो रूम में जाकर अपने डेस्क पर बैठ गया।

मेरे जवान बिल्कुल फ़िट काम कर रहे थे। माया रेडियो रूम में नहीं थी। कोमव और वंडरहूज बेस कैंप के लिए फ़ौरी तार लिख रहे थे। उनमें बहस हो रही थी।

"यह कोई सूचना नहीं है, जैकब," कोमव कह रहा था। "आप तो मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं: ऐसी सूचनाएं भेजने का निश्चित रूप है—यान की दशा, खंडों का दृश्य, दुर्घटना के अनुमानित कारण, विशेष महत्व की खोजें... इत्यादि-इत्यादि।"

"सो तो ठीक है," वंडरहूज ने जवाब दिया। "पर यह भी मानना होगा कि ये सारी औपचारिकताएं जैविकतः सक्रिय ग्रहों के लिए मायने रखती हैं। हमारे इस मामले में..."

"तो फिर बेहतर है कि कुछ भी न भेजें। अभी

ग्लाइडर पर वैठकर वहां हो आते हैं और आज ही पूरी रिपोर्ट लिख देते हैं।"

वंडरहूज़ ने सिर हिला दिया।

"नहीं, गेन्नादी, इसके मैं सख़्त खिलाफ़ हूं। इस तरह के आयोग में कम से कम तीन लोग होने चाहिए। और फिर अब अंधेरा हो गया है, हम दुर्घटना स्थल को विस्तार से नहीं देख पायेंगे।... वैसे भी ये सव काम ताज़े दिमाग से करने चाहिए, न कि दिन भर के परिश्रम के बाद। क्या ख्याल है आपका?"

कोमव ने अपने पतले होंठ भींचे, मेज़ पर हौले से मुट्ठी मारी।

"ओह, वड़े वेमौके की वात है," वह अफ़सोस भरे स्वर में वोला।

"ऐसी चीज़ें हमेशा वेमौके ही होती हैं," वंडरहूज़ ने उसे ढाढ़स दिलाया। "कोई वात नहीं, कल हम तीनों वहां जायेंगे..."

"तो फिर, क्यों न आज कोई सूचना न दी जाये?" कोमव वीच ही में वोला।

"नहीं, इसका मुझे कोई हक नहीं है," वंडरहूज़ ने खेद प्रकट किया। "और फिर न वताने की ज़रूरत भी क्या है?"

कोमव खड़ा हो गया, पीठ पीछे हाथ बांधकर ऊपर से वंडरहूज़ पर नज़र डाली।

"आप समझते क्यों नहीं, जैकव," अव वह झुंझलाहट छिपा नहीं रहा था। "यान पुराने ढंग का है, अज्ञात है, लॉग बुक पता नहीं क्यों मिटी हुई है... अगर हम ऐसी रिपोर्ट भेजते हैं," उसने मेज़ से कागज़ उठाकर वंडरहूज़ की नाक के आगे हिलाया, "तो सीदोरव यह सोच बैठेगा कि हम खुद जांच नहीं करना चाहते या जांच करने में असमर्थ हैं। उसके लिए तो यह निरा सिर दर्द ही है—आयोग गठित करे, लोगों को ढूंढ़े, कौतूहली निठल्लों से

बचता फिरे।... हमारी स्थिति बेतुकी और हास्यास्पद होगी। और फिर अगर कौतूहली निठल्लों के झुंड यहां चले आये तो हमारे काम का क्या होगा?"

"हुं," वंडरहूज़ बोला, "दूसरे शब्दों में आप नहीं चाहते कि यहां बाहरवालों का जमघट हो। यह बात है?"

"हां, यह बात है," कोमव ने दृढ़तापूर्वक कहा।

वंडरहूज़ ने कंधे उचका दिये।

"अच्छा..." कुछ सोचकर उसने कोमव से कागज़ ले लिया और पाठ में कुछ शब्द जोड़ दिये। "इस तरह चलेगा? 'ई० आर०-2 बेस कैंप को'," उसने जल्दी-जल्दी पढ़ा। 'अर्जेंट। वर्ग संख्या एक सौ दो में पृथ्वी का 'पेलिकन' किस्म का दुर्घटनाग्रस्त यान मिला है, रजिस्ट्रेशन नं० यह है, यान में दो शव हैं, अनुमान है पुरुष और स्त्री के, लॉग बुक मिटी हुई है, विस्तृत जांच...'" यहां वंडरहूज़ की आवाज़ ऊंची हो गयी और उसने अर्थमय ढंग से उंगली ऊपर उठायी, "'कल शुरू करेंगे।' क्या ख्याल है आपका?"

कुछ सेकंड तक कोमव विचारमग्न खड़ा रहा—अपना बदन आगे-पीछे झुलाता रहा।

"ठीक है," आखिर वह बोला, "ऐसे ही सही। कुछ भी हो, बस हमारे काम में बाधा न आये। ऐसे ही सही।"

अचानक वह तेज़ी से कदम भरता हुआ रेडियो रूम से बाहर चला गया। वंडरहूज़ मेरी ओर घूमा।

"लो, भई, पपोव, ज़रा यह भेज देना। खाना भी हो जाना चाहिए। क्या ख्याल है?" वह अपनी कुर्सी से उठा और विचारों में खोया-खोया-सा बोला: "ऐलिबाइ होनी चाहिए, लाशें तो मिल ही जायेंगी।"—यह उसके रहस्यमय वाक्यों में से एक था।

मैंने रेडियो संदेश कोडित किया और अर्जेंट आवेग में उसे भेज दिया। मुझे कुछ बेचैनी हो रही थी। अभी पल

भर पहले मेरी अवचेतना में कोई बात फंस गयी थी और अब वहां कांटे की तरह चुभ रही थी। मैं वायरलैस के सामने बैठा था और कान लगाकर सुन रहा था। हां, यह बिल्कुल दूसरी ही बात है—ऐसे में कान लगाना, जब तुम जानते हो कि यान में कई लोग हैं। वहां गोल गलियारे में कोमव तेज़ कदम भरता गया है। वह हमेशा ऐसी चाल से चलता है, जैसे कहीं जाने की जल्दी में है, मगर साथ ही यह भी जानता है कि वह जल्दी नहीं भी कर सकता, क्योंकि उसके बिना कुछ भी शुरू नहीं होगा। वंडरहूज़ अस्पष्ट स्वर में कुछ कह रहा है। माया उसकी बात का जवाब दे रही है, उसकी आवाज़ सदा जैसी है—ऊंची और स्वतंत्रता का भाव लिये, प्रत्यक्षतः, वह शांत हो गयी है, या फिर कम से कम उसने अपनी भावनाओं को वश में कर लिया है। न सन्नाटा है, न शून्य और न ही जाले में फंसी मक्खी।... सहसा मैं समझ गया कि यह कांटा क्या है: मेरे सरसाम में सुनायी दी दम तोड़ती स्त्री की आवाज़ और ध्वस्त तारकयान पर मृत स्त्री।... बेशक, यह एक संयोग ही है... परंतु कैसा भयावह संयोग!

अध्याय तीन

आवाज़ें और प्रेत

बात तो हैरानी की है मगर मैं ऐसे सोया जैसे कि घोड़े बेचकर आया होऊं। सुबह मैं अपने नियमानुसार सब से आधा घंटा पहले उठ गया, रसोई में जाकर देखा, नाश्ते का काम कैसे चल रहा है, रेडियो रूम में गया—यह देखने कि मेरे जवान कैसे हैं, फिर व्यायाम करने बाहर गया। सूरज अभी पहाड़ों के पीछे से निकला नहीं था, लेकिन

3*

उजाला हो चुका था और कड़ाके की ठंड थी। नथुने चिपक रहे थे, बरौनियां जम रही थीं, मैं पूरे ज़ोरों से हाथ हिला रहा था, उठक-बैठक लगा रहा था, बस यही कोशिश थी कि जल्दी से व्यायाम पूरा करके यान में लौट जाऊं। तभी मेरी नज़र कोमव पर पड़ी। आज वह मुझसे पहले ही उठ गया था, कहीं हो भी आया था और अब निर्माण-स्थली की ओर से लौट रहा था। अपनी आदत के विपरीत वह धीमे चल रहा था, मानो विचारों में डूबा हो, और अन्यमनस्क सा एक टहनी अपनी टांग पर मारता जा रहा था। मेरा व्यायाम पूरा हो ही रहा था, जब बिल्कुल पास आकर उसने मुझसे नमस्ते की। बेशक मैंने भी जवाब दिया और हैच में घुसने जा रहा था कि उसने एक सवाल पूछकर मुझे रोक लिया:

"पपोव, यह बताइये, आप जब यहां अकेले रह जाते हैं तो यान छोड़कर कहीं जाते हैं?"

"मतलब?" मुझे यह सवाल सुनकर इतनी हैरानी नहीं हुई, जितनी इस बात पर कि कोमव ने मेरे खाली समय में दिलचस्पी लेने की मेहरबानी की है। कोमव की विद्वत्ता के प्रति गहरा आदर भले ही मेरे मन में था, परंतु साथ ही पता नहीं क्यों मुझे वह कुछ अच्छा नहीं लगता था।

"मतलब आप कहीं इधर-उधर जाते हैं? उदाहरण के लिए दलदल की ओर या टीलों की ओर..."

बड़ी खुंदक आती है मुझे इस अंदाज़ से—बात तो आदमी से करेंगे, लेकिन उसकी ओर देखेंगे नहीं। खुद तो जनाब फ़रकोट पहने हुए, यहां बंदा नंगे बदन पर सिर्फ़ ट्रैक-सूट पहने है। बहरहाल, कोमव तो कोमव है, ठंड के मारे हाथों से कंधों को दबाकर और एक ही स्थान पर फुदकते हुए मैंने जवाब दिया:

"नहीं। यों ही वक्त पूरा नहीं पड़ता। सैरें करने की फ़ुरसत कहां है।"

अब श्रीमान ने यह देखने की कृपा की कि मैं ठंड से

अकड़ा जा रहा हूं, और विनम्रतापूर्वक टहनी से हैच की ओर इशारा करके बोले: "अंदर चलिये। यहां ठंड है।" परंतु निर्गम कक्ष में फिर से मुझे रोक लिया:

"क्या रोबोट निर्माण-स्थली से कहीं जाते हैं?"

"रोबोट?" मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह चाहता क्या है। "नहीं तो। क्या ज़रूरत पड़ी है उन्हें?"

"मैं क्या जानूं... शायद निर्माण सामग्री लाने के लिए।"

उसने टहनी को बड़े ध्यान से दीवार से सटाकर रखा और फ़रकोट खोलने लगा। मुझे सचमुच खुंदक आने लगी थी। अगर किसी तरह उसे मेरी निर्माण प्रणाली में किसी गड़बड़ी की भनक लग गयी है तो, पहली बात उसका इससे कुछ लेना-देना नहीं है, दूसरे, सीधे-सीधे क्यों नहीं कह देता। हुं, जिरह कर रहे हैं, जनाब...

"इस प्रकार की साइबरप्रणाली उस सामग्री का," जहां तक बन पड़ा रूखे स्वर में मैं बोला, "निर्माण कार्य के लिए उपयोग करती है, जो उसके पांवों तले हो। हमारे मामले में यह रेत है।"

"और पत्थर," फ़रकोट खूंटी पर टांगते हुए कोमव ने लापरवाही से जोड़ा।

यह तो उसने मेरे मर्म-स्थल पर चोट की थी। अब इससे तो उसका कतई कुछ लेना-देना नहीं था, सो चुनौती भरे स्वर में मैं पलटकर बोला:

"जी हां! अगर पत्थर मिल जायें तो पत्थर भी।"

उसने पहली बार मेरी आंखों में आंखें डालकर देखा।

"लगता है, पपोव, आपने मेरी बात का गलत मतलब लगाया है," सहसा बड़े कोमल स्वर में वह बोला। "आपके काम में हस्तक्षेप करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। बात बस इतनी है कि मैं कुछ उलझन में पड़ गया हूं और आप ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो मेरी शंकाओं का समाधान कर सकता है।"

यह बात दूसरी है—मुझसे ढंग से बोलो तो मैं भी ढंग से जवाब दूंगा।

"सच कहा जाये तो पत्थरों का यहां कोई काम नहीं है," मैं बोला। "कल मेरी प्रणाली में कुछ गड़बड़ी हो गयी थी, और मशीनों ने सारी निर्माण-स्थली पर पत्थर फैला दिये थे। पता नहीं क्या ज़रूरत पड़ी थी उन्हें इसकी। हां, बाद में हटा दिये।"

कोमव ने सिर हिलाया।

"हां, मैंने देखा है। यह गड़बड़ी किस तरह की थी?"

दो शब्दों में मैंने उसे पिछले दिन के बारे में बताया, बेशक, अंतरंग ब्योरों का कोई ज़िक्र नहीं किया। वह सिर हिलाता हुआ सुनता रहा, फिर अपनी टहनी उठायी और शुक्रिया अदा करके चला गया। डाइनिंग रूम में नाश्ता करते हुए मुझे ख्याल आया: मैं तो यह समझ ही नहीं पाया कि, डाक्टर म्बोगा के चहेते के मन में क्या शंकाएं थीं और मैं उन्हें कहां तक दूर कर पाया और कर भी पाया हूं कि नहीं। नाश्ता छोड़कर मैंने कोमव पर नज़र डाली। नहीं, लगता है, मैं शंकाओं का निवारण नहीं कर पाया।

कोमव को तो देखकर यही लगता है कि वह इस दुनिया का नहीं है। सुदूर क्षितिजों के पार वह न जाने क्या खोजता रहता है और अपने किन्हीं अत्युच्च विचारों में डूबा रहता है। वह तो ज़मीन पर तभी उतरता है जब कोई बात या कोई व्यक्ति, अनजाने में अथवा जान-बूझकर उसकी खोजों में बाधा बनता है। तब वह अडिग हाथ से, प्रायः बेहद निर्ममता से बाधा दूर कर देता है और फिर से अपने सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। उसके बारे में यही सब सुनने में आता है और, वैसे देखा जाये तो इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं है। जब आदमी परग्रहीय मनोविज्ञान का अध्ययन करता हो, सो भी सफलतापूर्वक, जब वह अपने तन-मन से विज्ञान की सेवा में लगा हो और, जबकि वह

ग्रह का एक प्रमुख "भविष्य-शिल्पी" हो तो उसे बहुत कुछ माफ़ किया जा सकता है। आखिर सभी तो गर्वोव्स्की या डाक्टर म्बोगा जैसे आकर्षक व्यक्तित्व के धनी नहीं हो सकते।

दूसरी ओर मैं पिछले दिनों निरंतर अधिक आश्चर्य और कटुता के साथ तत्याना की तारीफ़ों भरी बातें याद कर रहा था। उसने साल भर तक कोमव के साथ काम किया था, मेरे ख्याल में तो उस पर मोहित थी, और कहा करती थी कि वह बेहद मिलनसार है, बड़ा ही विनोदी है, वगैरा-वगैरा। तत्याना का तो कहना था कि जिस मंडली में भी कोमव होता है उसकी जान वही होता है। तौबा कैसे लोग होंगे वे—जिनकी मंडली में कोमव जान डालता है।

हां, तो कोमव को देखकर सदा यही लगता था कि वह इस दुनिया का नहीं है। मगर आज तो नाश्ते के समय उसने अपने आप को ही मात दे दी। वह अपने खाने में नमक डालता जा रहा था। नमक डालता, चखता और प्लेट कूड़ेदान में फेंक देता। मीठे टोस्ट पर मक्खन की जगह सरसों की तीखी चटनी लगाता, चखता और अन्यमनस्क सा उसे भी प्लेट के पीछे फेंक देता। वंडरहूज़ के सवालों का जवाब नहीं दे रहा था, परंतु माया के पीछे हाथ धोकर पड़ गया था—उससे यह पूछ रहा था कि वह और वंडरहूज़ सारा समय इकट्ठे ही आते-जाते हैं या कभी-कभी अलग भी होते हैं। बीच-बीच में वह अचानक बदहवास सा इधर-उधर नज़रें दौड़ाने लगता, एक बार तो अचानक उछलकर खड़ा हुआ, दौड़ा-दौड़ा गलियारे में गया, कुछ मिनट तक गायब रहा, फिर लौटकर यों बैठ गया जैसे कि कुछ हुआ ही न हो—फिर से टोस्ट पर सरसों की चटनी लगाने लगा। आखिर चटनी उसके सामने से हटानी पड़ी।

माया भी परेशान थी। उखड़ी-उखड़ी सी जवाब दे रही थी, नाश्ते के दौरान एक बार भी नहीं मुस्करायी, प्लेट में आंखें गड़ाये ही बैठी रही। उस पर क्या बीत रही है यह

मैं खूब समझता था। उसकी जगह मैं होता तो मैं भी ऐसे काम पर जाते हुए परेशान होता। आखिर माया मेरी उम्र की ही तो है, भले ही उसे काम का कहीं अधिक अनुभव है, लेकिन यह वह अनुभव नहीं है जिसकी आज उसे ज़रूरत होगी।

संक्षेप में यह कि कोमव स्पष्टतः घबरा रहा था, माया घबरा रही थी और वंडरहूज़ भी उनके देखा-देखी बेचैन होने लगा। मैं समझ गया: इस वक्त मेरा यह कहना बिल्कुल बेमौका होगा कि मुझे भी जांच में हिस्सा लेने दिया जाये। मैं समझ गया कि आज का सारा दिन मुझे सन्नाटे और शून्य में काटना होगा, और मैं भी परेशान हो उठा। वातावरण में तनाव भर गया। और तब यान के कमांडर और डाक्टर के नाते वंडरहूज़ ने यह तनाव दूर करने का फ़ैसला किया। उसने सिर ऊपर उठाया, जबड़ा आगे निकाला और अपनी नाक के ऊपर से एक लंबी नज़र हम पर डाली। वनबिलाव जैसे उसके गलमुच्छे फूल गये। पहले तो उसने तारकनाविकों के जीवन के कुछ चुटकले सुनाये। चुटकले पुराने, घिसे-पिटे थे। मैं ज़बरदस्ती होंठों पर मुस्कान ला रहा था, माया मानो कुछ सुन ही नहीं रही थी, कोमव की प्रतिक्रिया विचित्र थी। वह बड़े ध्यान और गंभीरता से सुन रहा था, जहां चुटकले के मर्म की बात आती वहां सिर हिलाता, फिर उसने अपने विचारों में खोये-खोये ही वंडरहूज़ को सिर से पांव तक देखा और बोला:

"जानते हैं, जैकब, आपके इन गलमुच्छों के साथ कानों पर बाल खूब फबेंगे।"

खूब कही! कोई और मौका होता तो मैं कोमव की वाक्पटुता पर खुश होता, लेकिन इस वक्त मुझे यह उसकी अशिष्टता लगी। परंतु लगता है वंडरहूज़ का विचार इससे विपरीत था। उसका चेहरा आत्मसंतोष से चमक उठा। मुड़ी

हुई उंगली से उसने गलमुच्छों के बाल फुलाये—पहले बायें, फिर दायें गलमुच्छे के—और हमें यह किस्सा सुनाया:

"किसी सभ्य ग्रह पर एक पृथ्वीवासी आ पहुंचा। स्थानीय लोगों के साथ संपर्क स्थापित करके उन्हें प्रथम प्रकार के शाश्वत इंजन के रूपांकन एवं उपयोग के प्रमुख विशेषज्ञ के नाते अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। कहना न होगा कि स्थानीय निवासी महाबुद्धि के प्रतिनिधि को मुंह बाये देख रहे थे। उसके निर्देशों का पालन करते हुए वे इंजन बनाने में लग गये। इंजन बन गया, मगर काम नहीं कर रहा था। पृथ्वीवासी ने चक्के घुमाये, धुरियों और गियरों को देखा, स्थानीय निवासियों को कोसने लगा कि उन्होंने सारा काम गलत किया है: "क्या घटिया टेक्नोलोजी है आपकी। यह हिस्सा पूरी तरह बदलना चाहिए और उन हिस्सों को तो निकालना होगा, क्या ख्याल है?" स्थानीय निवासी करते तो क्या करते। वे इंजन में परिवर्तन करने और उसका पुनःनिर्माण करने लगे। उन्होंने यह काम पूरा किया ही था कि पृथ्वी से एम्बुलेंस राकेट आ पहुंचा, परिचारकों ने अन्वेषक को पकड़कर उसे आवश्यक टीका लगाया, डाक्टर ने स्थानीय निवासियों से माफ़ी मांगी और राकेट उड़ गया। स्थानीय निवासी एक दूसरे से नजरें मिलाते शर्मा रहे थे, तितर-बितर होने लगे, तभी देखते क्या हैं कि इंजन काम करने लगा। हां, दोस्तो, इंजन काम करने लगा और अब तक काम कर रहा है—डेढ़ सौ साल से।" मुझे यह किस्सा पसंद आया। स्पष्ट था कि वंडरहूज ने अपने मन से गढ़ा था, शायद अभी-अभी ही। यह देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कोमव को भी यह किस्सा पसंद आया। किस्सा अभी बीच में ही था कि उसकी नजरें सरसों की चटनी की तलाश में मेज पर भटकनी बंद हो गयीं, वह टकटकी लगाकर वंडरहूज को देखने लगा और अंत तक आंखें सिकोड़े उसे देखता रहा। फिर उसने इस आशय की बात कही कि संपर्क के एक सहभागी के अनुत्तरदायी होने

का विचार सैद्धांतिक दृष्टि से रोचक है। "जो भी हो, आज तक सामान्य संपर्क सिद्धांत में ऐसी संभावना को ध्यान में नहीं रखा गया है, हालांकि इक्कीसवीं सदी के आरंभ में श्नाउख नाम के एक वैज्ञानिक ने यह सुझाव रखा था कि अंतरिक्षयानों के कर्मीदलों में विखंडित मनस्क लोगों को शामिल करना चाहिए। उन दिनों ही यह ज्ञात था कि ऐसे लोगों में पूर्वाग्रह-विमुक्त साहचर्य स्थापित करने की प्रखर योग्यता होती है: किसी अपूर्व दृश्य की अव्यवस्था में सामान्य व्यक्ति चाहे-अनचाहे कुछ जाना-पहचाना, कोई परिचित लक्षण, कोई पहले से ज्ञात ढर्रा देख पाने की कोशिश करता है, वहीं विखंडित मनस्क व्यक्ति इसके विपरीत सब कुछ जैसा है वैसा ही देखता है, यही नहीं वह इस अव्यवस्था में वे संबंध देखता है, जो उसकी प्रकृति के अनुरूप होते हैं। जानते हैं," धीरे-धीरे जोश में आते हुए कोमव ने कहना जारी रखा, "विभिन्न ग्रहों पर बुद्धि के जो नाना प्रकार पाये जाते हैं, उन सबके विखंडित मनस्क प्रतिनिधियों में यह गुण आम है। अब चूंकि सिद्धांततः इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि जिस प्रतिनिधि के साथ संपर्क स्थापित होगा, वह विखंडित मनस्क ही होगा, और चूंकि समय पर न पहचानी गयी विखंडित मनस्कता के कारण संपर्क के विकास के दौरान गंभीर परिणाम हो सकते हैं, सो आपने जो समस्या उठायी है वह इस लायक है कि वैज्ञानिक उसकी ओर गंभीरता से ध्यान दें।"

वंडरहूज ने मुस्कराते हुए कहा कि वह कोमव को यह विचार तोहफ़े में दे रहा है, और बोला कि चलने का समय हो गया। माया इस बीच कोमव की बातों में दिलचस्पी लेने लगी थी और तन्मय होकर उन्हें सुन रही थी, लेकिन वंडरहूज के अंतिम शब्द सुनते ही उसका चेहरा मुरझा गया। मेरा भी चेहरा उतर गया: विखंडित मनस्कता की इन बातों ने मेरे दिमाग में अप्रिय विचार पैदा कर दिये थे। और तब यह हुआ। वंडरहूज और माया डाइनिंग रूम

से निकल गये थे, कोमव दरवाजे पर थम गया, अचानक मुड़ा, मेरी कोहनी कसकर पकड़ ली और अपनी भावहीन सुरमई आंखों की भींदती नज़रों से मेरे चेहरे को तेज़ी से टटोलते हुए, दवी आवाज़ में, पर जल्दी से बोला:

"उदास क्यों हो गये, पपोव? कुछ हुआ है क्या?"

मैं हक्का-बक्का रह गया। विखंडित मनस्कता के इस विशेषज्ञ की सूक्ष्म दृष्टि ने मुझे चारों खाने चित्त कर दिया। लेकिन मैं तुरंत ही संभल गया। एक क्षण में मेरे लिए बहुत बड़ा फैसला हो जाना था। मैंने थोड़ी परे हटकर अपार आश्चर्य प्रकट किया:

"समझा नहीं, क्या कह रहे हैं आप?"

उसकी नज़र अभी भी मेरे चेहरे को टटोल रही थी। उसने और भी अधिक दवी आवाज़ में तथा अधिक तेज़ी से पूछा:

"आपको अकेले रहते डर लगता है?"

लेकिन मेरा आत्मनियंत्रण अब पूरी तरह लौट चुका था।

"डर?" मैंने पलटकर कहा। "हद कर दी आपने... मैं कोई बच्चा तो नहीं..."

उसने मेरी कोहनी छोड़ दी।

"हमारे साथ चलेंगे?"

मैंने कंधे उचका दिये।

"बड़ी खुशी से चलता। लेकिन कल मेरे रोबोटों में कुछ खराबी आयी थी। यहीं रहना बेहतर होगा।"

"अच्छा!" अनिश्चित भाव के साथ वह बोला और तेज़ी से मुड़कर चला गया।

मैं थोड़ी देर और डाइनिंग रूम में खड़ा रहा—अपने चित्त को पूरी तरह शांत करते हुए। मस्तिष्क में सब कुछ गड्डमड्ड हो रहा था, परंतु मूड ऐसा था जैसे कि किसी कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ होऊं।

हाथ हिलाकर वे उड़ गये, मैंने ग्लाइडर को जाते

भी नहीं देखा। तुरंत ही यान में लौट आया। क्रिस्टलफ़ोन की स्टीरियो जोड़ी ढूंढ़ी, दोनों कानों को लैस किया और अपने डेस्क के सामने कुर्सी पर बैठ गया। मैं अपने रोबोटों के काम पर नज़र रख रहा था, बीच में कभी पढ़ने लगता, कभी रेडियो संदेश ग्रहण करता, वादिक और नीना से बातें करता (यह देखकर मन को संतोष हुआ कि वादिक के यहां भी संगीत पूरे ज़ोरों से बज रहा है)। फिर मैंने कमरों की सफ़ाई शुरू कर दी, सफ़ाई करके शानदार मेन्यू तैयार किया—आत्मिक बल बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए। यह सब करते समय मैं संगीत के स्वरों से घिरा हुआ था—ढोलों की ढमढम, मंजीरों की झमझम, बांसुरी के स्वर और नैकोफ़ोन की ऊंची तान से। बस यह कहिये कि मैं बड़े जतन और निर्ममता से तथा साथ ही अपने और दूसरों के लिए उपयोगी कार्य करते हुए समय काट रहा था। और इस सारे समय में यह विचार मुझे सताता रहा था: कोमव को मेरी कमज़ोरी का पता कहां से चला और इस सिलसिले में वह क्या करने का इरादा रखता है। कोमव ने मुझे बड़ी उलझन में डाल दिया था। निर्माण-स्थली देखने के बाद उसके मन में उठे संदेह, विखंडित मनस्कता की ये बातें, डाइनिंग रूम के दरवाज़े पर यह विचित्र बातचीत... धत् तेरे की, वह तो मुझसे अपने साथ चलने को कह रहा था, ज़ाहिर है मुझे अकेला छोड़ते डर रहा था। क्या मेरी मनोदशा इतनी साफ़ नज़र आती है? परंतु वंडरहूज़ ने तो कुछ भी नहीं देखा...

ऐसी ही उधेड़बुन में मेरा अधिकांश कार्य दिवस बीता। तीन बजे, मेरी उम्मीद से बहुत पहले ही, ग्लाइडर लौट आया। मैंने क्रिस्टलफ़ोन कान से उतारकर छिपाये ही थे कि तीनों जने यान में आ गये। मैंने निर्गम कक्ष में उनका स्वागत किया—संयत सद्भाव के साथ, काम के बारे में कोई सवाल नहीं पूछा, बस इतना ही कि कोई कुछ

खाना-पीना तो नहीं चाहता। लगता है छह घंटों तक मेरे कानों में गूंजते रहे शोर के बाद मैं कुछ ज्यादा ही ऊंचा बोल रहा था, क्योंकि माया ने कुछ-कुछ आश्चर्य भरी नज़रों से मुझे घूरा (मुझे यह देखकर खुशी हुई कि वह सामान्य लग रही थी), कोमव ने सिर से पांव तक मुझे देखा और एक शब्द भी कहे बिना अपने केबिन में चला गया।

"खाना-पीना?" विचारमग्न वंडरहूज़ बोला। "ऐसा है, मैं रेडियो रूम में रिपोर्ट लिखने जा रहा हूं, सो अगर तुम आते-जाते एक गिलास स्फूर्तिवर्द्धक पेय ला दो तो अच्छा रहे, क्या ख्याल है?"

मैं बोला कि ला दूंगा। वंडरहूज रेडियो रूम में चला गया। माया और मैं डाइनिंग रूम में गये, जहां मैंने दो गिलास स्फूर्तिवर्द्धक पेय के भरे, एक माया को दिया और एक वंडरहूज़ को दे आया। जब मैं लौटा तो माया गिलास हाथ में लिये डाइनिंग रूम के चक्कर काट रही थी। हां, वह सुबह की अपेक्षा कहीं अधिक शांत थी, फिर भी यह महसूस हो रहा था कि उसके मन में तनाव बना हुआ, किसी तरह उसे दूर करने के इरादे से मैंने पूछा:

"तो, क्या हुआ उस यान का?"

माया ने खासा बड़ा घूंट भरा, होंठों पर जीभ फेरी और कहीं दूर देखते हुए बोली:

"जानते हो, यह सब कोई संयोग मात्र नहीं है।"

मैं थोड़ी देर तक उसके आगे बोलने का इंतज़ार करता रहा, मगर वह चुप थी।

"क्या संयोग नहीं है?" मैंने पूछा।

"सब कुछ!" उसने गिलास उठाये हाथ घुमाया। "कैसा अशक्त, बधिया ग्रह है। मेरी बात याद रख लो: यह यान यहां संयोगवश ही दुर्घटनाग्रस्त नहीं हुआ और यह भी कोई संयोग नहीं कि यह हमें मिला है, हमारी यह सारी योजना ही इस ग्रह पर विफल होकर रहेगी!"

आखिरी घूंट भरकर उसने गिलास मेज़ पर रख दिया। "सुरक्षा के बुनियादी नियमों तक का पालन नहीं होता, यहां काम करने आये ज्यादातर लोग तुम जैसे नौसिखिये हैं, और मुझ जैसे भी... और यह सब केवल इसलिए कि ग्रह जैविकत: निष्क्रिय है। मगर बात यह थोड़े ही है! कोई भी व्यक्ति जिसमें थोड़ी सी भी अंत:प्रज्ञा है पहली घड़ी में ही यह अनुभव करता है कि यहां मामला कुछ गड़बड़ है। यहां कभी जीवन था, फिर तारा भभका और पलक झपकते ही सब समाप्त हो गया... जैविकत: निष्क्रिय है? हां! परंतु मृत्यु यहां सक्रिय है। पांटा भी कुछ साल बाद ऐसा ही होगा। विकृत वृक्ष, मरियल घास-पात, और चारों ओर सब कुछ पुरातन मृत्यु से ओत-प्रोत है। यहां मृत्यु की गंध व्याप्त है, समझे? नहीं, इससे भी बदतर बात है—भूतपूर्व जीवन की गंध व्याप्त है! नहीं, पपोव, मेरी बात याद रखना, पांटावासी यहां नहीं जी पायेंगे, कोई खुशी नहीं मिलेगी उन्हें यहां। पूरी मानवजाति के लिए नया घर? नहीं, नया घर नहीं, भूत-प्रेतों से भरा किला..."

मैं सिहर उठा। उसने यह देखा, मगर इसका मतलब गलत लगाया।

"तुम चिंता मत करो," उदासी भरी मुस्कान के साथ वह बोली। "मैं बिल्कुल ठीक हूं। मैं जो अनुभव कर रही हूं, जो पूर्वाभास मुझे हो रहा है, बस उसे व्यक्त करने की कोशिश कर रही हूं। मैं देख रही हूं कि तुम मुझे नहीं समझ पा रहे, लेकिन जरा सोचो कि यह कैसा पूर्वाभास है कि मृत्यु, प्रेत आदि शब्द अपने आप ही जबान पर आ रहे हैं।..."

उसने फिर से कमरे का चक्कर लगाया, मेरे सामने आकर रुक गयी और आगे कहने लगी:

"दूसरी ओर, यह सच है कि इस ग्रह के पैरामीटर अनुपम हैं, विरले हैं। जैव सक्रियता प्राय: शून्य है, वायुमंडल, जलमंडल, जलवायु, ताप संतुलन—सभी कुछ

मानो खास तौर पर 'नूह' परियोजना के लिए बनाया गया है। लेकिन चाहे कोई सी शर्त बद लो, मैं दावे के साथ यह कह सकती हूं कि इस सारे भव्य कार्य का आयोजन जिन लोगों ने किया है उनमें से एक भी इस ग्रह पर कभी नहीं आया, अगर आया भी तो उसमें जीवन की अनुभूति रत्ती भर भी नहीं थी।... हां, वे सब तो पहुंचे हुए लोग हैं, क्या कुछ नहीं देखा है उन्होंने, भौतिक खतरा वे कोसों दूर से सूंघ लेते हैं! मगर इसका..." उसने चुटकी बजायी और अपने विचार को व्यक्त कर पाने में असमर्थ अपना माथा थाम लिया। "वैसे, मुझे क्या मालूम, हो सकता है उनमें से किसी को यहां सब कुछ ठीक न होने का एहसास हुआ भी हो, मगर जो लोग यहां कभी आये नहीं, उन्हें यह कैसे समझाया जा सकता है?.. पर तुम तो मेरी बात समझ रहे हो न, कुछ तो समझ रहे हो न?"

अपनी नीली आंखों से वह एकटक मुझे देख रही थी, मैं असमंजस में था, पर आखिर मैंने झूठ बोला:

"पूरी तरह नहीं। मेरा मतलब है, कुछ हद तक तुम्हारा कहना सही है..."

"देखा," वह बोली, "तुम भी नहीं समझ पा रहे हो। खैर, बहुत हो गयी ये बातें।" वह मेरे सामने मेज पर बैठ गयी, फिर सहसा मेरे गाल पर उंगली छुआकर हंस दी। "बोल ली और मन हल्का हो गया। तुम तो समझते ही हो, कोमव तो ज्यादा बात करता ही नहीं, और वंडरफ़्ज़ से यह चर्चा न छेड़ना ही अच्छा है—मेडिकल रूम में बंद कर देगा।..."

उसका और मेरा भी तनाव तुरंत जाता रहा, हमारी बातचीत हल्की गप-शप में बदल गयी। मैंने उसे रोबोटों में हुई गड़बड़ी के बारे में बताया और यह कि कैसे वादिक सारे सागर में एकदम अकेला तैरता रहा था। फिर उससे पूछा कि उसका क्वार्टर मास्टरी का काम कैसा चल रहा है। माया ने जवाब दिया कि उन्होंने पांटावासियों के डेरों

के लिए चार स्थान चुने हैं, जगहें अच्छी हैं, और सब ठीक हो तो कोई भी पांटावासी खुशी से सारी उम्र यहां रह सकता है, मगर इस योजना का कुछ बनना-वनाना तो है नहीं, सो इसकी बात क्या करनी। मैंने माया को याद दिलाया कि वह स्वभाव से ही संशयी है और उसके संशय सदा सही नहीं निकले हैं। माया ने आपत्ति की कि यहां बात उसके स्वभाव के संशयों की नहीं, बल्कि प्रकृति के संशयों की है, और मैं भला समझता ही क्या हूं, मैं तो कल का छोकरा हूं, मुझे तो अनुभवी माया के सामने सावधान की मुद्रा में खड़ा होना चाहिए। इस पर मैं बोला कि अनुभवी व्यक्ति कभी साइवरटेक्नीशियन से झगड़ा नहीं करेगा, क्योंकि यान पर साइबरटेक्नीशियन ही वह धुरी होता है जिसके गिर्द सारा जीवन घूमता है। बस, कुल जमा गप-शप हो रही थी, और यदि कोई हमें यों बतियाते देखता तो उसे नज़ारा प्यारा लगता। बहरहाल, मैं नहीं जानता कि ये सब बातें करते हुए माया क्या सोच रही थी, पर मेरे मन में बारंबार यह विचार उठ रहा था कि तुरंत ही निरापदता प्रणालियों की सफ़ाई करके उन्हें दुरुस्त कर देनी चाहिए। यों तो ये प्रणालियां जैव खतरे से निरापदता सुनिश्चित करती थीं, और यह कहना मुश्किल था कि मृत्यु सक्रियता के खतरे से वे कहां तक बचाव कर पायेंगी, मगर कहते हैं, जो अपना बचाव खुद करता है, उसे ही ऊपरवाला बचाता है।

सो, जब माया ने जम्हाई भरते हुए कहा कि उसकी नींद पूरी नहीं हुई तो मैंने उसे खाने से पहले झपकी लेने भेज दिया। खुद तुरंत ही निरापदता प्रणाली की जांच और सफ़ाई-मरम्मत करने का फ़ैसला किया। हां, पहले मैं रेडियो रूम में गया यह देखने कि मेरे जवानों का काम कैसे चल रहा है। वहां वंडरहूज़ अपनी एक्सपर्ट रिपोर्ट के कागज़ समेट रहा था। "अभी कोमव को दे आता हूं," मुझे देखकर वह बोला, "फिर माया को दूंगा, उसके बाद बहस

करेंगे, क्या ख्याल है? तुम्हें बुलायें?" मैंने कहा कि बुला लें, और बता दिया कि मैं निरापदता खंड में होऊंगा। उसने कौतूहल भरी नज़र मुझ पर डाली, मगर बोला कुछ नहीं।

कोई दो घंटे बाद मुझे बुलाया गया। वंडरहूज़ ने इंटरकोम पर बताया कि आयोग के सभी सदस्यों ने रिपोर्ट पढ़ ली है, पूछा कि क्या मैं पढ़ना चाहूंगा। पढ़ना तो मैं चाहता था, पर काम पूरे ज़ोरों पर था, प्रहरी-टोही अधखुला पड़ा था, बस पसीने छूट रहे थे, सो मैंने जवाब दिया कि मैं पढ़ूंगा तो नहीं, हां जब वे बहस करने लगेंगे, तो ज़रूर पहुंच जाऊंगा—काम खत्म करके। "कोई घंटे भर का काम और है," मैं बोला, "आप लोग खाना खा लीजिये, मेरा इंतज़ार मत कीजिये।"

मैं जब डाइनिंग रूम में पहुंचा तो खाना खत्म हो चुका था, बहस शुरू हो गयी थी। मैं अपने लिए सूप लेकर एक ओर बैठ गया, सुनने लगा।

"नहीं, उल्का पिंड से टक्कर की बात मुझे कुछ जची नहीं," वंडरहूज़ कह रहा था। "पेलिकन यानों में उल्का पिंडों से बचने की बहुत अच्छी व्यवस्था है।"

"मैं मानता हूं आपकी बात," कोमव ने मेज़ पर नज़रें गड़ाये और नाक-भौंह सिकोड़ते हुए जवाब दिया। "परंतु कल्पना कीजिये कि उल्का पिंड प्रहार उस क्षण हुआ जब यान अवदिक् से निकल रहा था।..."

"हां, ऐसे में तो टक्कर हो सकती है," वंडरहूज़ मान गया। "लेकिन ऐसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना..."

"आपकी बातें सुनकर हैरानी होती है। यान का उड़ान इंजन पूरी तरह नष्ट है, यान के आर-पार विशाल छेद है, जिस पर ताप प्रभाव के चिह्न स्पष्ट हैं। मेरे ख्याल में तो कोई भी समझदार आदमी यही कहेगा कि ऐसा उल्का पिंड से टकराने से ही हो सकता है।"

वंडरहूज़ बड़ा दुखी लग रहा था।

4—1001

"अच्छा... यही सही," वह बोला। "मान लेते हैं आपकी बात... पर कोमव, आप समझ नहीं रहे, आप तारकनाविक जो नहीं हैं... आप समझते नहीं कि इसकी संभावना कितनी कम है। ऐन उस क्षण जब यान अवदिक् से निकल रहा हो, अत्युच्च ऊर्जा का विशाल उल्का पिंड आ टकराये... इतनी कम है इसकी संभावना कि इसकी तुलना किससे करूं!"

"माना। पर आप क्या सुझाते हैं?"

वंडरहूज ने बारी-बारी सब पर नजर डाली—समर्थन पाने की आशा में, परंतु समर्थन न पाकर बोला:

"अच्छा, ऐसे ही सही। परंतु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि हमें रिपोर्ट में इस बात को संभावनार्थक रूप दें। उदाहरण के लिए: 'उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है...'"

"'निष्कर्ष निकाला जा सकता है'," कोमव ने उसे टोका।

"'निष्कर्ष निकाला जा सकता है'?" वंडरहूज की भृकुटि तन गयी। "नहीं, नहीं, कैसा निष्कर्ष? बस अनुमान ही! '...अनुमान लगाया जा सकता है कि अवदिक् से निकास के क्षण उच्च ऊर्जा का उल्का पिंड यान से टकराया'। मैं सोचता हूं ऐसे लिखना चाहिए। मान जाइये मेरी बात।"

कुछ क्षण तक कोमव विचारमग्न बैठा रहा, फिर बोला:

"मान ली। अब अगला संशोधन।"

"एक मिनट," वंडरहूज बोला। "माया, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

माया ने कंधे उचका दिये।

"सच पूछें तो मुझे कोई अंतर नहीं दीखता। खैर, मैं सहमत हूं।"

"अगला संशोधन," कोमव अधीरता से बोला। "हमें

बेस कैंप की राय नहीं मांगनी चाहिए कि शवों का क्या करें। यह सवाल तो विशेषज्ञ रिपोर्ट में होना ही नहीं चाहिए। एक विशेष रेडियो संदेश भेज देना चाहिए कि पायलटों के शव विशेष कंटेनर में रखकर प्लास्टिग्लास में जमा दिये गये हैं, निकट भविष्य में ही बेस कैंप को भेज दिये जायेंगे।"

"पर..." हक्का-बक्का सा वंडरहूज़ कुछ कहने लगा।

"मैं कल खुद यह काम संभालूंगा," कोमव ने उसे टोक दिया।

"शायद उन्हें यहीं पर दफ़ना देना उचित हो?" माया धीरे से बोली।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," कोमव ने पलटकर कहा। "परंतु नियमतः ऐसे मामलों में शव पृथ्वी पर भेजी जाते हैं।... क्या?" वह वंडरहूज़ की ओर मुड़ा।

वंडरहूज़ मुंह खोलने लगा था, मगर फिर सिर हिलाकर बस इतना ही बोला:

"कुछ नहीं।"

"हां, तो, मेरी राय यह है कि यह सवाल रिपोर्ट में न रखा जाये," कोमव ने कहा। "जैकब, आप सहमत हैं?"

"ठीक है," वंडरहूज़ बोला। "तुम्हारा क्या ख्याल है, माया?"

माया दुविधा में थी, मैं उसकी मनःस्थिति समझ रहा था। यह सब बड़े ही काम-काजी ढंग से हो रहा था। यह तो मैं नहीं जानता था कि कैसे होना चाहिए, लेकिन यह ज़रूर सोच रहा था कि ऐसे प्रश्न हाथ उठाकर नहीं हल किये जाने चाहिए।

"ठीक," कोमव यों बोला जैसे कि कोई खास बात न हुई हो। "अब हम पायलटों की मृत्यु के कारणों और परिस्थितियों पर आते हैं। शव परीक्षा की रिपोर्ट और फ़ोटो-सामग्री से मैं संतुष्ट हूं। मेरी राय में विशेषज्ञ रिपोर्ट

में हमें इस तरह लिखना चाहिए: 'शवों की स्थिति इस बात की साक्षी है कि पायलटों की मृत्यु ग्रह के धरातल से यान के टकराने के परिणामस्वरूप हुई। पुरुष स्त्री से पहले मर गया, मरने से पहले उसने लॉग बुक मिटा दी। पायलट की कुर्सी से निकलने में वह असमर्थ था। इसके विपरीत स्त्री और कुछ समय तक जीवित रही और उसने यान से निकलने का प्रयास किया। निर्गम कक्ष में उसकी मृत्यु हुई।' आगे जैसा आपने लिखा है।"

"हुं..." वंडरहूज संदेह-विदीर्ण हो रहा था। "क्या यह अत्यधिक अनम्य कथन नहीं है? यदि हम शव परीक्षा की रिपोर्ट को, जिस पर आपको कोई आपत्ति नहीं है, मानकर चलें तो वह बेचारी ऐसी हालत में नहीं थी कि रेंगकर निर्गम कक्ष तक पहुंच जाती।"

"परंतु वह पहुंच तो गयी थी," भावहीन स्वर में कोमव बोला।

"मगर यही बात तो..." वंडरहूज ने जोश से कहना शुरू किया।

"सुनिये, जैकब," कोमव बोला। "कोई नहीं जानता कि संकट की स्थिति में मनुष्य क्या कुछ करने में समर्थ होता है। विशेषकर स्त्री। मार्टा प्रिस्ली की घटना याद करिये, कोलेस्निचेंको की घटना याद करिये। इतिहास में कितनी ही ऐसी घटनाओं का उल्लेख मिलता है।"

खामोशी छा गयी। वंडरहूज बड़ा दुखी लग रहा था, अपने गलमुच्छों को निर्ममता से नोंचता जा रहा था।

"मुझे इसमें कोई हैरानी की बात नहीं लगती कि वह निर्गम कक्ष में पायी गयी," अब माया बोली। "मुझे एक दूसरी बात समझ में नहीं आ रही। उसने लॉग बुक क्यों मिटा दी? आखिर प्रहार हुआ था, वह दम तोड़ रहा था।"

"हुं, यह तो..." वंडरहूज कुछ हिचकिचाते हुए कहने लगा, "यह तो हो सकता है। मृत्यु वेदना में छटपटाते हुए

स्विच बोर्ड पर हाथ मार होगा, कुंजी पर हाथ लग गया होगा..."

"लॉग बुक का प्रश्न हमने विशेष महत्व के तथ्यों के खंड में रखा है," कोमव ने कहा। "मेरी निजी राय तो यह है कि यह पहेली हम कभी नहीं बूझ पायेंगे... बेशक, अगर यह वाकई पहेली है, न कि मात्र संयोग। अच्छा, आगे चलें," उसने तेज़ी से अपने सामने फैले कागज़ उलटे-पलटे। "वैसे तो मुझे कोई और टिप्पणी नहीं करनी है। पार्थिव सूक्ष्म वनस्पतियां और सूक्ष्म जीव प्रत्यक्षतः नष्ट हो गये थे, उनका कोई चिह्न नहीं मिला है।... अच्छा... निजी कागज़ात। उनकी छानबीन करना हमारा काम नहीं है, और फिर वे ऐसी दशा में हैं कि हम बस बिगाड़ ही सकते हैं। कल मैं उनका परिरक्षण करके उन्हें यहां ले आऊंगा... हां! पपोव, यहां आपके लिए कुछ है। आप 'पेलिकन' यानों की साइबरनेटिक सज्जा से परिचित हैं?"

"ज़रूर," जल्दी से प्लेट परे खिसकाते हुए मैंने जवाब दिया।

"तो, ज़रा मेहरबानी करके यह सूची देखिये," उसने एक कागज़ मेरी ओर बढ़ा दिया। "यह यान पर मिले साइबर यंत्रों की सूची है। देखिये, सभी हैं कि नहीं।"

मैंने सूची ली। सब मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"हां," मैं बोला। "सब कुछ मौजूद है। प्रहरी टोही तक हैं, आम तौर पर उनकी हमेशा कमी रहती है... पर यह बात समझ में नहीं आयी। यह क्या है: 'मरम्मत रोबोट, जो सिलाई मशीन में बदल दिया गया'?"

"जैकव, समझा दीजिये," कोमव ने आदेश दिया।

वंडरहूज़ ने अपना सिर ऊपर उठाया, ठोड़ी आगे को बढ़ा दी।

"देखो न," वह विचारमग्न सा बोलने लगा। "कुछ समझाना मुश्किल है। बस एक मरम्मत रोबोट है, जिसे

बदलकर सिलाई मशीन बना दिया गया। समझे? उनमें से किसी का, शायद स्त्री का ही, यह शौक रहा होगा।"

"अच्छा!" मैं हैरान होकर बोला। "परंतु है यह मरम्मत रोबोट ही?"

"कोई शक नहीं," वंडरहूज़ ने पूरे विश्वास से कहा।

"तब तो पूरा सेट है," कोमव को सूची लौटाते हुए मैंने कहा। "विरले ही किसी यान पर इतना पूरा सेट होता है। लगता है, वे एक बार भी किसी भारी ग्रह पर नहीं उतरे होंगे।"

"धन्यवाद," कोमव ने कहा। "जब रिपोर्ट की साफ़ कापी तैयार हो जायेगी तो आप बच गयी साइबर मशीनों के विलोपन के खंड पर हस्ताक्षर कर दीजियेगा।"

"परंतु कोई मशीन विलुप्त नहीं हुई है," मैंने आपत्ति की।

कोमव ने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, वंडरहूज़ ने समझाया:

"यह तो बस खंड का शीर्षक है: 'बच गयी साइबर मशीनों का विलोपन'। तुम हस्ताक्षर कर देना कि कोई विलोपन नहीं है।"

"अच्छा..." मेज़ पर फैले कागज़ बटोरते हुए कोमव बोला। "अब, जैकब, मैं आपसे अनुरोध करूंगा, आप सारी रिपोर्ट ठीक-ठाक कर दीजिये, हम हस्ताक्षर कर देंगे और आज ही रेडियो संदेश भेज देंगे। अब अगर किसी को और कुछ नहीं कहना है तो मैं जाता हूं।"

किसी को कुछ नहीं कहना था। वह चला गया। वंडरहूज़ एक लंबी सांस छोड़कर उठा, रिपोर्ट उठाकर हाथ पर तोली, हमारी ओर देखा और चला गया।

"वंडरहूज़ तो खिन्न लग रहा है," प्लेट पर कटलेट रखते हुए मैंने कहा।

"मैं भी खिन्न हूं," माया ने कहा। "मुझे तो यह सब अशोभनीय लगा है। मैं नहीं जानती कैसे समझाऊं,

शायद, यह मेरा बचकानापन है, भोलापन है... पर कम से कम एक मिनट का मौन तो होना चाहिए... यहां तो बस मशीन चला दी: शवों की स्थिति, साइबर मशीनों का विलोपन, स्थलाकृति... थू! जैसे कि स्कूल में पाठ हो रहा हो..."

मैं उससे पूरी तरह सहमत था।

"कोमव तो किसी को बोलने ही नहीं देता!" वह गुस्से में कहे जा रही थी। "उसके लिए सब कुछ स्पष्ट है, सारी बात साफ़ है, वास्तव में तो सब कुछ इतना स्पष्ट नहीं है। उल्का पिंड की बात स्पष्ट नहीं और खास तौर पर लॉग बुक की। मैं नहीं मानती कि वह खुद सारी बात समझ गया है! मुझे लगता है कि उसके दिमाग में कुछ है, वंडरहूज़ भी यह समझता है, पर यह नहीं जानता कि कैसे उससे बात कहलवाये... या फिर वह इसे गौण बात मानता है।..."

"हो सकता है, यह सब वाकई इतना महत्त्वपूर्ण न हो," मैं कुछ हिचकिचाता हुआ बोला।

"मैं कब कह रही हूं कि महत्त्वपूर्ण है।" माया ने जवाब दिया। "मुझे तो बस कोमव का व्यवहार अच्छा नहीं लगता। मेरी समझ से परे है वह। मुझे तो वह ज़रा भी अच्छा नहीं लगता! कितनी तारीफ़ें सुनी थीं उसकी, पर अब मैं दिन गिन रही हूं—कितने दिन और उसके साथ काम करना होगा... आइंदा कभी उसके साथ काम नहीं करूंगी!"

"बहुत दिन नहीं बचे," मैंने उसे शांत करने के अंदाज़ में कहा। "यही कोई बीसेक दिन..."

अब हम दोनों भी अपना-अपना काम करने चल दिये। माया अपने नोट ठीक-ठाक करने गयी, मैं रेडियो रूम को, जहां एक छोटी सी खुशखबरी मिली: टॉम ने बताया कि नींव डालने का काम पूरा हो गया है, मैं आकर देख लूं। मैंने फ़रकोट पहना और निर्माण स्थली पर दौड़ गया।

सूरज डूब गया था, सांझ का धुंधलका गहरा रहा था। यहां धुंधलका विचित्र था—गाढ़े बैंगनी रंग का, जैसे कि स्याही घुली हो। चंद्रमा नहीं था परंतु विपुल मेरु ज्योति थी, सो भी कैसी! काले महासागर के ऊपर विराट इंद्रधनुषी चादरें निस्स्वर लहराती थीं, कभी सिमटती तो कभी फैल जाती थीं, मानो हवा के झोंकों से फड़फड़ाती और कांपती थीं, सफ़ेद, हरी, गुलाबी चमक दौड़ती और फिर पलक झपकते ही ज्योति बुझ जाती, धुंधले रंगीन धब्बे कुछ देर तक आंखों के आगे बने रहते, फिर मेरु ज्योति पुनः प्रकट होती और तब तारे विलीन हो जाते, धुंधलका विलीन हो जाता, चारों ओर सब कुछ अस्वाभाविक, किंतु निर्मलतम रंगों में रंगा जाता—दलदल पर छाया कोहरा लाल-नीला हो जाता, दूर खड़ा आइसबर्ग विशाल तृणमणि की भांति झिलमिलाता और रेतीले तट पर हरी छायाएं दौड़तीं।

ठंड से जमते गालों और नाक को ज़ोर से रगड़ते हुए मैं इस विचित्र प्रकाश में तैयार नींवें देख रहा था। मेरे पीछे-पीछे चल रहा टॉम मुझे आवश्यक आंकड़े बताता जा रहा था, जब मेरु ज्योति बुझती तो वह सर्च लाइट ऑन कर देता। सदा की भांति मुर्दानगी भरा सन्नाटा छाया हुआ था, मेरी एड़ियों तले ठंड से जमी रेत ही चरमरा रही थी। फिर मुझे आवाज़ें सुनायी दीं: माया और वंडरहूज़ ताज़ी हवा में सांस लेने और आकाश के दृश्य को निहारने बाहर निकले थे। माया को मेरु ज्योति बहुत अच्छी लगती थी, इस ग्रह पर एकमात्र यह ज्योति ही उसे भाती थी। मैं यान से काफ़ी दूर था, कोई सौ मीटर दूर, वे मुझे दिख नहीं रहे थे, लेकिन उनकी आवाज़ें साफ़-साफ़ सुनायी दे रही थीं। पहले तो मैं उनकी बातों की ओर कोई खास ध्यान नहीं दे रहा था। माया वृक्षों के क्षत शिखरों के बारे में कुछ कह रही थी, वंडरहूज़ यान के जैवाभों के क्षरण के बारे में कुछ बुदबुदा रहा था—प्रत्यक्षतः, वे फिर से

'पेलिकन' की दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों पर विचार कर रहे थे।

उनकी बातचीत कुछ अजीब सी थी। मैं बता चुका हूं कि शुरू में मैं उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहा था, कुछ देर बाद ही मैं समझा कि मामला क्या है। वे ऐसे बोल रहे थे, जैसे एक दूसरे की बात न सुन रहे हैं। उदाहरण के लिए वंडरहूज़ कहता: "उनका एक ग्रहीय इंजन तो बच गया था, ऐसा न होता तो वे वायुमंडल में यान न चला पाते।..." माया अपनी ही बात कहे जाती: "नहीं, जैकब, दस-पंद्रह साल से कम नहीं।..."

मैं एक नींव का तला देखने नीचे उतरा, जब ऊपर आया तो उनकी बातचीत अब दो बहरों की बातचीत जैसी नहीं रह गयी थी, लेकिन मेरी समझ में वह पहले से भी कम आ रही थी। वे मानो किसी नाटक की रिहर्सल कर रहे थे।

"यह क्या बला है?" माया पूछ रही थी।

"मैं तो कहूंगा कि यह खिलौना है," वंडरहूज़ का जवाब था।

"मैं भी यही कहूंगी। पर किसलिए?"

"हॉबी होगी। आश्चर्य की कोई बात नहीं, एक आम हॉबी है।"

यह विचित्र बातचीत शीघ्र ही बंद हो गयी। हैच की झिल्ली का छपाका सा सुनायी दिया और फिर से सन्नाटा छा गया। मैंने आखिरी नींव देखी, अच्छे काम के लिए टॉम को शाबाशी दी और यह आदेश भी कि वह जैक को अगले काम के लिए स्विच ओवर कर दे। मेरु ज्योति बुझ गयी, घना अंधकार छा गया, जिसमें मेरे साइबरों की साइड लाइटों के अलावा कुछ भी नज़र नहीं आता था। मैं महसूस कर रहा था कि मेरी नाक ठंड के मारे बर्फ़ का टुकड़ा बनकर गिरने ही वाली है, सो दौड़ा-दौड़ा यान तक गया, टटोलकर झिल्ली ढूंढ़ी और निर्गम कक्ष में कूद गया।

निर्गम कक्ष तो यान की एक सबसे अच्छी जगह है। शायद इसलिए कि यह यान का वह पहला कक्ष है जो घर की मधुर अनुभूति देता है: घर लौट आये, अपने गरम, सुरक्षित घर में, बेगाने, ठंडे और भयावह स्थान से, अंधकार से प्रकाश में पहुंच गये। फ़रकोट उतारकर हाथ रगड़ता हुआ मैं रेडियो रूम को चल दिया।

अपने कागज़ों से घिरा वंडरहूज़ वहां बैठा था—अवसादमय, सिर झुकाये—और रिपोर्ट की साफ़ कापी तैयार कर रहा था। उसकी उंगलियां फुर्ती से कोडित्र पर चल रही थीं, मशीन की खटाखट हो रही थी।

"मेरे जवानों ने नींव बिछाने का काम पूरा कर लिया है," मैंने अपने काम की तारीफ़ की।

"हुं," वंडरहूज़ ने बस इतना ही कहा।

"वह क्या खिलौनों की बात हो रही थी?" मैंने पूछा।

"खिलौने..." अन्यमनस्क वंडरहूज़ बोला। "खिलौने?" कोडित्र पर उंगलियां चलाते उसने पूछा। "अच्छा, खिलौने..." तैयार पन्ना एक ओर रखकर उसने दूसरा कागज़ लिया।

थोड़ी देर इंतज़ार करने के बाद मैंने याद दिलाया:

"तो क्या खिलौने हैं वे?"

"क्या खिलौने हैं?" अर्थमय स्वर में वंडरहूज़ ने मेरा सवाल दोहराया और सिर ऊपर उठाकर मेरी ओर देखा। "तुम इस तरह सवाल रख रहे हो? देखो न... कौन जाने, क्या खिलौने हैं। वहां 'पेलिकन' पर... माफ़ करना, पपोव, मैं पहले अपना काम खत्म कर लूं, क्या ख्याल है?"

मैं दबे पांव अपने स्विच बोर्ड के पास चला गया, थोड़ी देर तक जैक को काम करते देखता रहा, जो मौसम स्टेशन की दीवारें बनाने लगा था, फिर उसी तरह दबे पांव रेडियो रूम से निकलकर माया के केबिन को चला दिया।

माया के केबिन में जितनी भी लाइटें जलायी जा सकती थीं, सब जल रही थीं, वह बिस्तर पर पलाथी मारे बैठी थी और बहुत व्यस्त थी। मेज़ पर, बिस्तर पर, फ़र्श पर कागज़, मानचित्र, फ़ोटो और नोट फैले हुए थे, माया बारी-बारी से उन्हें देख रही थी, कुछ निशान लगा रही थी, कभी वह हाथ बढ़ाकर मैग्नीफ़ाइंग ग्लास उठा लेती, कभी कुर्सी पर रखी जूस की बोतल। थोड़ी देर तक मैं उसे देखता रहा, फिर जब उसने बोतल उठायी तो मैं कुर्सी पर बैठ गया, सो जब माया ने एक घूंट भरकर कुछ देखे बिना ही बोतल कुर्सी पर रखनी चाही तो वह सीधे मेरे हाथ में आ गयी।

"धन्यवाद," मैंने कहा और एक घूंट भरा।

माया ने सिर उठाया।

"हुं, तुम हो?" वह झुंझलायी सी बोली। "क्या बात है?"

"कुछ नहीं, बस यों ही -चला आया," मैंने खुशमिज़ाजी दिखाते हुए कहा। "सैर कर ली?"

"कैसी सैर," बोतल लेते हुए वह बोली। "दम लेने की फ़ुरसत नहीं है, कल शाम काम नहीं हुआ, ढेर लग गया है।... सैर करने की फ़ुरसत कहां है!"

उसने मुझे बोतल लौटा दी, मैंने यंत्रवत एक घूंट भरा। मन में अस्पष्ट सी बेचैनी उठ रही थी, और तभी मानो मेरी आंखों पर पड़ा पर्दा हट गया: माया तो घर के कपड़े पहने हुए थी—अपना मनपसंद रोयेंदार स्वैटर और निकर, उसके सिर पर स्कार्फ़ बंधा हुआ था और स्कार्फ़ तले बाल गीले थे।

"नहायी हो?" भावशून्य स्वर में मैंने पूछा।

उसने जवाब में कुछ कहा, लेकिन मैं पहले ही सब कुछ समझ गया था—वह तो सारी शाम यान से बाहर नहीं निकली थी। मैं उठा, बोतल को ध्यान से कुर्सी पर रखते हुए कुछ बुदबुदाया—पता नहीं क्या। किसी तरह

गलियारे में जा पहुंचा, फिर अपने केबिन में, जाने क्यों ऊपर की लाइट ऑफ़ करके नाइट लैंप ऑन कर लिया और दीवार की ओर मुंह करके लेट गया। फिर से मेरा बदन थरथर कांप रहा था। मुझे याद है, कुछ खंडित से विचार मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे: "अब तो सब बेकार हो गया, कुछ नहीं होने का, कोई उम्मीद नहीं रही, रत्ती भर भी नहीं"। मैंने फिर से अपने को कुछ सुनते पाया। फिर से कुछ ऐसी ध्वनियां मैं सुन रहा था, जो हो ही नहीं सकती थीं। तब एक झटके से मैं उठा, दराज़ में हाथ डालकर नींद की गोली निकाली और निगल गया। मैं फिर से लेट गया। दीवारों पर छिपकलियां धमाधम कर रही थीं, नाइट लैंप की रोशनी कभी बिल्कुल ही धुंधली हो जाती थी और कभी इतनी तेज़ कि सही नहीं जाती थी, दम तोड़ती मक्खियां कोनों में भिनभिना रही थीं। लगता है माया आयी थी, चिंता भरी नज़रों से मुझे देखती रही, फिर मुझे कुछ ओढ़ाकर चली गयी, उसके बाद वादिक आ गया, मेरे पायताने बैठकर गुस्से से बोला: "क्या यहां पड़े हुए हो? पूरा आयोग तुम्हारी बाट जोह रहा है और तुम यहां पसरे हुए हो।"—"ज़ोर से बोलो," नीना ने उससे कहा, "उसके कानों को कुछ हो गया है, उसे सुनायी नहीं दे रहा।" मैंने एकदम भावहीन सूरत बनाकर कहा कि यह सब बकवास है। मैं उठा और हम सब ध्वस्त 'पेलिकन' में गये, उसमें सारा जैवांश विघटित हो चुका था और अमोनिया की तीखी गंध आ रही थी, वैसी ही जैसी तब गलियारे में आ रही थी। लेकिन यह तो 'पेलिकन' नहीं था, यह तो निर्माण-स्थली थी, मेरे जवान काम कर रहे थे, अवतरण पट्टी धूप में चमचमा रही थी, मुझे डर लग रहा था कि टॉम दो ममियों को रौंद देगा, जो पट्टी के आर-पार पड़ी हुई थीं, वैसे तो दूसरे लोग ही यह सोच रहे थे कि ये ममियां हैं, असल में ये कोमब और वंडरहूज़ थे, लेकिन यह ज़रूरी था कि किसी को इसका पता

न चले, क्योंकि वे दोनों बातें कर रहे थे और सिर्फ़ मैं ही उनकी बातें सुन रहा था। लेकिन माया से छिपा नहीं जा सकता। "आप देख नहीं रहे उसकी तबीयत खराब है," उसने गुस्से से कहा और अमोनिया में भिगोया रूमाल मेरे मुंह और नाक पर रख दिया। मेरा तो दम घुटने लगा था, सिर झटकर मैं उठ बैठा।

मेरी आंखें खुली हुई थीं, नाइट लैंप की रोशनी में तुरंत ही मैंने अपने सामने एक मनुष्य को देखा। वह पलंग के पास ही खड़ा था और सिर झुकाये एकटक मेरे चेहरे को देख रहा था। मद्धिम प्रकाश में वह बिल्कुल काला ही लग रहा था—अजीब सी टेढ़ी-मेढ़ी आकृति, चेहरे के बिना, डोलती हुई, किन्हीं स्पष्ट रेखाओं के बिना, उसकी छाती और कंधों पर ऐसी ही अस्पष्ट, कंपकंपाती रोशनी पड़ रही थी।

यह जानते हुए कि इसका अंत क्या होगा, मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और मेरा हाथ उसके आर-पार निकल गया, जैसे कि वहां केवल हवा हो, आकृति डोली और धीरे-धीरे विलीन होने लगी। पीठ के बल लेटकर मैंने आंखें मूंद लीं। आपको मालूम है अल्जीरिया के बेक की नाक तले गुमटा है? ऐन नाक तले।... मैं पसीने से तरबतर था और मुझे घुटन लग रही थी, सांस नहीं ली जा रही थी।

अध्याय चार

प्रेत और मानव

सुबह मैं देर से उठा। सिर भारी हो रहा था, पर मैंने पक्का संकल्प कर लिया था कि नाश्ते के फ़ौरन बाद ही वंडरहूज़ से अकेले में बात करूंगा और उसे सब कुछ

बता दूंगा। लगता था, जीवन में मैंने अपने को इतना अभागा कभी महसूस नहीं किया था। मेरे लिऐ सब कुछ खत्म हो गया था, सो मैंने कसरत भी नहीं की, बस आयन-स्नान करके डाइनिंग रूम को चल दिया। उसकी दहलीज़ पर ही मुझे ख्याल आया कि कल शाम अपने मन की उलझनों में फंसकर मुझे नाश्ते का मेन्यू आर्डर करना याद ही नहीं रहा था। इस बात ने मुझे बिल्कुल ही पस्त कर दिया। मुंह ही मुंह में कुछ बुदबुदाते हुए मैंने सबका अभिवादन किया और यह महसूस करते हुए खेद और शर्म के मारे मैं गड़ा जा रहा हूं, मैं अपनी जगह पर जा बैठा, बुझी नज़र मेज़ पर दौड़ायी यह कोशिश करते हुए कि किसी से आंखें न मिलें। नाश्ता तो बस मठवासियों का ही था—ब्राउन ब्रेड और दूध। वंडरव्लूज़ ने अपने पीस पर नमक छिड़क लिया था। माया ने मक्खन लगा लिया था। कोमव रूखी ब्रेड ही चबाये जा रहा था, दूध तक को हाथ नहीं लगा रहा था।

मुझे ज़रा भी भूख नहीं थी—यह विचार ही खौफ़नाक लगता था कि कुछ चबाना होगा। दूध का गिलास लेकर मैंने एक छोटा सा घूंट भरा। कनखियों से मैं देख रहा था कि माया की नज़रें मुझ पर टिकी हुई हैं और वह मुझसे पूछना चाहती है कि मुझे हुआ क्या है। मगर उसने कुछ नहीं पूछा। वंडरव्लूज़ ये बातें करने लगा कि एक दिन हल्का खाना खाना सेहत के लिए कितना फ़ायदेमंद होता है, और यह कितनी अच्छी बात है कि आज हमारा खाना ऐसा ही है, कोई और नहीं। फिर वह हमें विस्तार से यह बताने लगा कि व्रत क्या होता है और कैसे पुराने ज़माने में ईसाई लोग चालीस दिन का व्रत रखते थे। पहले ईसाइयों का उसने सादर उल्लेख किया, जो अपना काम बखूबी जानते थे। साथ ही वह यह बताने लगा कि इस व्रत से पहले जाड़ों की विदाई का त्योहार मनाया जाता था, पर शीघ्र ही उसने महसूस किया कि इस त्योहार पर बननेवाले पकवानों

,

के वर्णन में वह कुछ ज्यादा ही जोश दिखाने लगा है, सो अपनी बात बीच में ही छोड़कर वह कुछ सकपकाया सा अपने गलमुच्छों पर हाथ फेरने लगा। बातचीत नहीं चल पा रही थी। मुझे अपनी ही चिंता लगी हुई थी। माया को मेरी चिंता थी। रहा कोमव, वह कल की ही भांति उखड़ा-उखड़ा लग रहा था। उसकी आंखें लाल थीं, वह मेज़ पर ही नज़रें गड़ाये हुए था, पर बीच-बीच में वह एक झटके से सिर ऊपर उठा लेता और इधर-उधर नज़रें दौड़ाता मानो कोई उसे पुकार रहा हो। उसने चारों ओर ब्रेड का चूरा फैला दिया था और अभी भी फैलाता जा रहा था, मेरा जी करता था कि उसके हाथ पर चपत मार दूं, जैसे किसी बच्चे को मारते हैं। बस, इस तरह मुंह लटकाये हम बैठे थे और बेचारा वंडरहूज़ हमारा ध्यान बंटाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहा था।

वह कोई लंबा किस्सा सुनाने में लगा हुआ था, जिसे सुनाते-सुनाते ही गढ़ता जा रहा था और किसी तरह उसका अंत नहीं सोच पा रहा था, तभी कोमव के मुंह से एक घुटी-घुटी आवाज़ निकला, जैसे कि रूखी ब्रेड का टुकड़ा अंततः उसके गले में फंस गया हो। मैंने उस पर नज़र डाली और भयभीत हो गया। कोमव दोनों हाथों से मेज़पोश का सिरा कसकर पकड़े एकदम सीधा बैठा था, वह आंखें फाड़-फाड़कर मेरे पीछे कहीं देख रहा था और उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। मैंने मुड़कर देखा और स्तब्ध रह गया। दीवार के पास फ़िल्म लाइब्रेरी और शतरंज की मेज़ के बीच वही प्रेत खड़ा हुआ था।

अब मैं उसे बिल्कुल साफ़-साफ़ देख रहा था। वह मानव था, या कम से कम मानवाभ तो अवश्य ही था—नाटा, दुबला, बिल्कुल नंगा। उसकी त्वचा स्याही जैसी काली थी और ऐसे चमक रही थी जैसे कि उस पर तेल लगा हुआ हो। उसका चेहरा मैं नहीं देख पाया या वह मुझे याद नहीं रहा, लेकिन एक बात की ओर मेरा ध्यान

तुरंत गया, जो मैंने रात को अपने दुस्स्वप्न में भी नोट की थी कि इस मानव की आकृति टेढ़ी-मेढ़ी और अस्पष्ट है। और हां आंखों की ओर भी: बड़ी-बड़ी, काली, एकदम निश्चल, किसी मूर्ति की आंखों की भांति दृष्टिहीन।

"वह रहा! वह रहा!" कोमव चिल्लाया।

वह उंगली से बिल्कुल दूसरी ओर इशारा कर रहा था। वहां मेरे देखते-देखते ही हवा में से एक नयी आकृति प्रकट हुई। यह वही जड़ीभूत चमकता प्रेत था, परंतु अब वह छलांग की मुद्रा में जड़ीभूत था, जैसे कि दौड़ आरंभ कर रहे धावक का फ़ोटो। उसी क्षण माया उसकी ओर लपकी, कुर्सी धड़ाम से एक ओर जा गिरी, माया जोश से चिल्लाते हुए प्रेत के आर-पार चली गयी और वीडियोफ़ोन के स्क्रीन से जा टकरायी। मैंने यह भी देखा कि कैसे प्रेत डोलने और विलीन होने लगा। तभी कोमव चिल्लाया:

"दरवाज़ा! दरवाज़ा!"

मैंने देखा: कोई छोटा सा, सफ़ेद और दूधिया, हमारे डाइनिंग रूम की दीवार जैसा, निस्स्वर दौड़ता हुआ दरवाज़े से बाहर निकला और गलियारे में विलीन हो गया। तब मैं उसके पीछे लपका।

अब तो यह याद करते शर्म आती है, पर तब मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि यह कैसा जीव है, कहां से आया, कैसे और किसलिए आया है—मैं तो बस भारी राहत महसूस कर रहा था, यह समझते हुए कि इस क्षण से मेरे सारे दुस्स्वप्न और भय खत्म हो गये हैं, इसके साथ मेरे मन में बस यही एक अभिलाषा था कि उसे पकड़ लूं और उसके हाथ-पांव बांधकर यहां ले आऊं।

दरवाज़े में मैं कोमव से टकराया, वह गिर पड़ा, उससे ठोकर खाकर मैं भी गिर पड़ा और हाथों-पांवों के बल ही गलियारे में भागने लगा। गलियारा खाली था, वहां बस अमोनिया की वही जानी-पहचानी गंध आ रही थी, पीछे से कोमव कुछ चिल्ला रहा था, एड़ियों की ठकाठक

हो रही थी, मैं उठा, निर्गम कक्ष लांघकर हैच से बाहर कूद गया, हैच पर अभी नयी झिल्ली चढ़ भी नहीं पायी थी। बाहर बैंगनी सी धूप निकली हुई थी।

मैंने तुरंत ही उसे देख लिया। वह निर्माण स्थली की ओर दौड़ता जा रहा था, बड़ी आसानी से दौड़ रहा था, उसके नंगे पांव ठंड से जमी रेत को मुश्किल से छूते थे, वह वैसा ही टेढ़ा-मेढ़ा था और दौड़ते हुए अगल-बगल फैली कोहनियां अजीब ढंग से हिला रहा था, लेकिन अब वह न काला था, न दूधिया सफ़ेद, बल्कि हल्के बैंगनी रंग का, उसके पतले कंधों और बगलों पर धूप चमक रही थी। वह सीधा मेरे साइबरों की ओर दौड़ता जा रहा था। मैंने अपनी चाल थोड़ी धीमी कर दी, यह सोचते हुए कि वह साइबरों से डर जायेगा और दायें या बायें मुड़ जायेगा, मगर वह नहीं डरा, वह टॉम से दस कदम की दूरी पर उसके सामने से निकला। मुझे यह देखकर अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ कि टॉम ने उसे देखकर "कोई आदेश?" का संकेत जला दिया।

"दलदल को!" पीछे से माया हांफते हुए चिल्ला रही थी। "दलदल की ओर भगाओ उसे!"

नन्हा आदिवासी हमारे प्रयासों के बिना ही दलदल की ओर दौड़ रहा था। मानना होगा कि दौड़ना वह खूब जानता था और हमारे बीच दूरी बहुत धीरे-धीरे ही कम हो रही थी। मेरे कानों में हवा की सांय-सांय हो रही थी, दूर से कोमव कुछ चिल्ला रहा था, लेकिन माया की चीखों में उसकी आवाज़ डूब रही थी।

"बायें लो, बायें!" वह बड़े जोश में आकर चीख रही थी।

मैं बायें घूम गया, अवतरण पट्टी के तैयार भाग पर पहुंच गया, यहां दौड़ना ज्यादा आसान था और मैं उसके पास पहुंचने लगा। "नहीं, बच्चू, मैं तुझे बचकर नहीं जाने दूंगा," मैं मन ही मन कह रहा था, "नहीं जाने दूंगा।

5—1001

तुझे अपनी सारी करतूतों का जवाब देना होगा।" मैं एकटक उसके तेजी से काम करते पखौड़ों, झिलमिलाते नंगे पांवों और कंधों के पीछे से उठते भाप के टुकड़ों को देख रहा था। मैं उसके पास पहुंचता जा रहा था और खुश हो रहा था। पट्टी खत्म हो रही थी, लेकिन दलदल पर फैली सुरमई धुंध तक सौ कदम की दूरी रह गयी थी और मैं उसके पास पहुंचता जा रहा था।

दलदल के सिरे तक, मनहूस बौने सरकंडों के झुंडों तक पहुंचकर वह थम गया। कुछ क्षण तक वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रहा, फिर सिर घुमाकर उसने मेरी ओर देखा, मैंने एक बार फिर उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखें देखीं, जो निश्चल कतई नहीं थीं, उलटे अत्यंत सजीव थीं और मानो हंस रही थीं। अचानक वह उकडूं बैठ गया और घुटनों को बांहों में भरकर लुढ़कने लगा। मैं तो तुरंत समझ ही नहीं पाया कि हुआ क्या है। अभी भी यहां एक मानव खड़ा था—विचित्र मानव—शायद वह मानव था ही नहीं, लेकिन उसका रूप मानव जैसा था और अचानक वह ओझल हो गया, अथाह, अगम्य दलदल पर कोई बेतुका गोला लुढ़कता जा रहा था। लुढ़क भी कैसे रहा था! मैं तट तक पहुंच भी नहीं पाया कि कोहरे में वह ओझल हो गया, सुरमई चादर के पीछे से धीमी होती सरसराहट, छपाक और कर्णभेदी सीटी ही सुनायी दे रही थी।

माया पांव पटकती दौड़ आयी और हांफती हुई मेरे बगल में रुक गयी।

"निकल गया," खिसियाकर उसने कहा।

"निकल गया," मैं बोला।

कुछ क्षण तक हम कोहरे के मटमैले बादलों को देखते खड़े रहे। फिर माया ने माथे से पसीना पोंछा और मैंने पीछे मुड़कर देखा। हुं। हम भोंदू दौड़ रहे थे और अक्लमंद लोग खड़े देख रहे थे। यहां मैं और माया ही थे। कोमव

और वंडरहूज की छोटी-छोटी आकृतियां यान के पास नज़र आ रही थीं।

"अच्छी दौड़ लग गयी," माया ने भी यान की ओर देखते हुए कहा। "तीन किलोमीटर तो होंगे ही, कम नहीं क्या ख्याल है, कप्तान?"

"आपकी बात से सहमत हूं, कप्तान," मैंने जवाब दिया।

"सुनो," विचारमग्न माया बोली। "कहीं यह सब हमारा भ्रम तो नहीं है?"

मैंने उसके कंधों पर बांह रखी। उन्मुक्तता, स्वास्थ्य, उल्लास और निस्सीम उज्ज्वल परिप्रेक्ष्यों की भावना से मेरा हृदय परिपूर्ण हो रहा था।

"हे बालिका, तुम्हें इसकी क्या समझ!" हर्षविभोर होकर और ज़ोर-ज़ोर से उसे झकझोरते हुए मैं चिल्लाया। "क्या समझ है तुम्हें भ्रमों की! और कोई ज़रूरत नहीं कुछ समझने की। बस खुशी से जियो और कोई ऐसी-वैसी बात मत सोचो!"

माया सकपकायी सी मुझे टुकुर-टुकुर देख रही थी, मेरी बांहों से छूटने की कोशिश कर रही थी, मैंने एक बार फिर उसे झकझोरा ओर यान की ओर खींच ले चला।

"ठहरो," स्तब्ध माया हल्का प्रतिरोध कर रही थी। "यह तुम क्या कर रहे हो... छोड़ो भी मुझे—क्या लाड़ आया है?"

"चलो-चलो," मैं कह रहा था। "चलो, अभी डाक्टर म्वोगा का चहेता हमें डांट पिलायेगा, मेरा दिल कह रहा है, कि यह दौड़ हमने बेकार में ही लगायी, कोई ज़रूरत नहीं थी इसकी..."

माया एक झटके में मेरे बाहुपाश से निकल गयी, पल भर को खड़ी रही, फिर उकड़ूं बैठकर उसने सिर झुकाया और घुटनों को बांहों में भरकर आगे को की।

"नहीं," वह बोली और सीधी हो गयी, "यह मेरी समझ में नहीं आता।"

"कोई जरूरत नहीं है," मैंने कहा। "कोमव हमें सब कुछ समझा देगा। पहले डांट पिलायेगा—हमने तो उसे संपर्क स्थापित नहीं करने दिया—मगर फिर समझा देगा।..."

"सुनो, ठंड लग रही है!" माया बोली और उछलकर खड़ी हो गयी। "दौड़ें?"

और हम दौड़ चले। मेरी पहली उमंग शांत हो गयी थी, मैं सोचने लगा कि आखिर हुआ क्या है। जाहिर था कि इस ग्रह पर कोई रहता है! बड़े मानवाभ जीव रहते हैं, शायद, वे बुद्धिसंपन्न हैं, हो सकता है, सभ्य भी हों।...

"पपोव," दौड़ते-दौड़ते माया बोली, "क्या पता है यह कोई पांटावासी हो?"

"पांटावासी यहां कहां से आया?" मैंने हैरान होकर पूछा।

"क्या पता... हमें तो परियोजना के सभी ब्योरे मालूम नहीं हैं। हो सकता है, उन्हें यहां लाने का काम शुरू हो गया हो।"

"नहीं, नहीं," मैं बोला। "वह पांटावासी जैसा नहीं है। पांटावासी ऊंचे कद के हैं, उनकी त्वचा लाल है... और फिर वे तो वस्त्र धारण करते हैं, और यह बिल्कुल नंग-धड़ंग था।"

हैच के सामने हम रुके। मैंने माया को पहले अंदर जाने दिया।

हम दबे पांव रेडियोरूम में पहुंचे, मगर छिपे नहीं रह सके। हमारा इंतजार हो रहा था। कोमव पीठ पर हाथ बांधे रेडियो रूम के चक्कर लगा रहा था, वंडरहूज दूर कहीं नजरें टिकाये और ठोड़ी आगे निकाले अपने गलमुच्छे लपेट रहा था: दायां गलमुच्छा दायें हाथ की उंगली पर

और बायां बायें हाथ की उंगली पर। हमें देखकर कोमव थम गया, पर माया ने उसे बोलने नहीं दिया।

"निकल गया," कामकाजी लहजे में वह बोली। "दलदल के रास्ते भाग गया, सो भी बड़े अजीब ढंग से।"

"चुप रहिये," कोमव ने उसे टोक दिया।

"बस, अब बरसेगा," मैंने सोचा और मन ही मन जवाब देने को तैयार हो गया। लेकिन मेरा अनुमान गलत निकला। कोमव ने सब से बैठने को कहा, खुद भी बैठ गया और मुझसे कहा:

"पपोव, मैं आपकी बात सुन रहा हूं। सब कुछ सुनाते जाइये, छोटे से छोटे ब्योरे तक।"

मज़े की बात यह कि उसके मुंह से यह सुनकर मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। मुझे उसका ऐसा कहना बिल्कुल स्वाभाविक लगा। और मैंने सब कुछ बता दिया: कैसे सरसराहट सुनायी दी, गंध आयी, बच्चा रो रहा था, स्त्री चीख रही थी, कल शाम को कैसा विचित्र वार्तालाप मैंने सुना था और रात को काला प्रेत देखा था। माया मुंह बाये मेरी बातें सुन रही थी—कोमव एकटक मुझे देखता जा रहा था—उसकी सिकुड़ी आंखों में फिर से एकाग्रता और भावशून्यता थी, चेहरा पथरा गया लगता था, वह अपना निचला होंठ चबा रहा था, बीच-बीच में अपनी उंगलियां गूंथकर चटका रहा था। मेरी बात खत्म होने पर मौन छा गया। फिर कोमव ने पूछा:

"आपको पूरा यकीन है कि वह बच्चा ही था?"

"हां... लगता तो बिल्कुल ऐसे ही था..."

वंडरहूज़ ने ज़ोर से सांस छोड़ी और कुर्सी की बांह पर हाथ मारा।

"और तुम यह सब सहते रहे!" मिश्रित स्वर में माया बोली। "बेचारा पपोव!"

"मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं, पपोव..." वंडरहूज़

ने गंभीर स्वर में कहना शुरू किया, लेकिन कोमव ने उसे टोक दिया।

"और वे कंकड़?" उसने पूछा।

"कैसे कंकड़?" मैं समझा नहीं।

"कंकड़ कहां से आये थे?"

"निर्माण स्थली पर? साइबर उठा लाये होंगे। यहां कंकड़ों से क्या मतलब है?"

"साइबर कंकड़ कहां से ला सकते थे?"

"वो-ओ..." मैंने जवाब देना चाहा, पर दे न पाया। "वाकई, कहां से ले आये?"

"चारों ओर बालुई सागर तट है," कोमव ने कहना जारी रखा। "कहीं एक भी कंकड़-पत्थर नहीं है। साइबर निर्माण-स्थली छोड़कर कहीं नहीं गये थे। तो फिर पट्टी पर कंकड़ कहां से आये और टहनियां कहां से आयीं?" उसने हम पर नज़र डाली और मुस्करा दिया। "बेशक, यह केवल प्रश्नालंकार ही है। मैं आपको यह भी बता सकता हूं कि हमारे यान के पृष्ठभाग के पास ढेर सारे कंकड़ हैं, बड़े ही दिलचस्प ढंग के। यह भी बता सकता हूं... माफ़ कीजिये। पपोव, आपने सब कुछ बता दिया है? धन्यवाद। अब सुनिये, मेरे साथ क्या हुआ है।"

पता चला कि कोमव के भी दिन आसानी से नहीं कटे थे। हां, उसे कुछ दूसरे ढंग की परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा था—बुद्धि की परीक्षाओं से। इस ग्रह पर उतरने के दूसरे दिन झील में पांटा की मछलियां छोड़ते हुए उसका ध्यान कोई बीस क़दम दूर चमक रहे विचित्र लाल धब्बे की ओर गया, परंतु इससे पहले कि वह उसके पास जाता धब्बा फैलता हुआ विलीन हो गया। अगले दिन टीले नं० 12 की चोटी पर उसे मरी हुई मछली मिली, जो, प्रत्यक्षतः, पिछले रोज़ झील में छोड़ी गयी मछलियों में से एक थी। चौथे दिन सुबह उसकी नींद इस स्पष्ट अनुभूति के साथ टूटी कि केबिन में कोई पराया है। केबिन में कोई नहीं

था, पर कोमव को झिल्ली के फटने की छपाके जैसी आवाज़ साफ़ सुनायी दी। यान से निकलने पर उसने पास ही कंकड़ बिखरे पाये और निर्माण-स्थली पर भी कंकड़ और टहनियां पायीं। मेरे साथ बात करने पर उसके इस विचार की पुष्टि हो गयी कि यान के गिर्द कुछ गड़बड़ हो रही है। उसे तो अब यकीन हो गया था कि खोज दलों ने इस ग्रह पर कार्यरत कोई नितांत महत्त्वपूर्ण कारक नज़रंदाज़ कर दिया था, परंतु अपने इस दृढ़ विश्वास के कारण कि बुद्धिसंपन्न जीवन को न देख पाना असंभव है, वह कोई निर्णायक कदम उठाने से रुका रहा है। हां, इस बात के लिए उसने सभी आवश्यक कदम उठाये कि हमारे ग्रुप का कार्य क्षेत्र "कौतूहली निठल्लों" का निशाना न बन जाये। यही कारण था कि उसने विशेषज्ञ रिपोर्ट इस तरह लिखवाने की पूरी कोशिश की ताकि उससे लेशमात्र भी संदेह न उत्पन्न हो। उधर मेरी उत्तेजित-अवसादपूर्ण मनोदशा उसके इस आरंभिक निष्कर्ष की पूरी तरह पुष्टि करती थी कि अज्ञात जीव यान में घुसने में सक्षम हैं। वह इंतज़ार करने लगा कि कब कोई जीव अंदर आये और आखिर आज सुबह ऐसा अवसर आ ही गया।

"तो अब सारांश निकालें," कोमव बोला, मानो लैक्चर दे रहा हो। "इस ग्रह का कम से कम यह भाग, आरंभिक अन्वेषणों के परिणामों के विपरीत, बड़े मेरुदंडी जीवों से आवासित है, यह मानने के लिए पूरा आधार है कि ये जीव बुद्धिसंपन्न हैं। प्रत्यक्षतः, ये ट्रोगलोडाइट हैं, जो भूमिगत विवरों में रहना सीख गये हैं। हमने जो कुछ देखा है उससे पता चलता है कि स्थानीय निवासी शरीररचना की दृष्टि से मानव जैसा है, उसमें अनुकरण की प्रखर योग्यता है, साथ ही, शायद इसी से जुड़ी, यह क्षमता भी है कि वह रक्षात्मक-भ्रांतिजनक प्रेतच्छायाएं छोड़ता है। यहां मैं यह बताना चाहूंगा कि बड़े मेरुदंडी जीवों में ऐसी क्षमता अभी तक पंडोरा ग्रह के कुछ कृदंतकों में पायी गयी है, पृथ्वी

पर यह क्षमता मोलस्कों की कुछ प्रजातियों में ही पायी जाती है। अब मैं आपका ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहूंगा कि इस अमानवीय क्षमता के बावजूद यहां का निवासी न केवल शरीररचना, बल्कि शरीरक्रिया तथा अंशतः तंत्रिकातंत्र की दृष्टि से भी पृथ्वी के मानव के अत्यंत समीप है। मेरे पास कहने को और कुछ नहीं है।"

"क्या मतलब कुछ नहीं है?" मैं भयभीत होकर चिल्लाया। "मैंने जो आवाजें सुनी थीं? मेरा श्रुतिभ्रम था क्या वह सब?"

कोमव हौले से हंस दिया।

"शांत हो जाइये, पपोव," वह बोला। "आप बिल्कुल भले-चंगे हैं। आपकी 'आवाजें' आसानी से समझायी जा सकती हैं, यदि हम यह मान लें कि स्थानीय निवासी के स्वर यंत्र की संरचना हमारे जैसी है। स्वर यंत्र की सदृश्यता, साथ ही अनुकरण की विकसित योग्यता तथा अत्युन्नत स्वनिक स्मृति..."

"ठहरिये," माया बोली। "यह तो मेरी समझ में आता है कि वे हमारी बातें सुन सकते थे, परंतु वह नारी स्वर?"

कोमव ने सिर हिलाया।

"हां, यही अनुमान लगाया जा सकता है कि वे मृत्यु वेदना के साक्षी थे।"

माया ने आश्चर्य प्रकट किया और संदेह भरे स्वर में बुदबुदायी: "ज्यादा ही टेढ़ी व्याख्या है।"

"आप कोई और व्याख्या देकर दिखाइये," कोमव ने रूखे स्वर में कहा। "वैसे, शीघ्र ही हम, शायद, मृत अंतरिक्षनाविकों के नाम जान जायेंगे। यदि पायलट का नाम अलेक्सान्द्र था।.."

"अच्छा, ठीक है," मैं बोला, "पर वह बच्चे का रोना?"

"रोने की आवाज़ पहचानने में भला क्या भ्रम हो सकता है?"

कोमव ने नज़रें मुझ पर गड़ा दीं, उंगली से ऊपर होंठ कसकर दबाया और अचानक दबी-दबी आवाज़ में भौंका। हां, वह भौंका ही—और कोई शब्द मैं इसके लिए उपयुक्त नहीं समझता।

"यह क्या था?" कोमव ने पूछा। "कुत्ता?"

"लगा तो यही," मैंने सादर कहा।

"तो जान लीजिये, मैंने लेओनीदा ग्रह की एक बोली में एक वाक्य बोला था।"

मैं दंग रह गया। माया भी चकित थी। थोड़ी देर तक सब चुप बैठे रहे। निस्संदेह, सब कुछ स्पष्ट हो रहा था, सुसंगत था, परंतु... बेशक, यह सोचकर बड़ा अच्छा लग रहा था कि सारे भय पीछे रह गये हैं और हमारे ग्रुप को ही एक और मानवाभ नस्ल की खोज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परंतु साथ ही इसका अर्थ यह था कि हमारे भाग्य में निर्णायक परिवर्तन आ रहा है। और केवल हमारे भाग्य में ही नहीं। पहली बात, यह तो साफ़ नज़र आता था कि 'नूह' परियोजना बंद हो गयी। यह ग्रह खाली नहीं है, पांटावासियों के लिए कोई दूसरा ग्रह खोजना होगा। दूसरे, यदि यह पक्का पता चल गया कि स्थानीय निवासी बुद्धिसंपन्न हैं, तो हमें तुरंत ही यहां से चलता कर देंगे और हमारे स्थान पर संपर्क आयोग यहां आ जायेगा। ये सब बातें न केवल मेरे लिए, बल्कि दूसरों के लिए भी स्पष्ट थीं। वंडरहूज़ ने खिसियाकर अपने गलमुच्छे नीचे किये और बोला:

"ज़रूरी थोड़े ही है कि वे बुद्धिसंपन्न हों? मुझे तो इस बात का कोई आधार नहीं दिखता कि वे अनिवार्यतः बुद्धिसंपन्न ही हैं, क्या ख्याल है आपका, कोमव?"

"मैंने यह नहीं कहा कि वे अनिवार्यतः बुद्धिसंपन्न हैं,"

कोमव ने आपत्ति की। "मैंने तो बस इतना ही कहा है: यह मानने के लिए पूरा आधार है।"

"कैसा पूरा आधार है भला?" वंडरहूज़ अभी भी खिन्न हो रहा था। वह यहां से जाना नहीं चाहता था—उसकी यह आदत सभी जानते थे कि वह एक बार जहां जम जाता है वहां से हिलना नहीं चाहता। "कैसा पूरा आधार है? केवल बाह्य रूप ही..."

"बात केवल शरीररचना की नहीं है," कोमव ने कहा। "यान के पास कंकड़ एक निश्चित क्रम में फैले हुए हैं, ये कोई चिह्न हैं। अवतरण पट्टी पर कंकड़ और टहनियां... मैं शत प्रतिशत निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहना चाहता, परंतु यह सब आदिम संस्कृति के मानवाभों द्वारा संपर्क स्थापित करने के प्रयासों जैसा है। गुप्त टोह और साथ ही न जाने उपहार अथवा चेतावनी..."

"हां, लगता यही है," वंडरहूज़ बुदबुदाया और उदासीन हो गया।

फिर से खामोशी छा गयी। थोड़ी देर बाद माया ने हौले से पूछा:

"यह निष्कर्ष आपने कैसे निकाला है कि वे शरीरक्रिया और तंत्रिकातंत्र की दृष्टि से हमसे मिलते-जुलते हैं?"

कोमव ने प्रसन्नता से सिर हिलाया।

"यहां भी हमें परोक्ष साक्ष्य ही उपलब्ध हैं," उसने कहा। "परंतु वे काफ़ी वज़नी हैं। पहली बात, स्थानीय निवासी यान में घुस सकते हैं। यान उन्हें अंदर आने देता है। तुलना के लिए आपको बता दूं कि न तगोरवासी और न ही पांटावासी मनुष्य से अपनी विशाल समानता के बावजूद हैच की झिल्ली पार कर सकते हैं। उनके सामने हैच नहीं खुलता..."

इस पर मैंने अपना माथा ठोंका।

"धत, तेरे की! मतलब, मेरे साइबर बिल्कुल ठीक-ठाक थे। बस, ये स्थानीय निवासी शायद टॉम के

सामने दौड़ते रहे होंगे और वह रुक जाता था ताकि मनुष्य उसके पांवों तले न आ जाये... और फिर उन्होंने शायद टॉम को जीव माना होगा, उसके सामने हाथ हिलाये होंगे और संयोगवश यह संकेत दे दिया होगा: 'खतरा! तुरंत यान में जाओ!' संकेत बहुत सीधा-सादा है। "मैंने संकेत दिखाया।" सो मेरे जवान यान की ओर दौड़ पड़े... हां, यही हुआ होगा... मैंने तो अभी अपनी आंखों से देखा है: टॉम ने स्थानीय निवासी को मानव समझा था।"

"क्या मतलब?" कोमव ने जल्दी से पूछा।

"मतलब यह कि स्थानीय निवासी जब टॉम के दृष्टि क्षेत्र में पहुंचा तो टॉम ने संकेत दिया: 'कोई आदेश?'।"

"यह तो आपने बड़े पते की बात नोट की है," कोमव बोला।

वंडरहूज़ ने भारी सांस ली।

"हां," माया बोली। "'नूह' परियोजना खत्म। अफ़सोस।"

"अब क्या होगा?" मैंने पूछा, लेकिन मेरा प्रश्न किसी की ओर संबोधित नहीं था।

कोई जवाब नहीं मिला। कोमव ने अपनी टिप्पणियों के कागज़ उठाये, उनके नीचे छोटा सा टेप रिकार्डर था।

"माफ़ कीजिये," मनमोहक मुस्कान के साथ वह बोला। "समय न गंवाने के लिए मैंने हमारी यह बहस टेप कर ली है। सटीक प्रश्न प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद। पपोव, कृपया यह सब कोडित करके अर्जेंट संवेग में सीधे केंद्र को भेज दीजिये और एक कॉपी बेस कैंप को।"

"बेचारा सीदोरोव," वंडरहूज़ ने हौले से कहा। कोमव ने पलांश को उस पर नजर डाली और फिर से कागज़ देखने लगा।

माया ने कुर्सी पीछे सरकायी।

"मेरी क्वार्टरमास्टरी तो अब खत्म," वह बोली। "चलके सामान बटोरती हूं।"

"एक मिनट," कोमव ने उसे रोका। "यहां पूछा गया है कि अब क्या होगा। उत्तर देता हूं। संपर्क आयोग के पूर्णाधिकारसंपन्न प्रतिनिधि की हैसियत से मैं कमान अपने हाथ में ले रहा हूं। हमारे कार्य क्षेत्र को संभाव्य संपर्क का घोषित करता हूं। जैकब, आप कृपया तत्संबंधी रेडियो संदेश भेज दीजिये। 'नूह' परियोजना के सभी काम बंद किये जाते हैं। रोबोटों को बंद करके यान के माल कक्ष में ले आना है। मेरी अनुमति पाकर ही कोई यान से बाहर निकलेगा। आज के 'शिकार' से शायद संपर्क के लिए निश्चित कठिनाइयां पैदा हो चुकी हैं। किसी तरह की नयी गलतफ़हमी नहीं होनी चाहिए। माया, आप ग्लाइडर हैंगर में ले आइये। पपोव, आप अपने साइबरों को देखिये..." उसने उंगली उठायी। "मगर पहले हमारी बातचीत की टेप भेज दीजिये..." वह मुस्कराया, कुछ और कहना चाहता था, परंतु तभी रेडियो का विकोडित्र चलने लगा।

वंडरहूज़ ने अपना लंबा हाथ आगे बढ़ाकर रिसेप्शन पॉकेट में से रेडियो संदेश का कार्ड निकाला, सरसरी नज़र से देखा और उसकी भौंहें तन गयीं।

"यह बात तो बिल्कुल समझ में नहीं आती," वह बुदबुदाया, कार्ड मेज़ पर फेंककर रेडियो रूम का चक्कर लगाने लगा।

मैंने कार्ड उठाया। मेरी पीठ पीछे उत्तेजित माया सांस ले रही थी। रेडियो संदेश सचमुच ही अप्रत्याशित था।

'अर्जेंट। शून्य-संपर्क। केंद्र, संपर्क आयोग, गर्बोव्स्की—'नूह' बेस कैंप के प्रधान सीदोरोव को। परियोजना का सारा काम निर्विलंब रोक दें। कर्मियों और साज़-सामान की संभाव्य वापसी की तैयारी कर लें। अनुपूर्ति—संपर्क आयोग के प्रतिनिधि कोमव को। ई० आर०-2 के क्षेत्र को संभाव्य संपर्क क्षेत्र घोषित करता हूं। उत्तरदायी अधिकारी आपको नियुक्त किया जाता है।'

"भई वाह!" माया ने मुक्त कंठ से कहा। "क्या कहने हैं गर्बोव्स्की के!"

कोमव ठिठका, भौंहें सिकोड़कर हमें देखने लगा।

"कृपया सब लोग मेरे आदेशों का पालन करें। जैकब, जरा हमारी विशेषज्ञ रिपोर्ट की कॉपी निकाल दीजिये।"

वे दोनों कॉपी के अध्ययन में लीन हो गये। माया ग्लाइडर को यान के अंदर रखने गयी, मैं वायरलैस सेट के पास बैठकर हमारी बातचीत कोडित करने लगा। परंतु दो मिनट भी न बीते थे कि विकोडित्र फिर से चलने लगा। वंडरहूज़ को परे धकेलकर कोमव सेट की ओर लपका। मेरे कंधे के ऊपर झुककर वह बड़ी उत्सुकता से कार्ड पर अंकित हो रही पंक्तियां पढ़ रहा था।

'अर्जेंट, शून्य-संबंध। केन्द्र, संपर्क आयोग, बादेर—ई० आर०-2 के कप्तान वंडरहूज़ को। तुरंत पुष्टि कीजिये कि आपको ध्वस्त यान पर दो, पुनश्च:, दो शव मिले हैं और आपकी रिपोर्ट में वर्णित लॉग बुक की दशा की पुष्टि कीजिये।'

कोमव ने कार्ड वंडरहूज़ को पकड़ा दिया।

"तो, यह बात है," वह बोला। "ठीक..." वह मेरी ओर मुड़ा। "पपोव, आप इस वक्त क्या कर रहे हैं?"

"कोडित कर रहा हूं," निरुत्साह स्वर में मैं बोला। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"टेप रिकार्डर मुझे दीजिये," वह बोला। "अभी नहीं भेजेंगे।" उसने टेप रिकार्डर अपनी जेब में रखकर फ़्लैप का बटन बंद कर लिया। "हां, तो, जैकब। जो पूछा गया है उसकी पुष्टि कर दीजिये। और फिर, मेरा आपसे एक अनुरोध होगा... आप यह सब मुझसे ज्यादा अच्छी तरह समझते हैं। जरा मेहरबानी करके हमारी फ़िल्म लाइब्रेरी को छानिये और लॉग बुकों के बारे में सारे अधिकृत दस्तावेज़ देख डालिये।"

"लॉग बुकों के बारे में मुझे सब कुछ जबानी याद

है," वंडरहूज के स्वर में असंतोष था। "आप यह बताइये कि आप जानना क्या चाहते हैं।"

"मैं खुद कुछ ठीक-ठीक नहीं जानता। मन में सवाल यह उठ रहा है कि लॉग बुक संयोगवश मिट गयी या जान-बूझकर मिटायी गयी। यदि जान-बूझकर तो क्यों। आप देख रहे हैं बादेर को भी यही सवाल कुरेद रहा है। आलस मत कीजिये। कोई नियम तो होंगे जिनमें लॉग बुक नष्ट कर देने का प्रावधान होगा।"

"कोई नियम-वियम नहीं हैं ऐसे," वंडरहूज बड़बड़ाया, लेकिन फिर भी कोमव का अनुरोध पूरा करने चला गया।

कोमव केंद्र को जवाब लिखने बैठा। मैं इस बात पर दिमाग लड़ा रहा था कि आखिर हो क्या रहा है, ऐसी हाय तौबा क्यों मच गयी है और रिपोर्ट के एकदम सुस्पष्ट सूत्रों पर केंद्र को कोई संदेह कैसे हुआ। आखिर वे यह तो नहीं सोच सकते थे कि हम किसी मूलनिवासी को मनुष्य समझ बैठे हैं और इसलिए एक की जगह दो लाशें बता रहे हैं। और फिर गर्बोव्स्की कैसे यह भांप गया कि यहां क्या हो रहा है? मेरी यह दिमागी उथल-पुथल निष्फल थी, उदास मन से मैं मॉनिटर को देख रहा था, जहां सब कुछ इतना स्पष्ट और बोधगम्य था। मन में यह कटु विचार आया कि मंदबुद्धि व्यक्ति में रोबोट के साथ एक दुखद समानता होती है। अब, मुझे ही लीजिये, मैं यहां बैठा आदेशों का पालन कर रहा हूं: मुझसे कहा कोडित कर दो मैं कोडित करने लगा, बंद करने को कहा मैंने बंद कर दिया, परंतु क्या हो रहा है, किसलिए ऐसे आदेश दिये जा रहे हैं, इन सब का अंत क्या होगा—कुछ नहीं समझ रहा। बिल्कुल टॉम की ही भांति: इस वक्त वह काम में जुटा हुआ है, मेरे आदेशों का अच्छी से अच्छी तरह पालन करने की कोशिश कर रहा है और उसे यह गुमान तक नहीं कि दस मिनट बाद मैं आकर उसे दूसरे साइबरों के

साथ यान के पेटे में बंद कर दूंगा, उसकी सारी मेहनत बेकार जायेगी और खुद उसकी भी कोई जरूरत नहीं होगी।

कोमव ने पुष्टि पत्र मुझे दिया, मैंने उसे कोडित करके भेज दिया, अपने कंट्रोल डेस्क पर बैठना चाहता था कि तभी बेस कैम्प से कॉल की घंटी बजी।

"ई० आर०-2?" शांत स्वर ने पूछा। "मैं सीदोरोव बोल रहा हूं!"

"ई० आर०-2 सुन रहा है!" मैंने तुरंत उत्तर दिया। "मैं साइबर टेक्नीशियन पपोव बोल रहा हूं। जी, आप किससे बात करना चाहते हैं?"

"कोमव को बुला दीजिये।"

कोमव बगल की कुर्सी पर बैठा हुआ था।

"मैं सुन रहा हूं, मित्र," वह बोला।

"क्या हो गया तुम्हारे यहां?" सीदोरोव ने पूछा।

"मूलनिवासी," कोमव ने जरा रुककर उत्तर दिया।

"जरा विस्तार से नहीं बताओगे?" सीदोरोव बोला।

"देखो, मित्र," कोमव ने कहा, "सबसे पहले तो तुम यह जान लो कि गर्बोव्स्की को मूलनिवासियों का पता कैसे चला—यह मैं नहीं जानता, मेरी समझ में यह बात जरा भी नहीं आती। यहां हम खुद दो घंटे पहले ही समझ पाये हैं कि मामला क्या है। मैंने तुम्हारे लिए सूचना तैयार कर ली थी, उसे कोडित करने लगा था, पर तभी सब कुछ उलझ-पुलझ गया, सो अब मुझे तुमसे विनती करनी होगी कि थोड़ा और धीरज रखो। बादेर के संदेश से एक विचार पैदा हुआ है।... बस, जरा धीरज रखो।"

"समझ गया," सीदोरोव बोला। "पर मूलनिवासियों का अस्तित्व तो निर्विवाद है न?"

"एकदम," कोमव ने कहा।

सीदोरोव की ठंडी आह सुनायी दी।

"अच्छा, तो क्या करें," वह बोला। "सब कुछ नये सिरे से शुरू करना होगा।"

"मुझे बहुत खेद है, मित्र, कि ऐसे हो गया है," कोमव बोला। "ईमान कसम, बहुत खेद है।"

"कोई बात नहीं," सीदोरोव ने कहा। "झेल लेंगे यह भी।" वह थोड़ी देर चुप रहा। "आगे क्या करने का इरादा है? आयोग की प्रतीक्षा करोगे?"

"नहीं। आज ही शुरू कर दूंगा। मेरी एक प्रार्थना है: ई० आर०-2 के ग्रुप को मेरे पास ही रहने दो।"

"जरूर," सीदोरोव बोला। "अच्छा, तुम्हारा और समय नहीं लूंगा। मेरे लायक कुछ हो..."

"धन्यवाद, मित्र। तुम दुखी मत होओ, सब ठीक हो जायेगा।"

"उम्मीद से आदमी जीता है।"

उन्होंने विदा ली। कोमव अपना अंगूठा दांतों में दबाये थोड़ी देर बैठा रहा, फिर न जाने क्यों एक खीझ भरी नजर मुझ पर डाली और रेडियो रूम के चक्कर लगाने लगा। मैं समझ रहा था कि मामला क्या है। कोमव और सीदोरोव पुराने दोस्त थे, इकट्ठे पढ़े थे, कहीं पर इकट्ठे काम भी करते रहे थे, परंतु कोमव का सदा भाग्य साथ देता रहा था, जबकि सीदोरोव को उसकी पीठ पीछे अभागा कहा जाता था। मैं नहीं जानता कि ऐसा कैसे हुआ। जो भी हो, इस क्षण कोमव बहुत अटपटा महसूस कर रहा होगा। ऊपर से गर्बोव्स्की का यह तार। इससे यह सोचा जा सकता था कि कोमव ने सीदोरोव को कुछ बताये बिना ही सीधे केंद्र को सूचना भेज दी थी।...

चुपके से अपने कंट्रोल डेस्क पर जाकर मैंने साइबरों को स्विच ऑफ़ कर दिया। कोमव अपनी मेज़ पर बैठा नाखून कुतर रहा था और मेज़ पर फैले कागज़ों को घूर रहा था। मैंने बाहर जाने की अनुमति मांगी।

"किसलिए?" वह उबलनेवाला था, पर तभी संभल गया: "हां, साइबर... जाइये, जाइये। पर काम खत्म होते ही तुरंत लौट आइयेगा।"

मैं अपने साइबरों को यान के पेटे में ले गया, उन्हें निष्क्रिय कर दिया और बांध भी दिया ताकि अकस्मात उड़ान भरनी पड़े तो वे गिरें नहीं। बाहर आकर थोड़ी देर तक हैच के पास खड़ा खाली हो गयी निर्माण-स्थली, अनिर्मित मौसम केंद्र की सफ़ेद दीवारों और आइसबर्ग को देखता रहा, जो पहले की ही भांति आदर्श और उदासीन था।... अब यह ग्रह मुझे कुछ दूसरा ही लग रहा था। उसमें कुछ बदल गया था। इस कोहरे में, बौने झुरमुटों, बैंगनी से हिम के धब्बोंवाली चट्टान-शृंखलाओं में कोई सार्थकता आ गयी थी। नीरवता तो पहले जैसी ही थी, पर शून्य नहीं रहा था, और यह अच्छी बात थी।

मैं यान में लौट आया। डाइनिंग रूम में क्रुद्ध वंडरहूज़ फ़िल्म लाइब्रेरी छान रहा था, मैं भावविभोर हो रहा था, मन का गुबार निकालने माया के पास चला गया। माया ने सारे केबिन में बड़े-बड़े टुकड़ों को जोड़कर बनाया चादरनुमा विशाल मानचित्र फैला रखा था, आंख पर मैग्नीफ़ाइंग लैंस लगाये उस पर लेटी हुई थी। उसने मेरी ओर मुड़कर देखा तक नहीं।

"कुछ समझ में नहीं आता," वह गुस्से में बोली। "यहां रहने की कोई जगह ही नहीं है। ज़रा-बहुत भी वासयोग्य जितने स्थल थे सभी क़ी तो हमने जांच की है। आखिर वे दलदल में तो नहीं रहते होंगे!.."

"क्यों नहीं?" मैंने बैठते हुए पूछा।

माया पलाथी मारकर बैठ गयी और लैंस में से टुकुर-टुकुर देखने लगी।

"मानवाभ जीव दलदल में नहीं जी सकते," उसने बचकानी तर्क दिया।

"क्यों?" मैंने आपत्ति की। "हमारे यहां पृथ्वी पर कभी ऐसे कबीले थे जो झीलों पर रहते थे, बल्लियों पर मकान बनाकर..."

6--1001

"पर इन दलदलों में कहीं कुछ बना नज़र नहीं आता..."

"क्या पता, वे जल के नीचे रहते हों, जैसे जल मकड़ी हवा के बुलबुले के भीतर रहती है?"

माया थोड़ी देर सोचती रही।

"नहीं," वह खेदमय स्वर में बोली। "ऐसा होता तो वह कीचड़ से सना होता, यान में कीचड़ ले आता।"

"हो सकता है कि उनकी त्वचा पर जलरोधी झिल्ली हो?... देखा था तुमने कैसे वह चमक रहा था? और हमसे बचकर भी तो कहां गया था? दलदल पर लुढ़कने का उसका वह ढंग किसलिए था?"

हमारी बहस होने लगी। मेरी अनेकानेक प्राक्कल्पनाओं के दबाव में माया को स्वीकार करना पड़ा कि सिद्धांततः यह बिल्कुल संभव है कि यहां के मूलनिवासी जलगत बुलबुलों में रहते हों, हालांकि उसकी अपनी राय में कोमव का यह कहना सही है कि वे गुफ़ावासी हैं। "काश, तुमने देखा होता वहां कैसे दर्रे हैं," वह बोली। "ओह, इस वक्त वहां जा पाती..." वह मानचित्र पर वह स्थान दिखाने लगी। मानचित्र पर भी भूदृश्य मनहूस प्रतीत होता था: शुरू में टीलों की कतार, जिन पर बौने पेड़ उगे हुए हैं, फिर अथाह गर्तों से घिरे गिरीपाद और अंततः स्वयं पर्वत श्रृंखला, चिर हिम से ढंकी और इस श्रृंखला के पार पथरीला मैदान, नीरस, निष्प्राण, गहरी दरारों से चिरा हुआ। यह आद्योपरांत शीतग्रस्त संसार था, खनिजों के सूचीरूपी क्रिस्टलों से भरा। इन पथरीली सुइयों पर नंगे पांव चलने के विचार मात्र से ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

"कोई ऐसी बात नहीं है," माया ने मुझे समझाया। "मैं तुम्हें इस स्थान के अवरक्त चित्र दिखा सकती हूं, इस पठार तले भूगर्भी उष्मा के विशाल क्षेत्र हैं, सो यदि वे गुफ़ाओं में रहते हैं तो कम से कम ठंड उन्हें नहीं सताती।" मैंने पलटते ही पूछा: पर वे खाते क्या होंगे?

"अगर गुफ़ावासी लोग हैं," माया बोली, "तो गुफ़ावासी जीव-जंतु भी हो सकते हैं। इसके अलावा वहां प्रस्तर तृण, खुंबियां आदि हो सकते हैं और ऐसी वनस्पतियों की भी तो कल्पना की जा सकती है जो अवरक्त किरणों से प्रकाश-संश्लेषण करती हों।" मैंने इस जीवन की कल्पना की, हम जिसे सामान्य जीवन मानते हैं उसकी एक दयनीय प्रतिछाया ही लगा यह मुझे, जीवन नहीं, बल्कि आस्तित्व के लिए अनवरत संघर्ष, छापों की भयावह एकरूपता—और मुझे मूलनिवासियों पर बड़ी दया आयी। और मैंने ऐलान किया कि इस नस्ल की हितचिंता करना भी एक उदात्त कार्यभार है। माया ने आपत्ति की कि यहां बात बिल्कुल दूसरी है, कि पांटावासी तो हमारे बिना विलुप्त हो जाते, उनका इतिहास समाप्त हो जाता; परंतु यहां के वासियों के बारे में कौन जाने उन्हें हमारी ज़रूरत है भी या नहीं। क्या पता वे हमारे बिना ही फल-फूल रहे हों।

यह हमारी पुरानी बहस थी। मैं यह मानता था कि मानवजाति ने पर्याप्त ज्ञान संचित कर लिया है और वह यह आंक सकती है कि कैसा विकास ऐतिहासिकतः सार्थक है, कैसा नहीं। माया को इस पर संदेह था। उसका कहना था कि हम बहुत कम जानते हैं। अब तक हमने बारह बुद्धिसंपन्न नस्लों को जान लिया है, जिनमें तीन अमानवाभ हैं। इन अमानवाभों के साथ हमारे क्या संबंध हैं, यह तो शायद स्वयं गर्बोव्स्की भी नहीं बता सकता: क्या हमने उनके साथ संपर्क स्थापित कर लिया है या नहीं किया, यदि कर लिया है तो क्या यह परस्पर सहमति से हुआ है, या फिर हमने अपने को उन पर थोपा है, हो सकता है वे हमें अपना बुद्धि-बंधु समझते ही न हों, बल्कि प्रकृति की कोई विरली परिघटना, जैसे कि कोई असाधारण उल्का पिंड मानते हों। मानवाभों के साथ मामला साफ़ है: नौ मानवाभ नस्लों में से केवल तीन ही हमारे साथ कोई वास्ता रखने को राजी हुई हैं, उनमें भी वे जो

लेओनिदावासी हैं, वे अपनी सूचना तो हमें सहर्ष देते हैं, लेकिन हम पृथ्वीवालों की सूचना लेने से विनम्रतापूर्वक, किंतु दृढ़ता से इंकार कर देते हैं। अब यह बात एकदम स्पष्ट है कि जैवाभासी यंत्र पालतू जानवरों से कहीं अधिक किफ़ायती है, लेकिन लेओनिदावासी उनसे इंकार करते हैं। क्यों? इस बात पर हम बहस करने लगे, उसमें उलझ गये और पता भी नहीं चला कि हम दोनों एक दूसरे के दृष्टिकोण पर आ गये (माया और मेरे साथ अक्सर ऐसा होता है) और आखिर माया बोली कि यह सब बकवास है।

"बात इसकी नहीं है। यह बताओ तुम यह समझते हो कि किसी भी संपर्क का प्रयोजन क्या है?" उसने पूछा। "क्या तुम यह समझते हो कि क्यों मानवजाति दो सौ साल से दूसरे बुद्धिसंपन्न प्राणियों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। इसमें सफलता मिलने पर खुश होती है और जब कुछ हाथ नहीं लगता तो दुखी होती है?"

बेशक, मैं यह सब समझता था।

"हम बुद्धि का अध्ययन कर रहे हैं," मैंने कहा। "प्रकृति के विकास के सर्वोच्च उत्पाद का अध्ययन-अन्वेषण कर रहे हैं।"

"मोटे तौर पर कहा जाये तो यह सही है," माया बोली। "पर ये केवल शब्द ही हैं, क्योंकि वास्तव में हमारी रुचि बुद्धि की समस्या में नहीं, मानव बुद्धि की समस्या में है, दूसरे शब्दों में कहें तो हमारी रुचि सर्वप्रथम स्वयं अपने आप में ही है। पचास हज़ार साल से हम यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि हम हैं क्या। लेकिन भीतर से देखते हुए इस सवाल का जवाब नहीं पाया जा सकता, वैसे ही जैसे आदमी अपने बाल पकड़कर अपने आप को नहीं उठा सकता। हमें बाहर से, दूसरों की, बिल्कुल परायी नजरों से अपने आप को देखना है..."

"हुं, क्या जरूरत है इसकी?" मैंने जरा रोब दिखाते हुए पूछा।

"यह कि मानवजाति पृथ्वी की न रहकर, पूरी मंदाकिनी की बन रही है। अच्छा यह बताओ तुम सौ साल बाद मानवजाति की किस रूप में कल्पना करते हो?"

"किस रूप में कल्पना करता हूं?" मैंने कंधे उचकाये। "वैसे है जैसे तुम... जैव क्रांति निष्पन्न हो जायेगी, मंदाकिनी की सीमाएं पार कर ली जायेंगी, शून्य-जगत में पहुंचेगी... संपर्क दृष्टि का विस्तार होगा, पी-साराहरणों की सिद्धि होगी..."

"मैं यह नहीं पूछ रही कि मानवजाति की उपलब्धियां कैसी होंगी। मैं यह पूछ रही हूं कि सौ साल बाद स्वयं मानवजाति कैसी होगी?"

मैं आंखें फाड़े उसे देखता रह गया। मुझे दोनों बातों में कोई अंतर नहीं दीख रहा था। माया विजय-गर्व से परिपूर्ण मुझे देख रही थी।

"कोमव के विचारों की बात सुनी है?" उसने पूछा। "ऊर्ध्व प्रगति इत्यादि।"

"ऊर्ध्व प्रगति?" मुझे कुछ याद सा आया। "ठहरो-ठहरो... यह वो वोरोविक, मिकावा... का सिद्धांत है न?"

वह मेज के दराज में कुछ ढूंढ़ने लगी।

"तुम तब बार में अपनी तान्या के साथ डांस कर रहे थे, उधर कोमव ने लाइब्रेरी में नौजवानों को जमा किया था... लो!" उसने क्रिस्टलफ़ोन मेरी ओर बढ़ा दिया। "सुनो।"

मैंने बिना किसी उत्साह के क्रिस्टलफ़ोन कान पर लगाया और सुनने लगा। यह कोमव का कोई लैक्चर सा था, रिकार्डिंग बीच से शुरू हुई थी। कोमव धीरे-धीरे, सरल, सुबोध ढंग से बोल रहा था, शायद श्रोताओं के स्तर को ध्यान में रखते हुए। वह अनेक उदाहरण दे रहा

था, चुटकियां ले रहा था। उसके लेक्चर का सारांश यह था।

पृथ्वी के मानव ने उसके सम्मुख प्रस्तुत सभी कार्यभार पूरे कर लिये हैं और वह मंदाकिनी का मानव बन रहा है। एक लाख साल तक मानवजाति तंग गुफ़ा में बाधाओं, झंखाड़ों को पार करती बढ़ती रही है, भू-स्खलनों में नष्ट होती, बंद रास्तों में पहुंचती रही है, परंतु उसके आगे सदा नीलिमा थी, प्रकाश था, लक्ष्य था, अब हम इस दर्रे में से निकलकर नीले आकाश तले पहुंच गये हैं और मैदान में फैल गये हैं। हां, यह मैदान विराट है, यहां फैलने के लिए निस्सीम विस्तार है। परंतु अब हम यह देख रहे हैं कि यह मैदान है और उसके ऊपर आकाश है। एक नया आयाम। हां, इस मैदान पर हमें अच्छा लगता है, हम पी-साराहरणों की जी भरकर सिद्धि कर सकते हैं। और लगता है कोई भी शक्ति हमें ऊपर, नये आयाम में नहीं धकेल रही... परंतु मंदाकिनी का मानव मंदाकिनी के विस्तार में पृथ्वी के नियमों के अनुसार जी रहा मानव मात्र नहीं है। यह उससे अधिक कुछ है। उसके अस्तित्व के नियम भिन्न हैं, अस्तित्व के ध्येय भिन्न हैं। परंतु हम न इन नियमों को जानते हैं, न ही इन ध्येयों को। सो, सारतः, बात मंदाकिनी के मानव के आदर्शों को निरूपित करने की है। पृथ्वी के मानव का आदर्श सहस्रों वर्षों के दौरान, पूर्वजों के अनुभव तथा हमारे ग्रह के प्राणियों के नाना रूपों के अनुभव के आधार पर बना था। प्रत्यक्षतः, मंदाकिनी के मानव का आदर्श मंदाकिनी में जीवन के रूपों के अनुभव के आधार पर, मंदाकिनी में विभिन्न बुद्धिसंपन्न नस्लों के इतिहास के अनुभव के आधार पर बनना चाहिए। परंतु फ़िलहाल हम यह भी नहीं जानते कि इस समस्या का समाधान कैसे खोजा जाये, जबकि हमें यह समाधान पाना है, सो भी इस तरह कि संभाव्य गल्तियों और क्षतियों की संख्या न्यूनतम हो। मानवजाति ने कभी भी अपने सम्मुख

ऐसे कार्यभार नहीं रखे हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए वह तैयार न हो गयी हो। यह बिल्कुल सही है, परंतु यही बात तो पीड़ादायक है..."

रिकार्डिंग खत्म भी बीच में ही हो गयी।

सच कहा जाये तो यह सब मेरे पल्ले नहीं पड़ा। यह मंदाकिनी के आदर्श की बात कहां से आ गयी? मुझे तो लगता है कि अंतरिक्ष में लोग ज़रा भी मंदाकिनी के नहीं बन जाते। उलटे, मैं तो कहूंगा कि वे अंतरिक्ष में अपने साथ पृथ्वी को ले जाते हैं, पार्थिव आराम, पार्थिव मानक, पार्थिव नैतिकता। यहां तक कि मेरे लिए और मेरे सभी परिचितों के लिए भी भविष्य का आदर्श हमारा नन्हा ग्रह ही है, जो मंदाकिनी के छोरों तक फैल जाये और फिर शायद इसकी सीमाओं को भी लांघ जाये। मैं माया को अपने ये सब विचार बताने लगा, पर तभी हमारा ध्यान इस बात पर गया कि केबिन में वंडरहूज़ खड़ा है और शायद काफ़ी देर से खड़ा है। वह दीवार से पीठ टिकाये खड़ा था, अपने गलमुच्छे नोच रहा था और चेहरे पर ऊंट जैसा विचारमग्न-अन्यमनस्कता का भाव लिये था। मैंने उठकर कुर्सी उसकी ओर बढ़ायी।

"धन्यवाद," वंडरहूज़ बोला। "मैं खड़ा रहना ही पसंद करूंगा।"

"आपकी इस बारे में क्या राय है?" माया ने जुझारू लहजे में पूछा।

"किस बारे में?"

"ऊर्ध्व प्रगति के बारे में।"

वंडरहूज़ थोड़ी देर चुप रहा, फिर एक आह भरकर बोला:

"कोई नहीं जानता कि जल की खोज किसने की थी, मगर मछलियों ने हरगिज़ नहीं।"

हम माथे पर बल डालकर सोच में पड़ गये। फिर माया का चेहरा खिल उठा, उंगली उठाकर वह बोली:

"वाह!"

"मेरा विचार नहीं है," उदासीन स्वर में वंडरहूज़ ने आपत्ति की। "एक पुरानी सूक्ति है। बहुत पहले पढ़ी थी, अच्छी लगी, पर उद्धृत करने का कभी अवसर नहीं आया।" वह पल भर को चुप रहा, फिर बोला। "लॉग बुक की बात। ज़रा सोचिये तो ऐसा नियम था।"

"कैसी लॉग बुक?" माया ने पूछा। "लॉग बुक बीच में कहां से आ गयी?"

"कोमव ने लॉग बुक मिटाने के नियम ढूंढ़ने को कहा था," उदास स्वर में वंडरहूज़ ने समझाया।

"तो?" हम दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

वंडरहूज़ फिर थोड़ी देर चुप रहा, आखिर उसने हाथ झटका।

"कैसी शर्मिंदगी की बात है," वह बोला। "वाकई, ऐसा नियम है, या यों कहिये कि था। पुरानी नियमावली में। नयी में नहीं है। मुझे कैसे मालूम होता। कोई इतिहासकार तो हूं नहीं..."

उसने लंबा मौन धारण कर लिया। माया बेचैन होने लगी।

"हां," आखिर वह बोला। "नियम कहता है यदि किसी अज्ञात ग्रह पर, जहां बुद्धिसंपन्न जीवों—अमानवाभों या मशीनी सभ्यता के मानवाभों का वास हो, तुम्हारा यान दुर्घटनाग्रस्त हो जाये, तो तुम्हें अंतरिक्षनाविकी के सभी मानचित्र और लॉग बुकें नष्ट कर देनी चाहिए।"

मैंने और माया ने एक दूसरे की ओर देखा।

"'पेलिकन' का बेचारा कमांडर पुराने नियम अच्छी तरह जानता था," वंडरहूज़ कहता जा रहा था। "यह नियम, कुछ नहीं तो, दो सौ साल पुराना है। उन दिनों बनाया गया था, जब अंतरतारकीय उड़ानें आरंभ ही हुई थीं। दिमाग की उपज ही था यह नियम—सभी संभव स्थितियों को ध्यान में रखने के ख्याल से ही गढ़ा गया था।

पर सभी बातों का पूर्वानुमान भला लग सकता है?" उसने उसांस ली। "बेशक, हम यह भांप सकते थे कि लॉग बुक के साथ ऐसा क्यों हुआ। सो, कोमव भांप गया... जानते हैं, मैंने जब उसे नियम की बात बतायी तो प्रतिक्रिया क्या थी?"

"नहीं," मैं बोला। "क्या रही?"

"उसने बस सिर हिला दिया और दूसरे काम में लग गया," माया ने कहा।

वंडरहूज़ ने प्रशंसा भरी नज़रों से उसे देखा।

"बिल्कुल सही!" वह बोला। "उसने यही किया, सिर हिलाया और काम में लग गया। उसकी जगह मैं होता तो सारा दिन खुश होता रहता कि मुझमें ऐसी दूरदृष्टि है।"

"तो, यह बात क्या बन रही है?" माया बोली। "या अमानवाभ, या मानवाभ, जो मशीनी सभ्यता की अवस्था में हैं। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। तुम समझ रहे हो?"

मुझे माया का यह अंदाज़ बड़ा मज़ेदार लगता है जब वह बड़े गर्व से कहती है कि कुछ नहीं समझ रही। मैं भी अक्सर यही चाल चलता हूं।

"साइकिलों पर चढ़कर वे 'पेलिकन' तक पहुंचे थे," मैं बोला।

माया ने अधीरता से हाथ झटक दिया।

"मशीनी सभ्यता यहां नहीं है," वह बुदबुदायी। "अमानवाभ भी नहीं हैं..."

इंटरकोम से कोमव की आवाज़ आयी:

"वंडरहूज़, माया, पपोव। कृपया रेडियो रूम में पधारें।"

"लो, शुरू हो गया!" उछलकर खड़े होते हुए माया बोली।

हम तीनों इकट्ठे ही रेडियो रूम में घुसे। कोमव मेज़ के पास खड़ा था और पोर्टेबल ट्रांसलेटर को प्लास्टिक केस में

रख रहा था। स्विचों की स्थिति से लगता था कि ट्रांसलेटर यान के कम्प्यूटर से जुड़ा हुआ है। कोमव के चेहरे पर असाधारण चिंता का कोई बहुत ही मानवीय भाव था, नीरस एकाग्रता का उसका वह खास अपना ही भाव नहीं था, जिससे सब आजिज़ आ चुके थे।

"मैं अभी बाहर जा रहा हूं," उसने कहा। "जैकब, यहां की कमान आप संभालें। मुख्य बात यह है कि आप लोग निरंतर पर्यवेक्षण करें और यान के कम्प्यूटर के काम में कोई बाधा न आने पाये। मूलवासियों के प्रकट होते ही तुरंत ही मुझे सूचित कर दें। परिदृश्य पटलों के पास तीन पालियों में ड्यूटी दें। माया, आप अभी शुरू कर दीजिये। पपोव, वहां मेरे रेडियो संदेश रखे हैं। जितनी जल्दी हो सके प्रेषित कर दीजिये। मैं सोचता हूं यह समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है कि किसी को भी यान से क्यों नहीं निकलना चाहिए। बस। चलिये, अपना-अपना काम करें।"

मैं वायरलैस के पास बैठकर काम करने लगा। मेरी पीठ पीछे कोमव और वंडरहूज़ दबी आवाज़ में कुछ बातें कर रहे थे। रेडियो रूम के दूसरे कोने में माया परिदृश्य पटल ट्यून कर रही थी। मैं रेडियोसंदेश देख रहा था। हां, उधर जब हम दार्शनिक समस्याओं में उलझे हुए थे, इस बीच इधर कोमव ने खूब काम कर लिया था। उसके प्रायः सभी संदेश उत्तर थे। कोमव के कोई विशेष निर्देश न होने के कारण मैंने स्वयं ही तय कर लिया कि किस क्रम में संदेश भेजूं।

'ई० आर०-2, कोमव–केंद्र, गर्बोव्स्की को। प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। सोचता हूं, मुझे आपको अधिक महत्वपूर्ण कार्यों से विचलित करने का कोई अधिकार नहीं। आपको सारी खबरें देता रहूंगा।'

'ई० आर०-2–केंद्र, बादेर को। 'नूह-2' परियोजना के

प्रधान विजातिमनोविज्ञानी का पद स्वीकार नहीं कर सकता। अमीरएजीवी उपयुक्त उम्मीदवार है।'

'ई० आर०-2, कोमव—यूरोपीय प्रेस केंद्र, दोम्बीनी को। आपके वैज्ञानिक समीक्षक के यहां उपस्थित होने का अभी समय नहीं आया है। संपर्क आयोग से आप सारी सूचनाएं पा सकते हैं।'

बस ऐसे ही थे सभी संदेश। पांचेक संदेश केंद्रीय सूचनालय को थे। वे तो मेरी समझ में नहीं आये।

मेरा काम पूरे ज़ोरों पर था कि तभी विकोडित्र की टिकटिक होने लगी।

"कहां से है?" रेडियो रूम के दूसरे कोने से कोमव ने पूछा। वह माया के बगल में खड़ा, चारों ओर के दृश्य को गौर से देख रहा था।

"'केंद्र, ऐतिहासिक विभाग...'" मैंने पढ़ा।

"आखिर आ ही गया!" कोमव बोला और मेरी ओर बढ़ा।

"'नूह परियोजना'," मैंने आगे पढ़ा। "'ई० आर०-2, वंडरहूज, कोमव को, सूचना। आपको मिला यान, पंजीकरण संख्या अमुक, 'पिलग्रिम' तारायान है। डेमोस अंतरिक्ष अड्डे से दो जनवरी दो सौ इकतीस को 'सी' क्षेत्र में स्वतंत्र खोज के लिए रवाना हुआ था। यान से अंतिम संदेश छह मई दो सौ चौंतीस को 'छाया' क्षेत्र से मिला था। यान का कर्मीदल: सेम्योनोवा मरीया लुईज़ा और सेम्योनोव अलेक्सान्द्र पाव्लोविच। इक्कीस अप्रैल दो सौ तैंतीस से यान पर एक यात्री था: सेम्योनोव प्येर अलेक्सान्द्रोविच। 'पिलग्रिम' का अभिलेख...'"

वहां और भी कुछ कहा गया था, पर तभी अचानक कोमव मेरी पीठ पीछे ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। हैरान होकर मैं उसकी ओर घूमा। कोमव हंस रहा था, उसका चेहरा चमक रहा था।

"यही सोच रहा था मैं!" विजयोल्लासमय स्वर में

उसने कहा। हम सब मुंह बाये उसे ताक रहे थे। "यही सोच रहा था! वह मानव है। समझे, दोस्तो? मानव है!"

अध्याय पांच

मानव और अमानव

"अपनी-अपनी जगह डटे रहो!" कोमव ने हर्षमय स्वर में आदेश दिया, केस में बंद उपकरण उठाये और चला गया।

मैंने माया की ओर देखा। माया रेडियो रूम के बीचोंबीच बुत बनी खड़ी थी, उसकी नज़र धुंधली थी और होंठ निस्स्वर चल रहे थे—कुछ हिसाब लगा रही थी।

मैंने वंडरहूज़ की ओर देखा। उसकी भौंहें ऊंची उठी हुई थीं, गलमुच्छे फूल गये थे, जहां तक मुझे याद पड़ता था पहली बार वह किसी स्तनपायी जैसा नहीं, बल्कि शैतान मछली जैसा लग रहा था, जिसे पानी में से निकाल लिया गया हो। परिदृश्य पटल पर उपकरणों से लदा कोमव दलदल की ओर जाता नज़र आ रहा था।

"यह बात है!" माया बोली। "तो इसलिए थे खिलौने..."

"किसलिए?" वंडरहूज़ ने तुरंत जिज्ञासा प्रकट की।

"वह उनसे खेलता था," माया ने समझाया।

"कौन?" वंडरहूज़ ने पूछा। "कोमव?"

"नहीं, सेम्योनोव।"

"सेम्योनोव?" वंडरहूज़ ने हैरान होकर पूछा। "हुं... तो क्या हुआ?"

"छोटा सेम्योनोव," मैं अधीरता से बोला। "यात्री। बच्चा।"

"कैसा बच्चा ?"

"सेम्योनोव दंपति का बच्चा!" माया बोली। "समझे, उनके यहां वह सिलाई उपकरण किसलिए था? टोपियां, झगे, पोतड़े सीने के लिए..."

"पोतड़े!" चकित वंडरहूज़ ने दोहराया। "तो उनके बच्चा हुआ था! हां-हां! मैं हैरान हो रहा था कि यह यात्री उन्होंने कहां से बिठा लिया, सो भी अपने ही कुलनाम का। मुझे तो ख्याल ही नहीं आया... ठीक!"

रेडियो कॉल की घंटी बजी। मैंने यंत्रवत उत्तर दिया। यह वादिक था। वह जल्दी-जल्दी और दबी आवाज़ में बोल रहा था, मानो डर रहा हो कि पकड़ा जायेगा।

"पपोव, क्या हो रहा है तुम्हारे यहां? जल्दी से बता दो, हम यहां से जा रहे हैं।"

"ऐसी बात जल्दी में नहीं बतायी जा सकती," मैंने कुछ नाराज़गी से कहा।

"दो शब्दों में बता दो। यायावरों का यान ढूंढ़ लिया?"

"कैसे यायावरों का?"

"अरे वही... जिन्हें कोमव खोज रहा है..."

"किसने ढूंढ़ लिया?"

"तुम्हारे ग्रुप ने। बताओ न, ढूंढ़ लिया है न?" अचानक उसकी आवाज़ बदल गयी। "ट्यून टेस्ट," सख्ती से वह बोला। "ऑफ़ कर रहा हूं।"

"क्या ढूंढ़ लिया?" वंडरहूज़ ने पूछा। "कौन सा यान आ गया?"

मैंने हाथ झटक दिया।

"कुछ नहीं, ऐसे ही कुछ कौतूहली हैं... मतलब, उसका जन्म अप्रैल दो सौ तैंतीस में हुआ, और संदेश उन्होंने आखिरी बार मई चौंतीस में भेजा था... जैकब, उन्हें कितनी देर बाद केंद्र को संदेश भेजना होता था?"

"महीने में एक बार," वंडरहूज़ बोला। "यदि यान स्वतंत्र उड़ान पर होती..."

"एक मिनट," मैं बोला। "मई, जून..."

"तेरह महीने," माया बोली।

मुझे विश्वास नहीं हुआ, सो मैंने खुद गिना।

"हां," मैं बोला।

"असंभव लगता है, है न?"

"क्या असंभव लगता है?" वंडरहूज़ ने हौले से पूछा।

"दुर्घटना के दिन शिशु एक साल एक महीने का था," माया ने कहा। "वह ज़िंदा कैसे बचा रहा है?"

"मूलवासी," मैं बोला। "सेम्योनोव ने लॉग बुक मिटा दी। इसका मतलब उसने किसी को देखा था।... हुं, कोमव मुझ पर भौंक रहा था! वह तो सचमुच बच्चा रो रहा था! मैंने क्या कभी साल भर के बच्चे को रोते नहीं सुना?... उन्होंने वह सब टेप कर लिया, और जब वह बड़ा हो गया तो उसे सुनाया..."

"टेप करने के लिए मशीनें होनी चाहिए," माया बोली।

"अच्छा टेप नहीं किया, याद कर लिया," मैं बोला। "इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

"हां," वंडरहूज़ बोला। "उसने या तो अमानवाभों को देखा, या फिर मानवाभों को, जो मशीनी सभ्यता की अवस्था में थे। इसलिए लॉग बुक मिटा दी। निर्देश के अनुसार।"

"मशीनी सभ्यता के तो यहां कोई आसार नहीं नज़र आते," माया ने कहा।

"मतलब, अमानवाभ हैं..." अचानक मुझे यह बात सूझी।

"मित्रो, अगर यहां अमानवाभ हैं तो यह ऐसा अवसर है कि बस पूछिये मत! मध्यस्थ मानव, समझे? वह मानव भी है और अमानव भी, मानवाभ भी और अमानवाभ

भी! ऐसा कभी नहीं हुआ। यह तो किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा!"

मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था। माया भी फूली नहीं समा रही थी। हमारे सामने चकाचौंध करनेवाले परिप्रेक्ष्य थे—अभी वे धुंधले, अस्पष्ट थे, परंतु फिर भी इंद्रधनुषी चमक लिये, चकाचौंध करनेवाले। बात केवल यह नहीं थी कि इतिहास में पहली बार अमानवाभों के साथ संपर्क संभव हो रहा था। मानवजाति को एक अद्वितीय दर्पण मिल रहा था, मानवजाति के सम्मुख मूलतः भिन्न मानस के अब तक अगम्य, अज्ञेय संसार के द्वार खुल रहे थे, और ऊर्ध्व प्रगति के कोमव के अस्पष्ट विचार अंततः प्रायोगिक आधार पा रहे थे।...

"पर अमानवाभ मानव शिशु को क्योंकर पालेंगे?" विचारमग्न वंडरहूज बोला। "क्या जरूरत पड़ी है उन्हें इसकी और क्या समझ है उन्हें इसकी?"

परिप्रेक्ष्य धूमिल पड़ गये, परंतु तभी माया ने चुनौती के स्वर में कहा:

"पृथ्वी पर तो ऐसे मामले ज्ञात हैं जब अमानवों ने मानव शिशुओं को पाला था।"

"पर वह तो पृथ्वी की बात है!" उदास स्वर में वंडरहूज बोला।

उसका कहना सही था। सभी ज्ञात बुद्धिसंपन्न अमानवाभ भेड़ियों या अष्टभुजों तक की तुलना में मानव से कहीं अधिक भिन्न थे। आखिर क्रूगेर जैसे गंभीर विशेषज्ञ ने कहा तो है कि गैरट के बुद्धिसंपन्न शंबुक मनुष्य और उसकी सारी प्रविधि को यथार्थ जगत का अंश नहीं, बल्कि अपनी कल्पना की उपज मानते हैं।..

"मगर वह तो बचा रहा है और बड़ा हो गया है!" माया ने कहा।

वह भी ठीक कहती थी।

मैं तो स्वभाव से ही संशयवादी हूं। मुझे कल्पना के

बेलगाम घोड़े दौड़ाना पसंद नहीं है। माया की तरह नहीं। मगर यहां और कुछ सोचा ही नहीं जा सकता था। साल भर का बच्चा। बर्फ़ीली मरुभूमि। अकेला बच्चा। ज़ाहिर है वह अपने आप ज़िंदा नहीं बच सकता था। दूसरी ओर लॉग बुक मिटी हुई है। और क्या सोचा जा सकता है? कोई अज्ञात मानवाभ संयोगवश पास ही कहीं थे, उन्होंने बच्चे को खिलाया-पिलाया और फिर चले गये... बकवास...

"हो सकता है, वह ज़िंदा न बचा हो?" माया बोली। "हो सकता है, उसका रुदन और उसके माता-पिता की आवाज़ें—बस यही शेष रह गया हो?"

पलांश को मुझे लगा कि सब कुछ ढह गया। यह माया भी हमेशा कुछ न कुछ ऐसा ढूंढ़ निकालती है। पर तभी मुझे जवाब सूझा:

"तो फिर वह यान में कैसे आता है? मेरे साइबरों को आदेश कैसे देता है? नहीं, मित्रो, या तो हमें अंतरिक्ष में मानवजाति की प्रतिकृति मिली है—समझ रहे हैं?—एकदम आदर्श प्रतिकृति, या फिर यह अंतरिक्षीय माउग्ली* है। मैं नहीं जानता कि किसकी संभावना अधिक है।"

"मैं भी नहीं जानती," माया ने कहा।

"मैं भी," वंडरहूज़ बोला।

स्पीकर से कोमव की आवाज़ आयी:

"यान पर सब ध्यान दें! मैं अपने स्थल पर पहुंच गया हूं। चारों ओर ध्यान से देखते रहिये। मुझे यहां से कम ही दिखायी देता है। रेडियो संदेश आये हैं?"

मैंने रिसीवर पाकेट पर नज़र डाली।

"पूरी गड्डी है," मैंने कहा।

"पूरी गड्डी है," वंडरहूज़ ने माइक में कहा।

* अंग्रेज़ लेखक र० किप्लिंग की प्रसिद्ध कहानी का नायक बालक, जिसे भेड़ियों ने पाला।

"पपोव, मेरे संदेश भेज दिये?"

"वो... अभी सारे नहीं," जल्दी से वायरलैस पर बैठते हुए मैं बोला।

"अभी सारे नहीं भेजे," वंडरहूज़ ने माइक में सूचना दी।

"काम कर रहे हैं कि तमाशा देख रहे हैं?!" कोमव गरजा। "बहुत हो गया फ़लसफ़ा। काम करिये। माया स्क्रीन पर नज़र रखिये। सब कुछ भूल जाइये और दृश्य पटल पर नज़र रखिये। पपोव, दस मिनट में मेरे सारे संदेश चले जाने चाहिए। जैकब, ज़रा देखिये मेरे नाम क्या संदेश आये हैं।"

मैंने जब काम पूरा करके नज़र घुमायी तो सभी व्यस्त थे। माया दृश्य पटल के स्विचबोर्ड पर बैठी थी—परिदृश्य पटल पर कोमव नज़र आ रहा था—तट के पास छोटी सी आकृति; दलदल के ऊपर कोहरा हिल रहा था, यान के गिर्द सात किलोमीटर की परिधि में सारे तीन सौ साठ अंशों पर और कोई गति दृष्टिगोचर नहीं होती थी। कोमव हमारी ओर पीठ किये बैठा था—शायद यह सोचकर कि हमारा माउग्ली दलदल में से प्रकट होगा। माया धीरे-धीरे सिर घुमाते हुए चारों ओर के इलाके को देख रही थी, कभी किसी हिस्से में उसे कुछ संदेहास्पद लगता तो उसके चित्र को वह पूर्णतः आवर्धित कर देती—तब छोटे मानिटरों पर मुरझायी झाड़ी, या चमकते बालू पर टीले की बैंगनी छाया, या बौने वृक्षों के विरल झुरमुट के बीच कोई अस्पष्ट धब्बा नज़र आता।

वंडरहूज़ अपनी एकसुरी आवाज़ में माइक में बोलता जा रहा था: "...मानसप्रारूप के भेद कोलोन सोलह एन तिर्यक बत्तीस ज़ेटा या सोलह एम तिर्यक इकतीस इप्सिलोन..."—"काफ़ी है," कोमव कह रहा था, "अगला"।—"पृथ्वी, लंदन, कार्टराइट, आदरणीय कोमव, पुनः आपको याद दिलाता हूं आपने अपनी सम्मति भेजने का

वचन दिया था..."—"काफ़ी है, अगला। जैकब, केवल वही संदेश पढ़िये, जो केंद्र या बेस कैम्प से आये हैं"। मौन। वंडरहूज़ कार्ड देखता है। "केंद्र, वादेर आपका मंगाया उपकरण शून्य बेस को भेजा जा रहा है निम्न मुद्दों पर अपना मत बताइये, एक, मूलनिवासियों के वास के दूसरे संभाव्य क्षेत्र..."—"काफ़ी है। आगे..."

तभी बेस कैम्प से कॉल आयी। सीदोरोव कोमव को बुला रहा था।

"जी, कोमव संपर्क के लिये गये हुए हैं," मैंने क्षमायाचना के स्वर में कहा।

"क्या संपर्क आरंभ हो गया है?"

"नहीं, अभी नहीं। प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

सीदोरोव खांसा।

"अच्छा, मैं बाद में कॉल करूंगा। कोई अर्जेंट बात नहीं है।" वह थोड़ी देर चुप रहा। "घबरा रहे हो?"

मैंने अपने मन में उठ रही भावनाओं की ओर ध्यान दिया।

"नहीं, ऐसी कोई घबराहट या उद्विग्नता तो नहीं है।... बस अजीब सा लग रहा है। जैसे कि सपना देख रहे हों।"

सीदोरोव ने लंबी सांस छोड़ी।

"अच्छा, परेशान नहीं करूंगा," वह बोला। "सफल रहो!"

मैंने आभार प्रकट किया। फिर कोहनी डेस्क पर जमायी, ठोड़ी हाथ पर रखी और फिर से अपने मन में उठ रही भावनाओं की ओर ध्यान देने लगा। नहीं, वाकई उसे मानव नहीं कहा जा सकता। भेड़िये का पाला मानव शिशु भेड़िया बन जाता है, भालू का पाला भालू। यदि कोई अष्टभुज मानव शिशु को पालने लगे तो? खा न जाये—पालने लगे... बात इसकी ही नहीं है। भेड़िया, भालू, अष्टभुज—ये सभी बुद्धिहीन हैं। कम से कम, इनमें

वह नहीं है, जिसे विजातिमनोविज्ञानी बुद्धि कहते हैं। पर अगर हमारे माउग्ली को ऐसे जीवों ने पाला है, जो बुद्धिसंपन्न हैं, परंतु साथ ही निश्चित अर्थ में अष्टभुज हैं तो? ... वे तो अष्टभुजों से भी अधिक हद तक मानव के लिए विजातीय हैं... और उन्हीं ने तो उसे ये प्रेतच्छायाएं छोड़ना सिखाया है—मानव शरीर में तो ऐसा कर पाने के लिए कुछ नहीं है, मतलब यह कृत्रिम मुक्ति है। ठहरो, उसे जरूरत क्या है इसकी? किससे अपनी रक्षा करने के लिए उसे यह सिखाया गया है? ग्रह तो सूना है। मतलब सूना नहीं है।

मैंने विशाल गुफ़ाओं की कल्पना की, जिनमें बैंगनी झुटपुटा है, अंधेरे कोने हैं, और उनमें घातक खतरा छिपा हुआ है, नन्हा बालक चिपचिपी दीवार से सटा आगे बढ़ता है, किसी भी क्षण वह शत्रु के लिए अपनी प्रेतच्छाया छोड़कर विलीन हो जाने को तत्पर है। बेचारा बालक। उसे फ़ौरन यहां से ले जाना चाहिए। रुको-रुको-रुको! ये सब बेकार की बातें हैं। ऐसा नहीं हुआ करता। ऐसा नहीं होता कि किसी जटिल, विवेकी, अनुभवी जीवन का आस्तित्व हो और उसके चारों ओर अधिक सरल जीवन रूपों की भरमार न हो। यहां प्राणियों के कुल कितने रूप पाये गये हैं? ग्यारह या बारह—और यह गिनती वाइरसों से लेकर मानव शिशु तक सभी जीवन रूपों की है। नहीं, ऐसा नहीं हुआ करता। दाल में कुछ काला है। कोई नहीं, जल्दी ही पता चल जायेगा। बालक हमें सब कुछ बता देगा। अगर उसने न बताया तो? भेड़ियों के पाले मानव शिशुओं ने क्या भेड़ियों के बारे में बहुत कुछ बताया है? कोमव क्या उम्मीद लगाये हुए है? जी कर रहा था इसी क्षण कोमव से पूछूं वह क्या उम्मीद लगाये हुए है।

वंडरहूज आखिरी संदेश पढ़कर कुर्सी में पसर गया था, सिर के पीछे हाथ बांधकर वह विचारमग्न सा बोला:

"पता है, मैं सेम्योनोव दंपति को जानता था। बड़े

अच्छे लोग थे पर साथ ही बड़े अजीब। पुराने दिनों की रूमानियत में खोये। बेशक, शूरा* सारे प्राचीन नियम जानता था, बात-बात में उनके उद्धरण दिया करता था। हमें वे हास्यास्पद और बेतुके लगते थे, पर वह उनमें एक आकर्षण पाता था... दुर्घटना, मृत्यु पीड़ा, डरावने जीव यान में घुसे आ रहे हैं... लॉग बुक नष्ट करनी चाहिए, दिक् में अपना चिह्न मिटा देना चाहिए, आखिर इस चिह्न के दूसरे छोर पर पृथ्वी है! हां, वह बिल्कुल ऐसे ही सोचनेवालों में था," वंडरहूज़ कुछ देर तक चुप बैठा रहा। "जानते हो, एकांत की कामना करनेवालों की कोई कमी नहीं है। जितने हम तुम सोचते हैं, उससे कहीं अधिक संख्या है उनकी। आखिर एकांत कोई ऐसी बुरी चीज़ नहीं है, क्या ख्याल है?"

"मुझे नहीं चाहिए ऐसा एकांत," स्क्रीन से नज़रें हटाये बिना माया ने कहा।

"इसलिए कि तुम अभी जवान हो," वंडरहूज़ बोला। "तुम्हारी उम्र में शूरा सेम्योनोव को भी यह शौक था कि उसके ढेर सारे दोस्त हों और ढेर सारे लोगों का वह दोस्त हो, कि सब मिलकर, बड़े जोश-खरोश से काम करें, मिलकर दिमाग लड़ायें; कि घोड़े पूरी रफ़्तार से दौड़ाते रहें; कि हर पल मुकाबला हो, चाहे किसी भी चीज़ का, बस मुकाबला हो—पंखों के साथ छलांगें लगाने का या विदग्धोक्तियों का या कोई तालिकाएं मुंह जबानी याद होने का... हर बात में! और बीच-बीच में नैकोफ़ोन की धुन पर अपने रचे टप्पे गाये जायें..." वंडरहूज़ ने ठंडी सांस ली। "आम तौर पर यह सब तब जाता रहता है जब हृदय में सच्चा प्रेम उठता है।... वैसे तो मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता। मुझे बस इतना पता है कि सन् बीस में शूरा और मरीया स्वतंत्र खोज दल में चले गये थे। तब से उनसे एक बार भी मुलाकात नहीं हुई। बस, एक बार वीडियोफ़ोन पर बातचीत हुई थी... मेरी तब कंट्रोल चौकी

*अलेक्सान्द्र नाम का संक्षिप्त रूप।

पर ड्यूटी थी, शूरा ने पंडोरा से निकलने की अनुमति मांगी थी।" वंडरहूज़ ने फिर से ठंडी सांस ली। "जानते हो शूरा के पिता जी तो अभी ज़िंदा हैं। लौटने पर उनके पास जाना चाहिए..." वह थोड़ी देर के लिए चुप हो गया। "मुझसे पूछो तो," वह बोला, "मैं सदा स्वतंत्र खोज का विरोधी रहा हूं। बाबा आदम के ज़मानेवाली बात है यह। अंतरिक्ष में अकेले भटक रहे हैं, खतरा कितना है, वैज्ञानिक परिणाम नगण्य, कभी-कभी तो बाधा ही बनते हैं।... क्रैमर का किस्सा याद है? वे सब ऐसे बनते हैं जैसे कि हमने अंतरिक्ष पर पूरी तरह अधिकार पा लिया है, कि यह हमारा अपना घर ही है। गलत है यह सब। और कभी सही होगा भी नहीं। अंतरिक्ष सदा अंतरिक्ष रहेगा और मानव मानव ही रहेगा। वह निरंतर अधिक अनुभव पाता जायेगा, परंतु उसका अनुभव कभी भी इस बात के लिए पर्याप्त नहीं होगा कि अंतरिक्ष में वह अपने घर जैसा महसूस करे।... मेरे ख्याल में शूरा और मरीया अंतरिक्ष में कुछ भी नहीं खोज पाये, कम से कम ऐसा कुछ नहीं, जिसके बारे में, और कुछ नहीं तो, दोस्तों के साथ गप-शप करते हुए ही बताया जाये।"

"पर वे वहां सुखी थे," माया सिर घुमाये बिना बोली।

"ऐसा क्यों सोचती हो?"

"ऐसा न होता तो वे लौट आते! कुछ खोजने की उन्हें क्या पड़ी थी, अगर वे उसके बिना ही सुखी थे?" माया ने गुस्से भरी नज़र वंडरहूज़ पर डाली। "सुख के अलावा और खोजने को है ही क्या?"

"मैं तुम्हें यह उत्तर दे सकता था कि जो सुखी होता है वह कुछ खोजता ही नहीं," वंडरहूज़ ने कहा, "लेकिन मैं ऐसी गंभीर बहस के लिए तैयार नहीं हूं, और तुम भी तैयार नहीं हो, क्या ख्याल है? देर-सवेर हम अमानवाओं पर सुख की धारणा का सामान्यीकरण करने लगेंगे..."

"यान!" कोमव की आवाज़ आयी। "ध्यान से देखिये!"

"यही मैं भी कहना चाहता था," वंडरहूज़ बोला, और माया फिर से स्क्रीन की ओर मुड़ गयी।

अब हम तीनों ने स्क्रीन पर नज़रें गड़ा रखी थीं। सूरज नीचे उतर आया था, चोटियों को छू रहा था, टीलों पर परछाइयां पसर गयी थीं। अवतरण पट्टी चमक रही थी, दलदल के ऊपर भाप की टोपी भारी और निश्चल लग रही थी, उसका ऊपरी छोर, जिसमें से छनकर किरणें आ रही थीं, तीखे बैंगनी रंग का हो गया था। चारों ओर सब कुछ अत्यंत निश्चल था—कोमव भी।

"पांच बज गये," वंडरहूज़ धीरे से बोला। "क्यों न खाना खा लें? गेन्नादी, आप खाना कैसे खायेंगे?"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए," कोमव ने कहा। "मैं अपने साथ ले आया हूं, आप लोग खा लीजिये, बाद में, हो सकता है, फ़ुरसत न मिले।"

मैं उठा।

"चलकर बनाता हूं। क्या आर्डर होगा?"

तभी वंडरहूज़ बोला:

"दिख रहा है!"

"कहां?" कोमव ने तुरंत ही पूछा।

"आइसबर्ग की ओर से तट पर हमारी तरफ़ आ रहा है। यान की ओर आपकी दिशा से प्रायः साठ अंश बायीं ओर।"

"हां," माया बोली। "मैं भी देख रही हूं। सचमुच, आ रहा है।"

"मुझे नहीं दिख रहा," कोमव अधीर स्वर में बोला। "दूरीमापी से निर्देशांक बताइये।"

वंडरहूज़ ने दूरीमापी के फ़्रेम पर मुंह सटाया और निर्देशांक बताये। अब मैंने भी देख लिया: काले जल के

छोर पर धीरे-धीरे, मानो मन मारकर, हरी सी, विचित्र टेढ़ी-मेढ़ी आकृति यान की ओर आ रही थी।

"नहीं, नहीं दिख रहा," कोमव ने खीझकर कहा। "मुझे बताते जाइये।"

"हां, तो..." वंडरहूज़ ने कहना शुरू किया और खंखारकर गला साफ़ किया। "धीरे-धीरे चल रहा है, हमारी ओर देख रहा है... उसके हाथों में टहनियों का गट्ठर है... थम गया, पांव से रेत कुरेदी... उफ़, ऐसी ठंड में एकदम नंगा... आगे चल पड़ा है... गेन्नादी, आपकी ओर देख रहा है... हुं... शरीर उसका मनुष्यों जैसा है, पर पूरी तरह नहीं... फिर से थम गया है, लगातार आपकी ओर ही देख रहा है। क्या आपको नज़र नहीं आ रहा? आपकी तिर्यक रेखा पर है, हमारी अपेक्षा आपके अधिक समीप है..."

अंतरिक्षीय माउग्ली, प्येर अलेक्सान्द्रोविच सेम्योनोव, पास आ रहा था। अब वह कोई दो सौ मीटर दूर था और जब माया मॉनीटर पर परिवर्द्धित चित्र देती थी तो उसकी बरौनियां तक नज़र आती थीं। तभी डूबता सूरज दो चोटियों के बीच से झांकने लगा, फिर से उजाला हो गया, सागर तट पर लंबी परछाइयां फैल गयीं।

वह बच्चा था, लगभग बारह साल का बालक, बेढब किशोर, हड़ियल, लंबी टांगें, नुकीले कंधे और कोहनियां—बस इतने पर ही आम बालक से समानता समाप्त हो जाती थी। उसका मुख बालकों जैसा नहीं था, नयन-नक्श मानवीय थे, परंतु वह एकदम जड़, निश्चल, पथराया हुआ था, मुखौटे जैसा। केवल आंखें ही सजीव थीं, बड़ी-बड़ी काली और वह उन्हें तेज़ी से दायें-बायें घुमाता तीखी नज़रें डाल रहा था। कान उसके बड़े-बड़े थे, दायां कान बायें से बड़ा था और बायें कान के नीचे से गर्दन पर हंसली तक जैसे-वैसे भर गये घाव का गहरा लाल निशान था। ललछौंहीं जटाएं माथे और कंधों पर बिखरी, चारों

दिशाओं में फैली हुई थीं, टांड़ पर ऊपर उठी हुई थीं। चेहरा अप्रिय, भयावह था और रंग भी उसका मुर्दों जैसा हरा-नीला था, वह ऐसे चमक रहा था, जैसे कि उस पर कोई चिकनाई लगायी गयी हो। यों तो उसका सारा शरीर ही ऐसे चमक रहा था। वह बिल्कुल नंगा था। यान के एकदम पास आकर जब उसने टहनियों का गट्ठर रेत पर फेंक दिया तो साफ़ नज़र आने लगा कि उसका सारा शरीर कैसा चीमड़ है, बालसुलभ कोमलता उसमें लेशमात्र भी नहीं थी। हां, वह हड़ियल था, लेकिन दुबला नहीं–सारा शरीर नसदार, चीमड़ था, वयस्कों की भांति हृष्ट-पुष्ट मांसपेशियोंवाला नहीं, नसदार ही। घावों के भयानक चिह्न भी दिखने लगे–बायीं बगल पर पसली के पार जांघ तक गहरे घाव का निशान था, इसीलिए उसका शरीर ऐसा एक ओर को झुका हुआ, टेढ़ा-मेढ़ा लगता था, दायीं टांग पर भी ऐसा ही निशान था और छाती बीचोंबीच गहरी धंसी हुई थी। हां, बेचारे को यहां कम मुसीबतें नहीं सहनी पड़ी होंगी। यह ग्रह बड़े जतन से मानव शिशु को चबाता, कुतरता रहा था और आखिर उसे अपने अनुरूप बनाकर रहा था।

अब वह लगभग बीस कदम की दूरी पर था, अदृश्य क्षेत्र के सिरे पर ही। टहनियों का गट्ठर उसके पैरों के पास पड़ा हुआ था और वह बांहें लटकाये खड़ा था, यान को देख रहा था; बेशक, हमारे कैमरों के लैंस उसे नहीं दिख सकते थे, तो भी लगता था जैसे वह हमारी आंखों में आंखें डालकर देख रहा है। और उसकी मुद्रा भी मानवों जैसी नहीं थी। पता नहीं कैसे समझाऊं। बस, यह समझिये कि लोग ऐसी मुद्रा में नहीं खड़े होते। कभी भी नहीं–न आराम करते हुए, न प्रतीक्षा करते हुए, न ही तनाव के क्षण में। उसने बायीं टांग थोड़ी पीछे हटाकर घुटने पर मोड़ रखी थी, लेकिन शरीर का सारा ज़ोर इसी टांग पर पड़ रहा था। बायां कंधा उसने आगे निकाल रखा था।

डिस्क फेंकने जा रहे खिलाड़ी को पलांश के लिए ऐसी मुद्रा में देखा जा सकता है—ज्यादा देर तक ऐसी मुद्रा में खड़ा नहीं हुआ जा सकता, न यह सुविधाजनक है, न ही सुंदर, परंतु वह कुछ मिनट तक खड़ा रहा, फिर अचानक बैठ गया और अपनी टहनियों को आगे-पीछे करने लगा। वह बैठा भी बड़े अजीब ढंग से था—बायीं टांग पर, दायीं टांग बिना मोड़े ही उसने आगे फैला ली थी। उसे देखते हुए भी अजीब लग रहा था, खास तौर पर जब वह टहनियों को उठाने-रखने में हाथों के साथ-साथ दायें पांव से भी काम लेने लगा। फिर उसने अपना मुखड़ा हमारी ओर उठाया, हाथ आगे बढ़ाये—दोनों मुट्ठियों में एक-एक टहनी थी—और तब कुछ ऐसा शुरू हुआ कि मैं नहीं जानता कैसे उसका वर्णन करूं।

बस इतना कह सकता हूं: उसका चेहरा जी उठा, जी ही नहीं उठा, उसमें गतियों का विस्फोट हुआ। पता नहीं मनुष्य के चेहरे में कितनी मांसपेशियां होती हैं, जितनी भी हों, उसके चेहरे पर सभी की सभी एकसाथ गतिमान हो उठीं, प्रत्येक मांसपेशी में अपनी स्वतंत्र गति हो रही थी, निरंतर गति हो रही थी, अत्यंत जटिल गति हो रही थी। मैं नहीं जानता कि इसकी तुलना किस से की जाये। शायद, खिली धूप में जल की सतह पर ऊर्मियों की भगदड़ से, परंतु ऊर्मियों की यह भगदड़ एकरूपी और अव्यवस्थित होती है, अपनी अव्यवस्था में वह एकरूपी होती है, परंतु यहां तो गतियों की इस आतिशबाजी के पीछे निश्चित लय दृष्टिगोचर होती थी, कोई सुविचारित व्यवस्था थी, यह कोई कंपकंपी या मृत्यु-पीड़ा की ऐंठन नहीं थी। आप चाहें तो इसे मांसपेशियों का नृत्य कह सकते हैं। यह नृत्य मुखड़े से शुरू हुआ, फिर कंधे और वक्ष का नृत्य होने लगा, हाथ गाने लगे, और सूखी डंडियां भिंची मुट्ठियों में फड़कने लगीं, एक दूसरी में गुंथने, एक दूसरी से जूझने लगीं—सरसराती हुई, ढोल पीटती हुई, कड़कड़ाती हुई, लगा जैसे यान तले

टिड्डों से भरा विशाल खेत हो। यह सब एक मिनट से अधिक नहीं चला, लेकिन इतने में ही मेरी आंखें चुंधिया गयीं, कान बजने लगे। फिर इस सबमें अवरोह आ गया। नृत्य और गायन डंडियों से हाथों में चला गया, हाथों से कंधों में, फिर चेहरे में और सब कुछ समाप्त हो गया। फिर से एक जड़ मुखौटा हमारी ओर देख रहा था। लड़का सहज ही उठ खड़ा हुआ और टहनियों की ढेरी लांघकर सहसा अदृश्य क्षेत्र में चला गया।

"चुप क्यों हैं?" कोमव चिल्ला रहा था। "जैकब! जैकब! सुन रहे हैं? चुप क्यों हैं?"

मेरी तंद्रा टूटी और मैंने नजरें घुमाकर स्क्रीन पर कोमव को ढूंढ़ा। विजातिमनोविज्ञानी यान की ओर चेहरा किये तनावपूर्ण मुद्रा में खड़ा था, उसके पांवों से शुरू होती लंबी परछाईं रेत पर फैली हुई थी। वंडरहूज़ ने गला खंखारा और बोला:

"सुन रहा हूं।"

"क्या हुआ है?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता," वह बोला। "शायद, आप लोग कुछ बता सकें?"

"वह बोल रहा था!" माया ने दबी आवाज़ में कहा। "वह तो हमसे बातें कर रहा था!"

"सुनिये," मैं बोला, "वह कहीं हैच की ओर तो नहीं चला गया?"

"हो सकता है," वंडरहूज़ बोला। "गेन्नादी, वह अदृश्य क्षेत्र में चला गया है। शायद, हैच की ओर जा रहा है..."

"हैच पर नज़र रखिये," कोमव ने तुरंत आदेश दिया। "यदि वह अंदर आये तो तुरंत मुझे सूचित कर देना, खुद रेडियो रूम अंदर से बंद करके बैठे रहना..." फिर ज़रा देर चुप रहकर वह कुछ नये अंदाज़ में, अपने सदा की भांति शांत, कामकाजी स्वर में और मानो मुंह माइक से

परे हटाकर बोला: "एक घंटे बाद आपका इंतज़ार करूंगा... एक घंटे में निबट लेंगे?"

"समझा नहीं," वंडरहूज़ बोला।

"दरवाज़ा बंद कर लो," कोमव खीझकर चिल्लाया। "समझे? अगर वह यान में आये तो रेडियो रूम का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लो!"

"यह तो मैं समझ गया हूं," वंडरहूज़ ने कहा। "पर आप घंटे भर बाद कहां हमारा इंतज़ार करेंगे?"

खामोशी छा गयी।

"एक घंटे बाद आपका इंतज़ार करूंगा," फिर से मुंह माइक से परे हटाकर कामकाजी लहजे में कोमव ने कहा। "एक घंटे में निबट लेंगे?"

"कहां?" वंडरहूज़ बोला। "कहां इंतज़ार करेंगे?"

"जैकब, आप मुझे सुन रहे हैं?" कोमव ने बेचैन होते हुए ज़ोर से पूछा।

"खूब अच्छी तरह सुन रहा हूं," वंडरहूज़ बोला और सकपकाया सा हमारी ओर देखने लगा। "आपने कहा कि एक घंटे बाद हमारा इंतज़ार करेंगे। कहां?"

"मैंने तो कुछ नहीं कहा..." कोमव ने कहना शुरू किया, पर तभी वंडरहूज़ की, उसके जैसी ही दबी-दबी, मानो माइक दूर हो, आवाज़ आयी:

"क्यों न चलकर खाना खा लिया जाये? पपोव वहां अकेला ऊब गया होगा, क्या ख्याल है, माया?"

माया हंस पड़ी।

"यह तो वह है..." उंगली से स्क्रीन पर इशारा करते हुए वह बोली। "वह है... वहां..."

एक अजीब सी आवाज़ ने—मैं तो तुरंत समझ भी नहीं पाया, किसकी है—कहा:

"बुढ़ऊ मेरे, मैं तेरा इलाज कर दूंगा, तुझे पैरों पर खड़ा कर दूंगा, बंदा बना दूंगा..."

माया हाथों से मुंह ढांपे हिचकियां लेते हुए हंस रही थी, घुटनों को ठोड़ी की ओर उठा रही थी।

"कोई खास बात नहीं है, गेन्नादी," पसीने से तर माथे को रूमाल से पोंछते हुए वंडरहूज़ बोला। "गलतफ़हमी हो गयी। प्राणी हमारी आवाज़ों में बोल रहा है। यान के बाह्य ध्वानिग्राहकों से हम उसकी आवाज़ सुन रहे हैं। बस, इसी से ज़रा गलतफ़हमी हो गयी।"

"आप उसे देख रहे हैं?"

"नहीं... हां, वह आ गया।"

बालक फिर से अपनी डंडियों के पास खड़ा था, अब उसकी मुद्रा भिन्न थी, परंतु पहले की ही भांति असुविधाजनक। फिर उसका मुंह खुला, होंठ विचित्र ढंग से टेढ़े हो गये, मुंह के बायें कोने में मसूढ़े और दांत दिखने लगे और हमने माया की आवाज़ सुनी:

"आखिर अगर मेरे भी आपके जैसे गलमुच्छे होते तो शायद मैं जीवन को दूसरे ढंग से लेती..."

"अब वह माया की आवाज़ में बोल रहा है," अविचलित स्वर में वंडरहूज़ बोला। "अब आपकी ओर देख रहा है। आपको अभी तक नज़र नहीं आया?"

कोमव चुप था। बालक अभी भी उसकी ओर सिर घुमाये खड़ा था, एकदम गतिहीन, बुत की तरह–घने होते झुटपुटे में एक विचित्र आकृति। सहसा मैं समझ गया कि यह वह नहीं है। आकृति विलीन हो रही थी। उसके आर-पार जल की काली सतह दिख रही थी।

"हां, देख रहा हूं!" कोमव की आवाज़ में संतोष था। "वह यान से बीसेक कदम दूर खड़ा है, ठीक है न?"

"ठीक," वंडरहूज़ ने कहा।

"नहीं," मैं बोला।

वंडरहूज़ ने गौर से देखा।

"हां-हां, ठीक नहीं है," वह सहमत हो गया। "यह तो वह है, क्या आप उसे कहते हैं, गेन्नादी? प्रेतच्छाया?"

"ठहरिये," कोमव बोला। "अब मैं सचमुच उसे देख रहा हूं। वह मेरी ओर आ रहा है।"

"तुम उसे देख रहे हो?" माया ने मुझसे पूछा।

"नहीं," मैंने जवाब दिया। "अंधेरा हो गया।"

"बात अंधेरे की नहीं है," माया ने आपत्ति की।

शायद उसका कहना सही था। सूरज डूब गया था, झुटपुटा घना हो गया था, लेकिन मैं स्क्रीन पर कोमव को साफ़ देख रहा था, विलीन होती प्रेतच्छाया देख रहा था, अवतरण पट्टी और दूर का आइसबर्ग भी दिख रहा था, मगर बालक नहीं।

फिर मैंने देखा कि कोमव बैठ गया।

"पास आ रहा है," दबी आवाज़ में वह बोला। "अब मैं व्यस्त होऊंगा। मुझे मत बुलाना। चारों ओर नज़र रखे रहना। लेकिन किसी तरह के रडार से, किसी भी सक्रिय साधन से काम नहीं लेना, कोशिश करना कि अवरक्त प्रकाशयंत्रों से ही काम चल जाये। बस!"

"गुड लक," वंडरहूज़ ने माइक में कहा और उठ खड़ा हुआ। उसकी शक्ल से लगता था जैसे उसने कोई किला फ़तह कर लिया हो। अपनी नाक के ऊपर से उसने सख्ती भरी नज़र हम पर डाली, अपने गलमुच्छे फुलाये और बोला: "अच्छा तो तमाशबीनो, अब सुबह तक हमारी छुट्टी है।"

माया ज़ोर से जम्हाई लेकर बोली:

"नींद आ रही है मुझे क्या? या तंत्रिकीय तनाव का असर है?"

"अब तो हमें सोने का मौका कम ही मिलेगा," वंडरहूज़ बोला। "चलिये, ऐसा करते हैं: माया आराम करने जाये। मैं स्क्रीन के पास बैठा रहूंगा, पपोव वायरलैस

के पास सो ले। चार घंटे बाद मैं उसे उठा दूंगा। क्या ख्याल है, पपोव?"

मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, हालांकि इस बात पर संदेह था कि कोमव इतनी देर तक पाले में बैठा रह सकेगा। माया ने भी जम्हाइयां लेते हुए कोई आपत्ति नहीं की। वह चली गयी तो मैंने वंडरव्रूज से कहा कि कॉफ़ी बना लाता हूं, लेकिन उसने कोई अजीब सा बहाना बनाकर मना कर दिया—शायद वह चाहता था कि मैं सो लूं। तब मैं वायरलैस के पास जम गया, नये रेडियो संदेश देखे, उनमें कुछ भी अर्जेंट नहीं था और मैंने उन्हें वंडरव्रूज को थमा दिया।

थोड़ी देर तक वह चुप बैठा रहा। मुझे नींद बिल्कुल नहीं आ रही थी। मैं यही अटकलें लगा रहा था कि प्येर सेम्योनोव को पालने-पोसनेवाले कैसे होंगे। भेड़िये का पाला मानव शिशु चौपायों की तरह चलता है और गुर्राता है, भालू का पाला मानव शिशु भी ऐसा ही होता है। देखा जाये तो पालन-पोषण ही हर प्राणी की जीवन पद्धति निर्धारित करता है। पूरी तरह न सही, पर बहुत हद तक। तो फिर हमारा यह माउग्ली उदग्रचारी यानी दो पांवों पर सीधा चलनेवाला मानव ही क्यों बना रहा है? इससे बहुत से विचार उठते हैं। वह पैरों के बल चलता है—हाथों का इस्तेमाल करता है—यह कोई जन्मजात गुण नहीं है, लालन-पालन से आता है। वह बोल सकता है। बेशक वह जो बोलता है उसका अर्थ नहीं समझता है, परंतु इतना स्पष्ट है कि मस्तिष्क का जो भाग वाक् क्षमता को नियंत्रित करता है वह सक्रिय है... और एक बार सुनने से ही उसे सब कुछ याद हो जाता है! अजीब बात है, बहुत ही अजीब! जिन अमानवाभों के बारे में मैं जानता हूं वे तो मानव शिशु का ऐसा लालन-पालन कतई न कर पाते। उसे खिला-पिला लेते, उसे पालतू बना लेते। विराट अंतड़ियों जैसी अपनी विचित्र प्रयोगशालाओं में उसका

अध्ययन भी कर लेते। परंतु उसमें मानव को देखना, मानव को पहचानना और उसे बनाये रखना—यह तो शायद ही संभव था। तो क्या वे मानवाभ हैं?"

"जो भी हो," अचानक वंडरहूज़ बोल उठा, "वे व्यापकतम अर्थ में मानवीय हैं, तभी तो उन्होंने हमारे शिशु के प्राणों की रक्षा की है और मेधावी भी हैं, क्योंकि उसे मनुष्य जैसा ·बनाया है, जबकि, हो सकता है, उन्हें हाथ-पांव के बारे में कुछ भी न मालूम हो। क्या ख्याल है, पपोव?"

मैंने जवाब में अस्पष्ट हुंकारा भर दिया और वह चुप हो गया।

रेडियो रूम में खामोशी थी। बेस कैम्प हमें परेशान नहीं कर रहा था, कोमव भी नहीं बुला रहा था: अंधेरे स्क्रीन पर मेरु ज्योति के इंद्रधनुषी पटल जल-बुझ रहे थे और उनके डोलायमानं प्रकाश में एकदम निश्चल बैठा कोमव मुश्किल से दिख रहा था, बालक को मैं एक बार भी नहीं देख पाया। पर लगता था उनका काम बखूबी चल रहा है, क्योंकि यान का बड़ा कम्प्यूटर ट्रांसलेटर से आती सूचना को "पचाता" और व्यवस्थित करता चल रहा था। फिर मेरी आंख लग गयी और मैंने सपना देखा कि कुछ गुस्सैल अष्टभुज नीले ट्रैक सूट पहने और छाता लगाये मुझे चलना सिखा रहे हैं, मुझे यह सब बहुत हास्यास्पद लग रहा है और मैं बार-बार गिर जाता हूं, जिस पर वे बहुत नाराज होते हैं। दिल में सहसा हौल सा पड़ा और मेरी नींद खुल गयी। जरूर कुछ हुआ है! वंडरहूज तनावपूर्ण मुद्रा में स्क्रीन पर झुका बैठा था, उसकी मुट्ठियां कुर्सी की बांहों पर कसकर भिंची हुई थीं।

"पपोव!" उसने हौले से मुझे पुकारा।

"हां?"

"स्क्रीन देखो।"

उसके कहे बिना ही मैं स्क्रीन को देख रहा था, पर

मुझे वहां कोई खास बात नज़र नहीं आ रही थी। पहले की ही भांति आकाशीय ज्योति जल-बुझ रही थी। कोमव पहले की ही मुद्रा में बैठा हुआ था और सुदूर आइसबर्ग कभी गुलाबी तो कभी हरा होकर चमक उठता था। फिर मैंने देख लिया।

"पहाड़ों के ऊपर?" मैंने फुसफुसाते हुए पूछा।

"हां। पहाड़ों के ऊपर ही।"

"क्या बला है यह?"

"पता नहीं।"

"कब से आयी है?"

"पता नहीं। मैंने कोई दो मिनट पहले देखी है। सोच रहा था, शायद बवंडर है..."

मैंने भी पहले यही सोचा था कि यह बवंडर है। पर्वतश्रेणी की धूमिल रेखा के ऊपर इंद्रधनुषी पटलों की पृष्ठभूमि में लंबे पतले कोड़े जैसा कुछ उठा हुआ था—काली आड़ी रेखा, मानो स्क्रीन पर पड़ी खरोंच हो। इस कोड़े में नामालूम सा कंपन हो रहा था, वह मुड़ रहा था, कभी-कभी मानो धंस जाता था और फिर से सीधा हो जाता था। यह नज़र आता था कि वह सपाट नहीं, बल्कि जोड़दार है, जैसे कि विराट बांस हो। वह उस पर्वतश्रेणी के ऊपर उठा हुआ था, जो यहां से कम से कम दस किलोमीटर दूर थी, मानो किसी ने चोटी के पीछे भीमकाय वंसी उठायी हो। स्क्रीन पर जाने-पहचाने दृश्य को वह कठपुतली थियेटर की मंचसज्जा जैसा अवास्तविक बना रहा था। उसे देखना अस्वाभाविक और भयावह एवं हास्यास्पद लगता था, जैसे कि पर्वत शिखरों के ऊपर कोई कल्पनातीत विशाल चेहरा उभर आये। बस यह समझिये कि यह ऐसा कुछ था जिसका पैमाना असंभव लगता था, किसी तरह के अनुपातों में वह अकल्पनीय था।

"वे हैं?" मैंने फुसफुसाकर पूछा।

"यह तो असंभव है कि यह कोई प्राकृतिक वस्तु हो,"

वंडरहूज़ बोला, "और यह भी असंभव है कि कोई अप्राकृतिक वस्तु हो।"

मैं खुद भी यही महसूस कर रहा था।

"कोमव को सूचित करना चाहिए।"

"उसने इंटरकॉम ऑफ़ कर दिया है," वंडरहूज़ ने जवाब दिया। वह दूरीमापी सेट कर रहा था। "दूरी नहीं बदल रही है। चौदह किलोमीटर है। और इस चीज़ में ज़बरदस्त कंपन हो रहे हैं। कंपन का आयाम सौ मीटर से कम नहीं है।... नामुमकिन चीज़ है।"

"इस बला की ऊंचाई कितनी है?" मैं बुदबुदाया।

"लगभग सौ मीटर।"

"बाप रे!"

सहसा वंडरहूज़ ने उछलकर दो बटन दबा दिये: यान के बाहर "सभी तुरंत यान पर लौटें" रेडियो संकेत का और यान के भीतर "सभी रेडियो रूम में जमा हों" का। फिर मेरी ओर मुड़कर उसने असाधारणतः सख्त आवाज़ में आदेश दिया:

"पपोव, तुरंत चौकी पर जाओ! गलही की तोप तैयार कर दो। बैठकर इंतज़ार करो। मेरे आदेश के बिना कुछ नहीं करना है।"

मैं गलियारे में लपका। केबिनों के दरवाज़ों के पीछे से आपात संकेत की घंटी सुनायी दे रही थी। माया सामने से दौड़ती आ रही थी, दौड़ते-दौड़ते ही जैकट पहन रही थी। पांवों में मोज़ों के बिना ही उसने जूतियां पहन रखी थीं।

"क्या हो गया?" नींद से भारी आवाज़ में उसने पूछा।

मैंने हाथ झटक दिया और सीढ़ियां लांघता हुआ नीचे सक्रिय साधन संचालन चौकी में पहुंच गया। मेरे शरीर में हल्की कंपकंपी हो रही थी, लेकिन कुल जमा मैं शांत था। निश्चित अर्थ में मुझे गर्व भी हो रहा था: एकदम विरली स्थिति उत्पन्न हो रही थी। इतनी विरली कि मुझे पूरा

8—1001

विश्वास था: इस यान की पहली उड़ान से लेकर आज तक इस चौकी पर किसी ने पांव नहीं रखा है—सिवाय अंतरिक्ष अड्डे के कर्मचारियों के, जो स्वचालित यंत्रों की जांच करते हैं।

कुर्सी में धंसकर मैंने परिदृश्य पटल ऑन कर दिया, उल्कानाशी तोप की स्वचालित प्रणाली बंद कर दी और दबूसे की तोप तुरंत ही ब्लॉक कर दी ताकि कहीं हड़बड़ी में अधोबिंदु में ही तोप न दग जाये। इसके बाद मैं मैनुअल फ़ोकसिंग का डायल घुमाने लगा और स्क्रीन पर मेरी आंखों के सामने क्रास तार को पार करते चित्र गुज़रने लगे: पहले आइसबर्ग गुज़रा, फिर कोमब—अब वह मेरु ज्योति से चमकता, हमारी ओर पीठ किये खड़ा था और पहाड़ों की तरफ़ देख रहा था... कंपायमान, बेतुका, बिल्कुल नामुमकिन। पास ही दूसरा निकल आया था, उससे छोटा, देखते-देखते बड़ा होता जा रहा था, ऊपर उठ रहा था, झुक रहा था... बाप रे, कैसे करते हैं वे यह सब? कैसी शक्ति चाहिए इसके लिए और कैसी सामग्री है यह? क्या नज़ारा है!... अब ऐसे लग रहा था जैसे कोई भीमकाय तिलचट्टा पहाड़ों के पीछे छिपा हो और वहां से उसने अपनी मूंछें निकाल रखी हों। मैंने क्रास तार ऐसे बिंदु पर रोका कि एक ही प्रहार से दोनों लक्ष्य बींधे जा सकें। अब बस पैडल दबाने की देर थी।...

"चौकी!" वंडरहूज़ दहाड़ा।

"चौकी सुन रही है!"

"तैयार हो?"

"जी, तैयार हूं!"

वाह, क्या फ़ौजी अंदाज़ था हमारा।

"दोनों लक्ष्य देख रहे हो?" वंडरहूज़ ने सामान्य स्वर में पूछा।

"जी हां। एक ही प्रहार से दोनों को बींध सकता हूं।"

"गौर करो: चालीस अंश पूर्व की ओर तीसरा लक्ष्य है।"

मैंने देखा: वाकई, मेरु ज्योति के झिलमिलाते प्रकाश में एक और विराट मूंछ फड़फड़ा रही थी। यह मुझे कतई अच्छा नहीं लगा। प्रहार कर पाऊंगा कि नहीं? क्यों नहीं, करना चाहिए... मैंने मन ही मन यह अभ्यास किया कि कैसे मैं एक ऊर्जा-पुंज छोड़ता हूं और फिर एकदम तोप को तीसरे लक्ष्य की ओर घुमाता हूं। कोई नहीं, कर लूंगा।

"तीसरा लक्ष्य देख रहा हूं," मैं बोला।

"ठीक है," वंडरहूज़ ने कहा। "मगर तुम जोश में मत आओ। मेरे आदेश पर ही तोप चलाना।"

"जी, समझ गया," मैं बुदबुदाया।

उधर से वह यान पर कोई अपना वह... क्या कहते हैं उसे... दिक् विकारक या ऐसा ही कुछ छोड़ देगा तो बस तुम्हारे आदेश की इंतज़ार ही करते रह जायेंगे। मुझे अब खासे ज़ोर से कंपकंपी हो रही थी। मैंने मुट्ठियां कस लीं, ताकि अपनी मनोदशा पर काबू पा लूं। फिर मैंने सोचा, देखूं कोमव वहां कैसे है। कोमव भला-चंगा था। वह फिर से अपनी पहलेवाली मुद्रा में बैठा हुआ था, विराट तिलचट्टे की ओर बगल किये। मैं तुरंत ही शांत हो गया। इसलिए भी कि कोमव के पास ही छोटी सी काली आकृति अंततः मुझे नज़र आ गयी। मुझे तो अपने आप पर शर्म आने लगी।

यह अचानक क्या सोच बैठा मैं? आखिर इस तरह भयाक्रांत होने की कोई वजह भी थी? ठीक है, उसने मूंछें निकाल रखी हैं... माना, मूंछें विराट हैं, हैरतअंगेज़ हैं। पर, आखिर ये कोई मूंछें नहीं एंटेना जैसा कुछ होगा। हो सकता है वे बस हम पर नज़र रख रहे हों। हम उन पर नज़र रख रहे हैं, वे हम पर। बल्कि हम पर तो क्या अपने संरक्षित पर रख रहे होंगे—कैसे है वह यहां, उसे तंग तो नहीं कर रहे।...

वैसे सोचा जाये तो उल्कानाशी तोप बड़ी खतरनाक चीज़ है, उसे यहां इस्तेमाल न ही करना पड़े तो अच्छा है। अवतरण स्थली साफ़ करने के लिए किसी चट्टान को धूल में मिला देना या जलाशय बनाने के लिए दर्रे को पाट देना एक बात है, मगर इस तरह किसी जीते-जागते पर चलाना दूसरी ही बात है... क्या कभी प्रतिरक्षात्मक साधन के तौर पर इस तोप का इस्तेमाल हुआ है? हां, शायद हुआ है। एक बार, याद नहीं कहां की घटना है, मालवाहक स्वचालित यान अनियंत्रित हो गया था और कैम्प पर ही गिरनेवाला था, तब उसे जलाना पड़ा था। और फिर एक बार ऐसी घटना की भी जांच-पड़ताल हुई थी: किसी जैव सक्रियातावाले ग्रह पर टोही यान पर "जीवमंडल का लक्ष्यबद्ध अप्रतिरोध्य प्रभाव" पड़ने लगा था... पता नहीं सचमुच ऐसा हुआ था या नहीं, मगर कप्तान को ऐसा लगा था और उसने गलही की तोप चला दी थी। क्षितिज तक सब कुछ राख हो गया था, बाद में जांच करने गये विशेषज्ञ तक यह देखकर दंग रह गये थे। जहां तक मुझे याद है, उस कप्तान को उड़ानों के काम से हटा दिया गया।... हां, डरावनी चीज़ है यह तोप—अंतिम साधन है!

ऐसे विचारों की ओर से अपना ध्यान हटाने के लिए मैंने लक्ष्यों तक की दूरी और उनकी ऊंचाई व मोटाई की गणना की। दूरी थी: चौदह, साढ़े चौदह और सोलह किलोमीटर। ऊंचाई पांच सौ से सात सौ मीटर तक, मोटाई उनकी प्राय: एक जैसी थी: आधार के पास लगभग पचास मीटर, शिखर पर एक मीटर से कम। और वे तीनों ही गांठदार थे—बांस के जैसे। मुझे यह भी लगा कि उनकी सतह पर नीचे से ऊपर को कोई गति हो रही है, हो सकता है, यह प्रकाशीय भ्रम हो। मैंने यह अनुमान लगाने की कल्पना की कि ऐसी चीज़ जिस सामग्री की बनी होगी उसके गुण क्या होंगे—कुछ बात नहीं बनी। अगर उन्हें सैम्पल रडार से टटोला जा सके तो कितना अच्छा रहे, पर

नहीं, ऐसा नहीं किया जा सकता। कौन जाने वे इसका क्या मतलब लगायें। पर मुख्य बात यह नहीं थी। मुख्य बात तो यह थी कि यहां की सभ्यता टेक्नोलोजिकल प्रतीत होती थी—कोई अत्युन्नत सभ्यता। बस यही तो सिद्ध करना था। सिर्फ़ एक बात समझ में नहीं आती थी कि वे ज़मीन के तले क्यों जा छिपे हैं और अपने ग्रह को उन्होंने शून्य और नीरवता के राज में क्यों छोड़ दिया जाये। वैसे, सोचा जाये तो हर सभ्यता की सुख-सुविधाओं की अपनी धारणाएं होती हैं। वह तगोर ग्रह को ही लीजिये...

"चौकी!" वंडरहूज़ की दहाड़ कानों में यों गूंजी कि मैं चौंक गया। "लक्ष्य देख रहे हो?"

"लक्ष्य देख रहा हूं..." मैंने यंत्रवत उत्तर दिया, पर तभी ज़बान काट ली: पहाड़ों के ऊपर मूंछें नहीं थीं। "लक्ष्य नहीं हैं," बुझी आवाज़ में मैं बोला।

"चौकी पर बैठे सो रहे हो!"

"कहीं नहीं सो रहा... अभी-अभी वे मौजूद थे, अपनी आंखों से मैंने देखा था..."

"क्या देखा था तुमने?" वंडरहूज़ ने जानना चाहा।

"लक्ष्य। तीन लक्ष्य।"

"फिर?"

"गायब हो गये।"

"हुं..." वंडरहूज़ बोला। "अजीब है यह सब, क्या ख्याल है?"

"जी हां," मैंने सहानुभूतिपूर्वक कहा। "बहुत ही अजीब बात है। अभी-अभी मौजूद थे और फिर तुरंत ही ओझल हो गये।"

"कोमव लौट रहा है," वंडरहूज़ ने बताया। "शायद वह कुछ समझता हो।"

वाकई गले में केस लटकाये कोमव यान की ओर चला आ रहा था—उसकी चाल कुछ बेढब थी, शायद बैठे-बैठे टांगें सुन्न हो गयी होंगी। बीच-बीच में वह मुड़कर देखता

जा रहा था—प्येर सेम्योनोव से विदा ले रहा होगा, लेकिन प्येर सेम्योनोव नज़र नहीं आ रहा था।"

"ड्यूटी खत्म," वंडरहूज़ बोला। "सब कुछ छोड़-छाड़कर रसोई में जाओ और कुछ गरमागरम तैयार कर लो। गेन्नादी की तो कुलफ़ी जम गयी होगी, हालांकि आवाज़ से वह प्रसन्न लग रहा था, क्या ख्याल है, माया?"

मैं तुरंत ही रसोई में पहुंच गया और जल्दी-जल्दी ग्लिंटवाइन, कॉफ़ी और हल्का नाश्ता बनाने लगा। मुझे डर था कि कोमव जो कुछ बतायेगा उसमें से कहीं एक शब्द भी न छूट जाये। पर जब मैं ट्रॉली लेकर दौड़ा-दौड़ा रेडियो रूम में पहुंचा तो कोमव ने अभी कुछ भी नहीं बताया था। वह ठंड से जमे गाल रगड़ता मेज़ के सामने खड़ा था। मेज़ पर हमारे इलाके का सबसे बड़ा और विस्तृत मानचित्र बिछा हुआ था और माया उसे वे स्थान दिखा रही थी जहां से एंटेन निकले थे।

"यहां तो कुछ भी नहीं है!" माया उत्तेजित थी। "यहां ठंड से जमी चट्टानें हैं, सौ-सौ मीटर गहरे खड्ड हैं, ज्वालामुखीय गर्त हैं—और जीवन का कोई चिह्न नहीं है। दसियों बार मैंने यहां उड़ान भरी है। यहां कोई झाड़ी तक नहीं है।

कोमव ने अन्यमनस्क भाव से सिर हिलाकर आभार प्रकट किया, दोनों हाथों में ग्लिंटवाइन का चषक लिया और चेहरा उस पर झुकाकर आनंद से सूं-सूं करता गरम-गरम चुस्कियां लेने लगा।

"यहां ज़मीन भी भुरभुरी है," माया ने कहना जारी रखा, "वह ऐसी संरचना का भार नहीं सह सकती। उसमें तो दसियों, हज़ार या शायद लाखों टन वज़न होगा!"

"हां," कोमव ने कहा और चषक ज़ोर से मेज़ पर धर दिया। "क्या कहूं, विचित्र बात है।" उसने हाथ कसकर रगड़े। "बिल्कुल कुलफ़ी जम गयी," उसने बताया।

यह फिर से बिल्कुल दूसरा कोमव था—लाल-लाल गाल, लाल सुर्ख नाक, सहृदय, आंखों में चमक। "विचित्र बात है, मित्रो, बहुत ही विचित्र। परंतु यही सबसे विचित्र बात नहीं है—पराये ग्रहों पर क्या-क्या विचित्रताएं नहीं होतीं।" कुर्सी में ढहकर उसने टांगें पसार लीं। "आज मुझे चकित करना मुश्किल है। इन चार घंटों में मैंने क्या-क्या नहीं सुना है... बेशक, कुछ बातों की जांच करने की ज़रूरत है। पर, देखिये, दो आधारभूत तथ्य, जो कि एक तरह से सतह पर ही हैं। पहली बात मुन्ना... उसका नाम मुन्ना है... फर्राटे से बोलना और जो कुछ उसे कहा जाता है, प्रायः सब कुछ समझना सीख गया है। यह वह लड़का है, जिसने अपने सचेतन जीवन में कभी भी मनुष्यों से बातचीत नहीं की है!"

"फर्राटे से?" माया ने अविश्वासपूर्वक पूछा। "चार घंटे तक सिखाने पर ही फर्राटे से बोलने लग गया है?"

"हां, चार घंटे तक सिखाने पर ही फर्राटे से बोलने लग गया है!" कोमव ने सगर्व पुष्टि की। "पर यह पहली बात है। दूसरी बात, मुन्ने को पक्का विश्वास है कि वह इस ग्रह का एकमात्र निवासी है।"

हम समझे नहीं।

"एकमात्र क्यों?" मैंने पूछा। "एकमात्र कहां है वह?"

"मुन्ने को पक्का विश्वास है," कोमव ने ज़ोर देकर कहा, "कि उसके अलावा इस ग्रह पर एक भी बुद्धिसंपन्न निवासी नहीं है।"

खामोशी छा गयी। कोमव खड़ा हो गया।

"हमें बहुत काम है," वह बोला। "कल सुबह मुन्ना हमसे औपचारिक भेंट के लिए आने का इरादा रखता है।"

अध्याय छह

अमानव और प्रश्न

हम सारी रात काम करते रहे। डाइनिंग रूम में हमने डाइग्नोज़र और भावना-सूचक लगाया। मैंने और वंडरव्लूज़ ने जो कुछ उपलब्ध था उसी से यह मशीन बना डाली। मशीन खासी कमज़ोर थी और उसकी संवेदनशीलता गयी-गुज़री, पर फिर भी शरीरक्रिया संबंधी कुछ सूचनाएं वह न्यूनाधिक संतोषजनक ढंग से दर्ज करती थी, रही बात भावना-सूचक की तो वह केवल तीन प्रमुख अवस्थाएं ही दर्ज करता था: स्पष्टतः नकारात्मक भावनाएं (स्विच बोर्ड पर लाल बत्ती), स्पष्टतः सकारात्मक भावनाएं (हरी बत्ती) और शेष सभी (सफ़ेद बत्ती)। और किया भी क्या जा सकता था? मेडिकल रूम में अत्युत्तम डाइग्नोज़र लगा हुआ था, लेकिन यह तो बिल्कुल साफ़ था कि मुन्ना उसके वायुरोधी बॉक्स में लेटने को यों ही तैयार नहीं हो जायेगा। खैर, नौ बजते न बजते हमने सारा काम निबटा लिया, अब चौकी पर ड्यूटी देने का सवाल उठा।

यान के कप्तान के नाते वंडरव्लूज़ सुरक्षा के लिए उत्तरदायी था और वह ड्यूटी रद्द करने को हरगिज़ तैयार नहीं था। माया रात के आखिरी पहर में ड्यूटी देती रही थी, सो उसे उचित ही यह उम्मीद थी कि वह भेंट के समय उपस्थित होगी। लेकिन उसे निराश होना पड़ा। पता चला कि केवल वंडरव्लूज़ ही डाइग्नोज़र से ढंग से काम ले सकता है। यह भी पता चला कि डाइग्नोज़र की ट्यूनिंग किसी भी क्षण बिगड़ सकती है, और उसे सारा समय चालू रखने का काम सिर्फ़ मैं ही कर सकता हूं। अंततः यह भी पता चला कि अपने किन्हीं विजातिमानोवैज्ञानिक कारणों से कोमव मुन्ने के साथ पहली भेंट में नारी की उपस्थिति

अवांछनीय समझता था। कहने का मतलब यह कि जल-भुनकर कोयला होती माया फिर से चौकी पर पहरा देने चल दी। पूर्णतः शांतचित्त बना रहा वंडरव्रूज़ डाइग्नोजर का रिसीवर उसकी ओर लक्षित करने से नहीं चूका, सो कोई भी यह देख सकता था कि हमारा भावना-सूचक काम कर रहा है—लाल बत्ती तब तक जलती रही जब तक कि माया गलियारे में ओझल नहीं हो गयी। वैसे तो चौकी पर लगे इंटरकोम से डाइनिंग रूम हो रही सारी बातचीत सुनी जा सकती थी।

यान के समय के अनुसार सवा सौ बजे कोमव ने डाइनिंग रूम के बीचोंबीच निकलकर चारों ओर नजर डाली। सब कुछ तैयार था। डाइग्नोजर ट्यून कर दिया गया था और ऑन था, मेज़ पर भांति-भांति के पकवान सजे हुए थे, रोशनी वैसी कर दी गयी थी जैसा इस ग्रह पर दिन का प्रकाश था। कोमव ने संपर्क के समय आचरण के निर्देश संक्षेप में दोहराये, शरीरक्रिया संबंधी सूचनाएं दर्ज करनेवाला यंत्र ऑन कर दिया और हमसे अपने-अपने स्थान पर बैठने को कहा। हम बैठकर प्रतीक्षा करने लगे।

यान के समय के अनुसार नौ बजकर चालीस मिनट पर वह प्रकट हुआ।

दरवाज़े की चौखट को बायें हाथ से पकड़कर और दायां पांव पीछे मोड़कर वह खड़ा हो गया। प्रायः एक मिनट तक वह ऐसे ही खड़ा रहा और अपने निष्प्राण मुखौटे की झिरियों में से बारी-बारी हम सबको घूरता रहा। ऐसा सन्नाटा था कि मुझे उसकी सांस सुनायी दे रही थी—एकसार चलती, ज़ोरदार, खुली, मानो कोई सुचारु मशीन काम कर रही हो। पास से और तेज़ रोशनी में देखने. पर वह और भी अधिक विचित्र जान पड़ता था। उसमें सभी. कुछ तो अजीब था: उसका खड़े होने का ढंग भी, जो मनुष्य के लिए नितांत अस्वाभाविक था, पर उसके

लिए सहज लगता था, और उसकी चमकती, मानो पालिश की हुई हरी-नीली त्वचा भी, मांसपेशियों और कंडराओं की अवस्थिति में अप्रिय विषमता भी, असाधारणतः शक्तिशाली घुटने के जोड़ और आश्चर्यजनक ढंग से पतले व लंबे पांव भी। और यह बात भी कि वह कोई इतना छोटा नहीं था—माया जितना कद था उसका। यह भी कि उसके बायें हाथ की उंगलियों पर नाखून नहीं थे। और यह भी कि दायीं मुट्ठी में वह ताज़ी पत्तियां भींचे हुए था।

उसकी नज़र अंततः वंडरहूज़ पर टिक गयी। वह यों एकटक होकर और इतनी देर तक उसे देखता रहा कि मेरे दिमाग में यह बेतुका विचार उठ पड़ा: कहीं मुन्ना हमारे डाइग्नोज़र का प्रयोजन तो नहीं भांप गया—हमारे बांके कप्तान ने आखिर कुछ घबराकर अपने गलमुच्छों पर उंगली फेरी और निर्देश के बावजूद हौले से सिर झुका दिया।

"वंडरफ़ुल!" वंडरहूज़ की आवाज़ में मुन्ना ज़ोर से और स्पष्ट बोला। भावना-सूचक की हरी बत्ती टिमटिमाने लगी।

कप्तान ने फिर से बेचैनी से गलमुच्छों पर उंगली फेरी और विनय भाव से मुस्करा दिया। तुरंत ही मुन्ने का चेहरा जी उठा। वंडरहूज़ को एक के बाद एक बड़ी तेज़ी से बदलती कितनी ही डरावनी सूरतें देखने को मिलीं। उसके माथे पर पसीना आ गया। पता नहीं इसका अंत क्या होता, पर तभी मुन्ना चौखट से अलग हो गया, दीवार के पास जा रुका।

"यह क्या है," उसने पूछा।

"वीडियोफ़ोन," कोमव ने उत्तर दिया।

"हां," मुन्ना बोला। "सब कुछ चलता है, और कुछ नहीं है। चित्र हैं।"

"यह भोजन है," कोमव ने बताया। "लोगे?"

"भोजन अलग?" मुन्ने का सवाल हमारी समझ में

नहीं आया। वह मेज़ के पास आ गया। "यह भोजन है? लगता नहीं। गड़बड़ झाला।"

"कैसा नहीं लगता?"

"भोजन जैसा नहीं लगता।"

"चखकर देखो," पेस्ट्री की प्लेट उसकी ओर बढ़ाते हुए कोमव ने कहा।

तब मुन्ने ने सहसा घुटनों के बल गिरकर हाथ फैला दिये और मुंह खोल लिया। हम स्तब्ध रह गये, चुप्पी साधे बैठे रहे। मुन्ना भी हिल-डुल नहीं रहा था। उसकी आंखें बंद थीं। ऐसा कुछ सेकंड तक रहा, फिर वह एकाएक पीठ के बल लेट गया, फिर बैठा और एक द्रुत गति से उसने पत्तियां अपने सामने फ़र्श पर फैला दीं। उसके चेहरे पर फिर से लयबद्ध ऊर्मियां दौड़ने लगीं। उसकी उंगलियां बड़ी तेज़ी से और बहुत सटीकता से पत्तियों को हल्का सा स्पर्श करते हुए इधर-उधर घुमा रही थीं, बीच-बीच में वह अपने पांव से भी मदद लेता था। मैं और कोमव अपनी कुर्सियों से उठकर, गर्दन आगे निकालकर उसे देख रहे थे। पत्तियों से मानो स्वतः ही विचित्र डिज़ाइन बनते जा रहे थे, परंतु उनमें हम कोई साहचर्य नहीं पाते थे। पलांश को मुन्ना निश्चल हो गया और फिर सहसा एक द्रुत गति से उसने पत्तियों को ढेरी में बटोर लिया। उसका चेहरा जड़ हो गया।

"मैं समझ गया," वह बोला, "यह तुम्हारा भोजन है। मैं ऐसे नहीं खाता।"

"देखो, कैसे खाना चाहिए," कोमव बोला।

उसने हाथ बढ़ाकर पेस्ट्री ली, जान-बूझकर धीरे-धीरे उसे मुंह तक लाया, एक टुकड़ा काटा और दिखाते हुए जबड़े चलाने लगा। मुन्ने के जड़ चेहरे पर ऐंठन दौड़ गयी।

"नहीं!" वह प्रायः चीख उठा। "हाथ से मुंह में कुछ नहीं लेते! तकलीफ़ होगी!"

"तुम चखकर तो देखो," कोमव ने फिर से कहा, पर

तभी डाइग्नोज़र पर नज़र डालकर अपनी बात काट दी।
"तुम ठीक कहते हो। ऐसे नहीं करना चाहिए। तो अब हम क्या करेंगे?"

मुन्ना बायीं एड़ी पर बैठ गया और मधुर पुरुष कंठ में बोला:

"ललवा। बकवास। फिर से मुझे समझाओ: कब तुम लोग यहां से जा रहे हो?"

"अभी समझाना मुश्किल है," कोमव ने बड़ी कोमलता से कहा। "यह बहुत ज़रूरी है कि हम तुम्हारे बारे में सब कुछ जान लें। तुमने तो अभी अपने बारे में कुछ नहीं बताया। जब हम सब कुछ जान जायेंगे तो चले जायेंगे, अगर तुम यही चाहोगे।"

"तुम मेरे बारे में सब कुछ जानते हो," कोमव की आवाज़ में मुन्ना बोला। "तुम जानते हो कि मैं कैसे पैदा हुआ। तुम जानते हो कैसे मैं यहां पहुंचा। तुम जानते हो किसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूं। तुम मेरे बारे में सब कुछ जानते हो।"

मैं दंग रह गया, लेकिन लगता था कोमव ज़रा भी हैरान नहीं हुआ।

"तुम यह क्यों सोचते हो कि मैं यह सब जानता हूं?" उसने पूछा।

"मैंने विचार किया। मैं समझ गया।"

"यह तो कमाल है," शांत स्वर में कोमव बोला, "पर यह पूरी तरह से सही नहीं है। मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता कि हमारे आने से पहले तुम यहां कैसे रहते रहे हो।"

"जब मेरे बारे में सब कुछ जान लोगे तो तुरंत चले जाओगे?"

"हां, अगर तुम यही चाहते हो।"

"तो फिर पूछो," मुन्ना बोला। "जल्दी से पूछो, क्योंकि मैं भी तुमसे पूछना चाहता हूं।"

मैंने भावना-सूचक पर नज़र डाली, बस यों ही। और मैं बेचैन हो उठा। अभी-अभी वहां तटस्थ सफ़ेद बत्ती जल रही थी, और अब नकरात्मक भावनाओं की लाल सुर्ख बत्ती जलने लगी थी। कनखियों से मैंने देखा कि वंडरहूज़ के चेहरे पर भी परेशानी छलक रही है।

"पहले मुझे यह बताओ," कोमव बोला, "तुम इतनी देर तक छिपे क्यों रहे?"

"लश्टम," मुन्ने ने बिल्कुल स्पष्ट उच्चारण किया और दायीं एड़ी पर बैठ गया। "मैं बहुत पहले से जानता था कि मानव फिर से आयेंगे। मैं इंतज़ार कर रहा था, मुझे कष्ट हो रहा था। फिर मैंने देखा: मानव आ गये। मैं विचारने लगा और समझ गया, अगर मानवों से कह दें तो वे चले जायेंगे और तब कष्ट दूर हो जायेगा। अवश्य चले जायेंगे, पर मैं नहीं जानता था कब जायेंगे। मानव चार हैं। बहुत अधिक। एक भी बहुत अधिक है। पर चार से अच्छा। मैं एक के पास गया, रात को बातें कीं। गड़बड़ झाला। तब मैंने सोचा: एक मानव बात नहीं कर सकता। मैं चार मानवों के पास आया। बहुत मज़ा रहा, हम चित्रों से खेले, हम लहरों की भांति दौड़े। फिर से गड़बड़ झाला। शाम को मैंने देखा: एक मानव अलग बैठा है। तुम। मैंने सोचा और समझ गया: तुम मेरा इंतजार कर रहे हो। कलुआ बिल्ला! ऐसे हुआ।"

वह कोमव की आवाज़ में रुक-रुककर बोल रहा था, केवल भावहीन शब्दों का ही उच्चारण वह अपरिचित मधुर पुरुष कंठ में करता था। उसकी बांहें, उंगलियां पलांश को भी नहीं रुक रही थीं, वह स्वयं भी सारा समय गतिमान था, उसकी गतियां द्रुत और लोचमय थीं, वह एक मुद्रा से दूसरी में ढल जाता था। गज़ब का नज़ारा था यह: डाइनिंग रूम की जानी-पहचानी दीवारें, पेस्ट्रियों की वैनीला सुगंध, सब कुछ इतना घरेलू सा, केवल विचित्र बैंगनी रोशनी थी और इस रोशनी में फ़र्श पर यह छोटा सा

लचीला और द्रुत अजूबा। और स्विच बोर्ड पर जल रही थी चिंताजनक लाल बत्ती।

"तुम्हें कहां से पता था कि मानव फिर से आयेंगे?" कोमव ने पूछा।

"मैंने विचारा और समझ गया।"

"हो सकता है किसी ने तुम्हें बताया हो?"

"किसने? पत्थरों ने? सूरज ने? झाड़ियों ने? मैं अकेला हूं। मैं और मेरे चित्र। पर वे चुप रहते हैं। उनके साथ बस खेला जा सकता है। नहीं, मानव आये और चले गये।" उसने तेजी से फ़र्श पर कुछ पत्तियां इधर-उधर कीं। "मैंने सोचा और समझ गया।"

"अच्छा, तुम्हें कष्ट क्यों हो रहा था?"

"मानवों के कारण।"

"मानव कभी किसी का बुरा नहीं करते। मानव चाहते हैं कि चारों ओर सभी सुखी हों।"

"मैं जानता हूं," मुन्ना बोला। "मैंने कहा तो है: मानव चले जायेंगे और कष्ट नहीं रहेगा।"

"लोगों के किन कामों से तुम्हें कष्ट होता है?"

"सब से। वे हैं या वे आ सकते हैं—यह कष्ट है। वे सदा के लिए चले जायेंगे—यह सुख है।"

स्विच बोर्ड पर लाल बत्ती मेरे हृदय को बींध रही थी। मुझसे रहा न गया, मैंने हौले से मेज तले कोमव का पांव दबाया।

"तुम्हें कहां से पता चला कि अगर मानवों से कह दो तो वे चले जायेंगे?" मेरी ओर कोई ध्यान न देकर कोमव ने पूछा।

"मैं जानता था: मानव चाहते हैं कि चारों ओर सभी सुखी हों।"

"पर तुमने कैसे जाना? तुम तो कभी मानवों से मिले नहीं हो?"

"मैंने बहुत विचारा। देर तक समझ नहीं पाया। फिर समझ गया।"

"कब समझे थे? बहुत पहले?"

"नहीं, कुछ समय पहले ही। जब तुम झील से गये तो मैंने वहां मछली पकड़ी। मैं बहुत हैरान हुआ। वह पता नहीं क्यों मर गयी। मैं विचारने लगा और समझ गया अगर तुमसे कह दूं तो तुम अवश्य चले जाओगे।"

कोमव ने अपना निचला होंठ चबाया।

"मैं समुद्र के तट पर सो गया," अचानक वह बोला। "जब मैं जागा तो मैंने देखा: गीली रेत पर मेरे पास ही मानव के पांवों के निशान हैं। मैंने सोचा-विचारा और समझ गया: जब मैं सो रहा था तो मेरे पास से मानव गुजरा था। मुझे कैसे पता चला? मैंने तो मानव को देखा नहीं था, उसके पांवों के निशान ही देखे थे। मैंने विचार किया: पहले निशान नहीं थे, अब वे हैं, मतलब वे तब बने हैं जब मैं सो रहा था। ये मानव के निशान हैं—लहरों के निशान नहीं हैं, पहाड़ी से लुढ़क आये पत्थर के निशान नहीं। हम इस तरह विचारते हैं। तुम कैसे विचारते हो? मानव यहां आये। तुम उनके बारे में कुछ नहीं जानते हो। पर तुमने विचारा और जान गये कि यदि तुम उनसे बात कर लोगे तो वे अवश्य सदा के लिए चले जायेंगे। तुमने कैसे विचार किया?"

मुन्ना बहुत देर तक—कोई तीन मिनट तक चुप रहा। उसके मुख और वक्ष पर फिर से मांसपेशियों का नृत्य होने लगा। फुर्तीली उंगलियां पत्तियों को इधर-उधर चला रही थीं। फिर उसने पांव से पत्तियां परे धकेल दीं और मधुर कंठ में बोला:

"यह प्रश्न है। ढोल बजे ढम-ढम-ढम!"

वंडरहूज हौले से खांसा। मुन्ने ने तुरंत ही उस पर नजर डाली।

"कमाल है!" उसी स्वर में वह चिल्लाया। "मैं सदा जानना चाहता था: गालों पर लंबे बाल क्यों?"

चुप्पी छा गयी। सहसा मैंने देखा कि लाल बत्ती बुझ गयी और हरी जल उठी।

"उत्तर दीजिये, जैकब," कोमव ने शांत स्वर में अनुरोध किया।

"हुं..." वंडरहूज़ ने बोलना शुरू किया, उसके गालों पर लाली आ गयी थी। "क्या बताऊं, मेरे बच्चे..." उसने यंत्रवत उंगली फेरकर गलमुच्छे फुला लिये। "यह सुंदर है, मुझे भाता है... मैं सोचता हूं यही बहुत है, क्या ख्याल है तुम्हारा?"

"सुंदर है... भाता है..." मुन्ने ने दोहराया। "मुनुआ!" सहसा कोमल स्वर में वह बोला। "नहीं, तुमने मुझे समझाया नहीं। पर ऐसा होता है। केवल गालों पर ही क्यों? नाक पर क्यों नहीं?"

"नाक पर सुंदर नहीं लगते," वंडरहूज़ ने समझाते हुए कहा। "खाते समय मुंह में पड़ते हैं..."

"ठीक," मुन्ना सहमत था। "पर अगर गालों पर हैं और अगर झाड़ियों के बीच से जाओ तो उलझने चाहिए। मेरे बाल हमेशा झाड़ियों में उलझते हैं, हालांकि वे तो ऊपर हैं।"

"हुं," वंडरहूज़ बोला। "देखो न, मैं तो झाड़ियों में बहुत कम ही जाता हूं।"

"झाड़ियों में मत जाना," मुन्ना बोला। "दर्द होगा। ललवा!"

वंडरहूज़ को कुछ नहीं सूझा कि जवाब में क्या कहे, हां यह तो साफ़ नजर आता था कि वह प्रसन्न है। भावना-सूचक पर हरी बत्ती जल रही थी, मुन्ना अपनी सारी चिंताएं भूल गया था और हमारा बांका कप्तान, जिसे बच्चों से बहुत प्यार था, निश्चय ही भावविभोर हो रहा था। साथ ही वह इस बात से भी खुश लगता था कि

उसके गलमुच्छों ने, जो अभी तक कटाक्षों का ही विषय रहे थे, संपर्क में ऐसी उल्लेखनीय भूमिका अदा की थी। तभी मेरी बारी आ गयी। मुन्ने ने अचानक मेरी आंखों में आंखें डालकर देखा और बोला:

"और तुम?"

"मैं क्या?" मैंने पूछा। मैं बिल्कुल सकपका गया था सो खासी अक्खड़ता से पूछा था।

कोमव ने तुरंत ही मेरी टांग पर अपना पांव दे मारा—खासे ज़ोर से और प्रत्यक्षतः मज़ा लेते हुए।

"मैं तुमसे प्रश्न पूछना चाहता था," मुन्ना बोला। "सदा। पर तुम डरते थे। एक बार मुझे मार ही डालने लगे थे—फुफकारती हवा से प्रहार किया। मैं टीलों तक दौड़ता गया था। वह जो बड़ा-बड़ा, गरम, बत्तियोंवाला, ज़मीन सपाट करता है—वह क्या है?"

"मशीनें हैं," मैंने कहा और खंखारा। "साइबर।"

"साइबर," मुन्ने ने दोहराया। "सजीव हैं?"

"नहीं," मैं बोला। "वे मशीनें हैं। हमने उन्हें बनाया है।"

"बनाया है? इतनी बड़ी? और वे चलती हैं? कमाल है। पर वे तो इतनी बड़ी हैं?"

"इनसे भी बड़ी होती हैं," मैं बोला।

"इनसे भी बड़ी?"

"बहुत बड़ी," कोमव ने कहा। "आइसबर्ग से भी बड़ी।"

"वे भी चलती हैं?"

"नहीं," कोमव ने कहा। "वे सोचती हैं।"

और कोमव यह बताने लगा कि साइबरनेटिक मशीनें क्या होती हैं। मुन्ने के मनोमस्तिष्क में क्या हो रहा था कहना मुश्किल है। यदि यह मानकर चला जाये कि उसके मनोमस्तिष्क की हलचल किसी न किसी तरह शारीरिक गतियों में व्यक्त होती थी, तो मुन्ना पूरी तरह दंग रह

गया था। वह डाइनिंग रूम में बेतहाशा लोट रहा था। जब कोमव ने उसे यह समझाया कि क्यों मेरे साइबरों को न सजीव माना जा सकता है, न निर्जीव तो वह छत पर चढ़ गया और वहां हथेलियां और तलवे छत के प्लास्टिक से चिपकाकर निढाल लटक गया। ऐसी विराट मशीनों के बारे में जानकारी ने जो मानवों से अधिक तेज़ी से सोचती हैं, मानवों से अधिक तेज़ी से गणनाएं करती हैं, मानवों से करोड़ों गुना अधिक तेज़ी से प्रश्नों के उत्तर देती हैं—इस सूचना ने मुन्ने का गोला बनाकर उसे गलियारे में फेंक दिया और पल भर बाद हमारे पांवों में ला पटका—वह हांफ रहा था, आंखें उसकी फटी-फटी थीं, वह भयंकर सूरतें बना रहा था। न इससे पहले कभी और न ही बाद में मैंने कोई ऐसा कृतज्ञ श्रोता देखा है। भावना-सूचक की हरी बत्ती बिल्ली की आंख की तरह चमक रही थी, उधर कोमव बोलता ही जा रहा था—छोटे-छोटे, बिल्कुल सुस्पष्ट वाक्यों में, एकसार, नपी-तुली आवाज़ में, बीच-बीच में कुछ ऐसी रहस्यमय बातें जोड़ते हुए: "इसके बारे में हम बाद में अधिक विस्तार से बात करेंगे," या: "वास्तव में तो यह कहीं अधिक जटिल और रोचक है, परंतु तुम तो अभी यह भी नहीं जानते कि हेमोस्टेटिक्स क्या है।"

कोमव ने बोलना बंद किया ही था कि मुन्ना कुर्सी पर चढ़ बैठा, अपने शरीर को अपनी लंबी बांहों में भरकर पूछने लगा:

"क्या ऐसा कर सकते हैं कि मैं बोलूं और साइबर मेरी बात मानें?"

"तुम तो यह कर चुके हो," मैंने कहा।

वह छाया की भांति निस्स्वर हाथों के बल मेरे सामने मेज़ पर गिर पड़ा।

"कब?"

"तुम उनके सामने उछलते-कूदते थे और उनमें सबसे

बड़ा—उसका नाम टॉम है—रुक जाता था और तुमसे पूछता था कि क्या आदेश हैं।"

"मैंने प्रश्न क्यों नहीं सुना?"

"तुमने प्रश्न देखा था। याद है उसकी लाल बत्ती टिमटिमाती थी? वह प्रश्न था। टॉम अपने ढंग से पूछता था।"

मुन्ना फ़र्श पर लुढ़क गया।

"कमाल है!" वह हौले से मेरी आवाज़ में बोला। "यह खेल है। कमाल का खेल। लट्टू!"

"लट्टू का क्या मतलब है?" सहसा कोमव ने पूछा।

"नहीं जानता," मुन्ने ने अधीरता से कहा। "बस एक शब्द है। कलुआ बिल्ला! लट्टू!"

"तुम ये शब्द कहां से जानते हो?"

"मुझे याद हैं। दो बड़े-बड़े, प्यारे-प्यारे मानव। तुमसे बहुत बड़े। ढोल बजे ढम-ढम-ढम! लट्टू... ललवा। मरीया, मरीया! ललवे को भूख लगी है!"

सच मानिये, मेरे रोंगटे खड़े हो गये, वंडरहूज़ के चेहरे का रंग उड़ गया, गलमुच्छे लटक गये। मुन्ना मधुर पुरुष कंठ में ये शब्द चिल्ला रहा था: आंखें बंद कर लो तो लगे तुम्हारे सामने कोई हृष्ट-पुष्ट, जीवन के उल्लास से भरपूर, निडर, शक्तिशाली और सहृदय व्यक्ति खड़ा है... फिर उसके स्वर में कुछ परिवर्तन आ गया और अकूत स्नेहमिश्रित स्वर में वह धीरे से बोला:

"मेरी रानो, मेरी जान..." और सहसा स्निग्ध नारी स्वर में: "झुनझुनवा!... फिर गीला हो गया..."

अपनी नाक पर उंगली पटपटाते हुए वह चुप हो गया।

"तुम्हें यह सब याद है?" किंचित बदल गये स्वर में कोमव ने पूछा।

"बिल्कुल," कोमव की आवाज़ में मुन्ना बोला। "तुम्हें क्या सब कुछ याद नहीं?"

"नहीं," कोमव बोला।

"ऐसा इसलिए है कि तुम मेरी तरह नहीं सोचते-विचारते," मुन्ने ने पूरे विश्वास के साथ कहा। "मुझे सब कुछ याद है। मेरे आस-पास कभी भी जो कुछ हुआ, वह सब मैं नहीं भूलूंगा। अगर मैं भूल जाता हूं तो अच्छी तरह विचारने पर सब याद आ जाता है। अगर मेरे बारे में जानने में दिलचस्पी है तो मैं बाद में बता दूंगा। अभी मुझे उत्तर दो: ऊपर क्या है? तुमने कल कहा था: तारे। तारे क्या हैं? ऊपर से पानी गिरता है। कभी-कभी मैं नहीं चाहता तो भी वह गिरता है। कहां से आता है वह? और यान कहां से आते हैं? बहुत सारे प्रश्न हैं, मैंने बहुत विचारा है। इतने सारे उत्तर हैं, मैं कुछ नहीं समझ पाता। नहीं, ऐसे नहीं। तरह-तरह के बहुत सारे उत्तर हैं, और वे सब एक दूसरे में उलझे हुए हैं, जैसे पत्तियां..." उसने फ़र्श पर पत्तियों की बेतरतीब ढेरी लगा दी। "एक दूसरी को बंद करती हैं, आड़े आती हैं। तुम उत्तर दोगे?"

कोमव बताने लगा और मुन्ना फिर से उत्तेजना के मारे लोटने लगा। मेरी आंखें चुंधियाने लगीं, मैंने पलकें मूंद लीं और सोचने लगा कि मूलनिवासियों ने मुन्ने को ऐसी सीधी-सादी बातें भला क्यों नहीं समझायीं, कैसे वह उसे ऐसा उल्लू बनाते रहे हैं कि उसे उनके अस्तित्व का अहसास तक नहीं है; और मुन्ने ने बचपन में जो सुना था वह तक उसे कैसे याद है; और यह सब कितना भयानक है—खास तौर पर यह बात कि उसे जो याद है उसको वह समझता नहीं है।

तभी कोमव सहसा चुप हो गया, मेरे नथुनों में अमोनिया की तीखी गंध चुभी और मैंने आंखें खोल दीं। मुन्ना डाइनिंग रूम में नहीं था, केवल हल्की सी, बिल्कुल पारदर्शी प्रेतच्छाया फ़र्श पर बिखरी पत्तियों के ऊपर विलीन हो रही थी। हैच की झिल्ली की धीमी सी छपाक सुनायी दी। इंटरकोम पर माया चिंतित स्वर में पूछ रही थी:

"कहां दौड़ा जा रहा है? कुछ हो गया क्या?"

मैंने कोमव पर नज़र डाली, वह विचारमग्न मुस्करा रहा था।

"हां," वह बोला। "बड़ी दिलचस्प तस्वीर बन रही है।... माया!" उसने आवाज़ दी। "मूंछें निकली थीं?"

"पूरी आठ," माया ने कहा। "अभी अभी गायब हुई हैं, पल भर पहले तक सारी पर्वत श्रेणी के ऊपर फैली हुई थीं... थीं भी रंग-बिरंगी—पीली, हरी... मैंने कुछ फ़ोटो खींच लिये हैं।"

"शाबाश," कोमव बोला। "अब, माया, अगली भेंट में तुम्हें अवश्य उपस्थित होना होगा।... जैकब, आप सूचना-लेख उठा लीजिये, मेरे कमरे में चलते हैं। और पपोव, आप..." वह उठकर उस कोने में गया जहां वीडियो रिकर्डिंग ब्लॉक था। "यह लीजिये कैसट, अर्जेंट संवेग में सीधे केंद्र को संप्रेषित कर दीजिये। डुप्लिकेट मैं ले लूंगा, विश्लेषण करना चाहिए।... यहां कहीं मैंने प्रोजेक्टर देखा था। यह रहा। मैं सोचता हूं हमारे पास तीन-चार घंटे हैं, इसके बाद वह फिर से लौट आयेगा। हां, पपोव! ज़रा रेडियो संदेश भी देख लेना। अगर कोई काम का हो तो। केवल केंद्र या बेस कैम्प से, या गर्बोव्स्की अथवा म्वोगा का।"

"आपने कहा था," कुर्सी से उठते हुए मैं बोला, "आपको सीदोरोव से बात करनी है।"

"अरे हां!" कोमव के चेहरे पर अपराध भाव आ गया। "पपोव, वैसे तो यह कानूनी काम नहीं है... मेरी खातिर, रिकार्डिंग एक साथ दो चैनलों पर ट्रांसमिट कर दीजिये: केंद्र को ही नहीं, सीदोरोव को भी—केवल सीदोरोव के लिए, गोपनीय। ज़िम्मेदारी मेरी।"

"ज़िम्मेदारी मैं भी ले सकता हूं," दरवाज़े के बाहर मैं बड़बड़ाया।

रेडियो रूम में जाकर मैंने कैसट स्वचालित ट्रांसमीटर

में लगाया, उसे ऑन किया और रेडियो संदेश देखे। इस बार थोड़े से ही थे: केवल तीन, प्रत्यक्षत:, केंद्र ने आवश्यक कदम उठा लिये थे। एक संदेश सूचनालय से था और उसमें अंक, यूनानी वर्ण और कुछ चिह्न ही थे, जिन्हें मैंने प्रिंटर सेट करते समय देखा था। दूसरा संदेश केंद्र से था: बादेर फिर से यह मांग कर रहा था कि मूलनिवासियों के वास के अन्य संभाव्य क्षेत्रों, ब्यूल के वर्गीकरण के अनुसार आगामी संपर्क के संभाव्य प्रकारों आदि के बारे में कोमव अपने आरंभिक अनुमान बताये। तीसरा संदेश बेस कैम्प से था, सीदोरोव का: सीदोरोव ने कोमव द्वारा मंगाये गये उपकरणों को संपर्क क्षेत्र में पहुंचाने की व्यवस्था के बारे में अधिकारिक रूप से पूछताछ की थी। मैंने दिमाग लड़ाया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि पहले संदेश की कोमव को आवश्यकता हो सकती है; तीसरा उसे न देना सीदोरोव के प्रति अशिष्टता होगी, दूसरा संदेश अभी पड़ा रह सकता है। कैसे आरंभिक अनुमान?

आधे घंटे बाद ट्रांसमीटर ने संप्रेषण समाप्त होने का संकेत दिया। मैंने कैसट निकाला, रेडियो संदेश के दो कार्ड उठाये और कोमव के पास चल दिया। मैं पहुंचा तो कोमव और वंडरहूज़ प्रोजेक्टर के सामने बैठे थे। पर्दे पर मुन्ना बिजली की रफ़्तार से आगे-पीछे दौड़ रहा था, कोमव का और मेरा तनावपूर्ण चेहरे नज़र आ रहे थे। वंडरहूज़ पर्दे की ओर झुका, अपने गलमुच्छे मुट्ठियों में भींचे बैठा था।

"तापमान तेज़ी से बढ़ा है," वह बोल रहा था। "तैंतालीस डिग्री तक पहुंच रहा है... अब मस्तिष्कलेख की ओर ध्यान दीजिये... यह रही पीटर्स तरंग, फिर से आ रही है।"

उसके सामने मेज़ पर हमारे डाइग्नोज़र द्वारा अंकित सूचनाओं के रोल फैले हुए थे, कई सारे रोल फ़र्श पर और पलंग पर बिखरे हुए थे।

"हुं..." रोल पर उंगली चलाते हुए कोमव विचारमग्न कह रहा था। "हुं... एक मिनट, यहां क्या था?" उसने प्रोजेक्टर रोक दिया, एक रोल उठाने के लिए मुड़ा और मुझे देखा। "हां?" बड़े रूखे ढंग से वह बोला।

मैंने रेडियो संदेश उसके सामने रख दिये।

"क्या है यह?" उसने अधीरता से पूछा। "अच्छा..." सूचनालय के संदेश पर सरसरी नज़र डालकर उसे एक ओर फेंक दिया। "जो चाहिए वह नहीं है," वह बोला, "वैसे, उन्हें पता भी क्या..." फिर उसने सीदोरोव का संदेश देखा और नज़रें मेरी ओर उठायीं।

"आपने उसे भेज दी?"

"जी हां।"

"अच्छी बात है, धन्यवाद। मेरी ओर से संदेश भेजिये कि उपकरण फ़िलहाल नहीं चाहिए।"

"अच्छा," इतना कहकर मैं बाहर आ गया।

संदेश लिखकर मैंने बेस कैम्प को भेज दिया, और फिर सोचा, देखूं माया क्या कर रही है। खिन्न माया बड़े जतन से डिस्क घुमा रही थी। जहां तक मैं समझ पाया वह दूर-दूर स्थित लक्ष्यों पर तोप का निशाना साधने का अभ्यास कर रही थी।

"कुछ नहीं होने का," मुझे देखकर वह बोली। "यदि उन सबने एक साथ हम पर हमला कर दिया तो हमारा काम तमाम। हम जवाब नहीं दे पायेंगे।"

"पहली बात प्रहार का कोण बढ़ाया जा सकता है," मैंने सहज बनते हुए कहा। "बेशक, कारगरता तीन-चार कोटि कम हो जायेगी, लेकिन एक चौथाई क्षितिज कवर हो जायेगा, यहां दूरियां तो बहुत ज़्यादा हैं नहीं। दूसरी बात, क्या तुम्हें वाकई विश्वास है कि वे हम पर हमला कर सकते हैं?"

"और तुम्हें?"

"कोई आसार तो नहीं लगते..."

"तो फिर मैं यहां किसलिए बैठी हूं?"

मैं उसकी कुर्सी के पास फ़र्श पर बैठ गया।

"सच पूछो तो मैं नहीं जानता," मैंने कहा। "परंतु पर्यवेक्षण तो हर हालत में करना होगा। चूंकि ग्रह पर जैव सक्रियता का पता चला है, सो निर्देशों का पालन करना होगा। प्रहरी-टोही छोड़ने की तो अनुमति मिली नहीं।..."

थोड़ी देर तक हम चुप बैठे रहे।

"तुम्हें उस पर दया आती है?" सहसा माया ने पूछा।

"कह नहीं सकता," मैं बोला। "पर दया क्यों? मैं तो कहूंगा लोमहर्षक है। दया तो... आखिर मुझे उस पर दया क्यों आये? वह जीता-जागता है, चुस्त है... दयनीय तो ज़रा भी नहीं।"

"मैं इसकी बात नहीं कर रही। समझ में नहीं आता कैसे कहूं। मैं सारी बातचीत सुन रही थी, कोमव जिस ढंग से उससे बातें कर रहा था उससे मुझे घिन आ रही थी। उसे तो लड़के की कोई परवाह ही नहीं है।"

"क्या मतलब परवाह नहीं है? कोमव को संपर्क स्थापित करना है। वह निश्चित नीति के अनुसार काम कर रहा है... तुम समझती तो हो कि मुन्ने के बिना हम संपर्क नहीं स्थापित कर सकते..."

"मैं समझती हूं। इसीलिए शायद मुझे इतना बुरा लग रहा है। मुन्ना तो मूलनिवासियों के बारे में कुछ नहीं जानता... बेचारा औज़ार भर है!"

"भई, मैं नहीं जानता," मैं बोला। "मेरे ख्याल में तुम भावुक हो रही हो। आखिर वह मानव नहीं है। वह यहां का निवासी है। हम उसके साथ संपर्क स्थापित कर रहे हैं। इसके लिए किन्हीं बाधाओं पर पार पाना होगा, कुछ रहस्य सुलझाने होंगे... ऐसे संतुलित, कामकाजी ढंग से इसे देखना चाहिए। भावनाओं की यहां कोई बात नहीं है। उसे भी तो हमसे कोई प्रेम-व्रेम नहीं है, न हो सकता है। आखिर संपर्क है क्या? दो नीतियों की टक्कर।"

"उफ़," माया बोली। "बड़े बोर हो तुम। क्या तोते की तरह बोल रहे हो। तुम्हें तो बस रोबोटों के प्रोग्राम ही बनाने चाहिए। साइबरटेक्नीशियन!"

मैंने उसकी बात का बुरा नहीं माना। मैं देख रहा था कि आपत्ति करने का उसके पास कोई तर्क नहीं है, और यह भी महसूस कर रहा था कि उसके दिल को कोई बात कचोट रही है।

"फिर तुम्हारे वही पूर्वाभास," मैं बोला। "परंतु वास्तव में तो तुम खुद भी अच्छी तरह समझती हो कि मुन्ने इन अदृश्यों से हमें जोड़नेवाला एकमात्र सूत्र है। अगर हम मुन्ना को न भायें, यदि हम उसे न जीत पायें..."

"बस-बस," माया ने मुझे टोक दिया, "यही तो सारी बात है। कोमव चाहे कुछ भी कहे, कुछ भी करे, फ़ौरन महसूस होता है कि उसकी दिलचस्पी केवल एक बात में है, संपर्क में। सब कुछ केवल ऊर्ध्व प्रगति के महान विचार के लिए।"

"तो फिर कैसे करना चाहिए?" मैंने पूछा।

उसने कंधा उचका दिया।

"मैं नहीं जानती। शायद जैकब की तरह... जो भी हो, अकेले उसने ही मुन्ने से मानवीय ढंग से बातचीत की।"

"तुम भी क्या..." मुझे यह कुछ-कुछ बुरा लगा, "गलमुच्छों के स्तर पर संपर्क, हुं..."

हम एक दूसरे से नाराज़ चुप बैठे रहे। माया बड़े यतन से डिस्क घुमा रही थी, काले क्रॉस तीर को पर्वत श्रेणी के हिमाच्छादित शिखरों पर लक्षित कर रही थी।

"सच बताओ, माया," अंततः मैं बोला। "तुम क्. यह नहीं चाहती हो कि संपर्क स्थापित हो जाये?"

"शायद चाहती हूं," बिना किसी उत्साह के वह बोली। "तुमने देखा ही था, पहली बार जब हम समझे कि माजरा क्या है तो मैं कितनी खुश हुई थी... पर अब

यह बातचीत सुनी है... पता नहीं। शायद, इसकी वजह यह है कि मैंने संपर्कों में कभी भाग नहीं लिया... मैं तो इसकी कल्पना ऐसे नहीं करती थी।"

"नहीं," मैं बोला। "बात यह नहीं है। मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूं कि तुम्हारे दिल में क्या हो रहा है। तुम सोचती हो कि वह मानव है।..."

"तुम पहले भी यह कह चुके हो," माया ने कहा।

"नहीं, तुम पूरी बात सुनो। तुम्हारा ध्यान हर समय उसमें मानव से समानता की ओर जाता है। पर तुम इसे दूसरे पहलू से देखो। प्रेतच्छायाओं की बात हम नहीं लेते—उसमें हमारे जैसा है क्या? कुछ हद तक मिलता-जुलता रूप, सीधा चलना और स्वर तंतु... और क्या? उसकी तो मांसपेशियां भी हमारे जैसी नहीं हैं, हालांकि यह बात तो सीधे जीनों से ही निर्धारित होती है... तुम्हें बस यह बात उलझन में डाल रही है कि वह बोलता है। वाकई, बहुत अच्छा बोलता है... पर यह भी, अंततोगत्वा, उसमें मानवीय गुण नहीं है। कोई भी मानव चार घंटे में फर्राटे से बोलना नहीं सीख सकता। बात केवल शब्द भंडार की नहीं है... मैं तो कहूंगा यह प्रेत है। जरा सोचो तो: मां की गोद में और शायद कोख तक में जो कुछ हुआ वह सब याद होना... यह क्या मानवीय गुण है?... तुमने कभी एंड्रायड रोबोट देखे हैं? कहां देखे हैं, मैंने देखे हैं।"

"तो क्या हुआ?" माया ने पूछा।

"यह कि सिद्धांततः आदर्श एंड्रायड रोबोट केवल मानव से बनाया जा सकता है। उसकी चिंतनशक्ति अतिशय होगी, शक्ति अतिशय होगी, भावनाएं अतिशय होंगी, सभी कुछ अतिशय होगा, वह होगा भी सुपरमैन—अतिमानव, लेकिन मानव नहीं..."

"तुम क्या यह कहना चाहते हो कि मूलनिवासियों

ने उसे रोबोट बना दिया है?" कटु मुस्कान के साथ माया बोली।

"नहीं, बाबा," मैं झल्लाकर बोला। "मैं तो तुम्हें बस यह समझाना चाहता हूं कि उसमें जो कुछ भी मानवीय है, वह सब मात्र संयोग है, वह तो बस मूल सामग्री का गुण है... उसे लेकर भावुक होने की कोई जरूरत नहीं। यह समझो कि तुम्हारी वार्ता इन रंगीन मूंछों से हो रही है..."

अचानक माया ने मेरा कंधा पकड़ लिया और दबी आवाज़ में बोली:

"देखो, लौट रहा है!"

मैंने उचककर स्क्रीन पर नज़र डाली। टेढ़ी-मेढ़ी आकृति तेज़ी से कदम बढ़ाती दलदल से सीधे यान की ओर दौड़ती आ रही थी। उसके आगे-आगे ज़मीन पर छोटी सी काली-बैंगनी छाया चल रही थी, टांड़ पर उठी जटाएं लाल सी लग रही थीं। बड़ी टोकरी जैसी कोई चीज़ उसने अपनी लंबी बांहों में भर रखी थी और पेट से सटा रखी थी। उसमें ऊपर तक कंकड़-पत्थर भरे हुए थे। खासी भारी रही होगी टोकरी।

माया ने इंटरकोम ऑन किया।

"चौकी—कोमव को," वह ज़ोर से बोली। "मुन्ना आ रहा है।"

"समझ गया," कोमव ने तुरंत ही उत्तर दिया। "जैकव, अपने-अपने स्थान पर चलिये... पपोव, चौकी पर माया का स्थान लीजिये। माया डाइनिंग रूम में आइये।"

माया अनमनी सी उठी।

"जाओ, जाओ," मैंने कहा। "जाकर पास से देख ल उसे, दयामूर्ति।"

गुस्से से फुफकारकर वह सीढ़ियां चढ़ गयी। मैं उसकी कुर्सी पर बैठ गया। मुन्ना बिल्कुल पास आ गया था। उसने अपनी दौड़ धीमी कर दी थी और यान को देख रहा था,

फिर से मुझे लगा कि वह मेरी आंखों में आंखें डालकर देख रहा है।

तभी मैंने देखा: सुरमई-बैंगनी आकाश में पर्वत शिखरों के ऊपर दानवाकार तिलचट्टों की दानवाकार मूंछें प्रकट हो गयीं—मानो हवा में से निकल आयीं। कल की ही तरह वे धीरे-धीरे मुड़ और कांप रही थीं। मैंने छह मूंछें गिनीं।

"चौकी!" कोमव ने मुझे पुकारा। "क्षितिज पर कितनी मूंछें हैं?"

"छह," मैंने उत्तर दिया। "तीन सफ़ेद, दो लाल, एक हरी।"

"देखा आपने, जैकव," कोमव बोला। "कड़ी नियमबद्धता है। मुन्ना हमारे पास आता है तो मूंछें बाहर निकल आती हैं।"

वंडरहूज़ की दबी-दबी आवाज़ आयी:

"आपकी दूरदर्शिता की दाद देता हूं, फ़िलहाल ड्यूटी लगाये रखना ज़रूरी समझता हूं।"

"यह आपका हक है," कोमव ने बस इतना ही कहा। "माया, इधर बैठिये..."

मैंने रिपोर्ट दी:

"मुन्ना अदृश्य क्षेत्र में पहुंच गया है। अपने साथ पत्थरों से भरी टोकरी ला रहा है।"

"समझ गया," कोमव बोला। "तो साथियो, तैयार हो जाओ!"

मैं पूरी तरह चौकन्ना हो गया और जब इंटरकोम से ज़ोरों की गड़गड़ाहट सुनायी दी तो ज़ोर से ठिठका। मैं तुरंत ही नहीं समझ पाया कि मुन्ने ने अपने सारे कंकड़-पत्थर फ़र्श पर बिखेर दिये हैं। उसकी प्रबल सांस मुझे सुनायी दे रही थी, सहसा एक बाल स्वर गूंजा:

"मां!" और फिर से: "मां!"

इसके बाद साल भर के बच्चे की वह जानी-पहचानी रोने की आवाज़ सुनायी दी। पिछली बार की याद से मेरा

कलेजा सिहर उठा, और तभी मैं समझ गया कि यह क्या है: मुन्ने ने माया को देखा है। आधे मिनट से अधिक यह नहीं चला: रुदन रुक गया, फिर से पत्थरों की गड़गड़ाहट हुई और कोमव की आवाज़ आयी:

"एक सवाल है। मुझे हर बात में रुचि क्यों है? चारों ओर जो कुछ है उस सब में। सदा नये-नये प्रश्न मुझमें क्यों उठते रहते हैं? मुझे तो उनसे कष्ट होता है—दिन में बीस प्रश्न। मैं बचने की कोशिश करता हूं: दौड़ता हूं, सारा दिन दौड़ता या तैरता रहता हूं—नहीं बच पाता। तब मैं विचारने लगता हूं। कभी-कभी उत्तर आता है। यह चैन है। कभी अनेक उत्तर आते हैं, मैं चुन नहीं पाता। यह बेचैनी है। कभी उत्तर नहीं आता। यह मुसीबत है। बहुत खुजली होती है। गड़बड़ झाला। पहले मैं सोचता था प्रश्न अंदर से आते हैं। पर मैंने विचारा और समझ गया: अंदर से जो कुछ आता है उसे मुझे चैन देना चाहिए। मतलब, प्रश्न बाहर से आते हैं? ठीक है? मैं तुम्हारी तरह विचार रहा हूं। पर तब ये प्रश्न कहां रखे हुए हैं, कहां लटके हुए हैं—इनका बिंदु कहां है?"

विराम। फिर से कोमव की आवाज़ आयी—सच्चे कोमव की। दोनों आवाजें बहुत मिलती-जुलती थीं, बस असली कोमव ऐसे रुक-रुककर, झटके से नहीं बोलता था और उसकी आवाज़ इतनी तीखी नहीं थी। यदि पता हो कि मामला क्या है तो पहचाना जा सकता था।

"मैं अभी तुरंत ही तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं," कोमव धीमे-धीमे बोला। "पर मुझे डर है मैं गलती न कर बैठूं। मुझे डर है कि मैं तुम्हें गलत उत्तर न दे दूं या ऐसा उत्तर जो पूरी तरह सही न हो। जब मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ पता चल जायेगा तो मैं सही-सही उत्तर दे सकूंगा।"

विराम। फ़र्श पर चलाये जा रहे पत्थरों की आवाज़ आयी।

"फर्राटा," मुन्ना बोला। "एक और प्रश्न है। उत्तर कहां से आते हैं? तुमने मुझे सोचने पर विवश किया है। मैं सदा यही मानता था: उत्तर है तो चैन है, उत्तर नहीं है—तो मुसीबत है। तुमने मुझे बताया कि तुम कैसे विचारते हो। मैं याद करने लगा और मुझे याद आ गया—मैं भी अकसर ऐसे ही विचारता हूं और अकसर उत्तर आ जाता है। यह दिखायी देता है कि वह कैसे आता है। मैं कंकड़ रखने की चीज़ ऐसे बनाता हूं। ऐसी ("टोकरी"—कोमव ने बताया।) हां, टोकरी। एक टहनी दूसरी में फंसती है, दूसरी तीसरी में, तीसरी आगे और यह बन जाती है... टोकरी। दिखायी देता है कैसे बनती है। पर अकसर मैं विचारता हूं," फिर से कंकड़ों का शोर हुआ, "और उत्तर तैयार हो जाता है। टहनियों की ढेरी है और अचानक टोकरी तैयार हो गयी। क्यों?"

"इस प्रश्न का उत्तर भी मैं तभी दे सकूंगा," कोमव बोला, "जब तुम्हारे बारे में मुझे सब कुछ पता चल जायेगा।"

"तो पता करो!" मुन्ने ने मांग की। "जल्दी से पता करो! पता क्यों नहीं करते? मैं अपने आप बताता हूं। एक यान था, तुम्हारे यान से बड़ा, अब वह सिकुड़ गया है, पर था बहुत बड़ा। तुम यह जानते हो। फिर ऐसे हुआ।"

इंटरकोम से कर्ण भेदी तड़तड़ सुनायी दी और तुरंत ही असह्य ऊंची तान में बच्चा चीखा। इस चीख, शांत होती तड़तड़, प्रहारों और टूटते कांच की आवाज़ के पीछे से दम तोड़ते पुरुष की घरघराती आवाज़ आयी:

"मरीया... मरीया..."

बच्चा रो-रोकर बेहाल हो रहा था, कुछ समय तक और कुछ नहीं सुनायी दिया। फिर सरसराहट हुई, दबी सी कराह आयी। कोई टूटे कांच और धातु के टुकड़ों से भरे

फ़र्श पर रेंग रहा था, कोई चीज़ झनझनाती हुई लुढ़की। भयावह हद तक परिचित नारी स्वर कराहा:

"शूरा... कहां हो, शूरा... दर्द हो रहा है... क्या हो गया? कहां हो तुम? मुझे कुछ नहीं दिख रहा, शूरा... जवाब दो न, शूरा! हाय, कितना दर्द है! मेरी मदद करो, मुझे कुछ नहीं दिख रहा..."

और इस सब के पीछे बच्चे का अनवरत रुदन। फिर स्त्री शांत हो गयी, कुछ समय बाद बच्चा भी चुप हो गया। मैंने गहरी सांस ली और देखा कि मेरी मुट्ठियां कसकर भिंची हुई हैं, नाखून हथेली में गहरे चुभ गये हैं। मेरे जबड़े सुन्न हो गये थे।

"बहुत देर तक ऐसे रहा," मुन्ना बोला। "मैं चीखते-चीखते थक गया। मैं सो गया। जब जागा तो अंधेरा था, पहले की तरह। मुझे ठंड लग रही थी। मुझे भूख लगी थी। मेरी इच्छा थी मुझे कुछ खाने को मिले और गरमाहट हो, इतनी प्रबल इच्छा थी कि ऐसे ही हो गया।"

इंटरकोम से ध्वनियों का झरना बह निकला—बिल्कुल अपरिचित ध्वनियों का। कोई निरंतर बढ़ती एकसार गूंज, अक्सर होती चटचट, प्रतिध्वनि जैसा कोई नाद; प्रायः श्रव्यता की सीमा पर मंद्र बुदबुदाहट; चीं-चीं, चरमराहट, भिनभिन, ताम्र ताल, चटख... यह सब बहुत देर तक चलता रहा, कुछ मिनट तक। फिर तुरंत ही खामोशी छा गयी और मुन्ने ने कुछ-कुछ हांफते हुए कहा:

"नहीं। ऐसे मैं नहीं बता पाऊंगा। ऐसे तो मैं उतने समय तक बताता रहूंगा, जितने समय से देख रहा हूं। क्या करूं?"

"और किसी ने तुम्हें खाना दे दिया? किसी ने तुम्हें गरमा दिया?" कोमव ने अविचलित स्वर में पूछा।

"जैसी मेरी इच्छा थी वैसा हो गया। तब से सदा वैसे

ही होता था जैसी मेरी इच्छा होती थी। जब तक पहला यान नहीं आया।"

"यह क्या था?" कोमव ने पूछा और मेरे ख्याल में ध्वनियों की उस खिचड़ी की, जो अभी-अभी हमने सुनी थी, अच्छी खासी नकल की।

विराम।

"हां, समझ गया," मुन्ना बोला। "तुम्हें बिल्कुल नहीं आता—पर मैं समझ गया। पर मैं उत्तर नहीं दे सकता। तुम्हारे पास भी तो इसके नाम के लिए शब्द नहीं हैं। तुम तो मुझसे अधिक शब्द जानते हो। मुझे शब्द दो। तुमने मुझे बहुत सारे मूल्यवान शब्द दिये, पर वे सब इसके लिए नहीं हैं।"

विराम।

"उसका रंग क्या था?" कोमव ने पूछा।

"कोई नहीं। रंग तब होता है जब आंखों से देखो। वहां आंखों से नहीं देख सकते।"

"वहां कहां?"

"मेरे यहां। गहराई में। ज़मीन के नीचे।"

"वहां स्पर्श से कैसा लगता है?"

"बहुत अच्छा," मुन्ने ने कहा। "चैन। आनंद। कलुआ बिल्ला। मेरे यहां सबसे अच्छा है। ऐसा तब तक था जब तक मानव नहीं आये।"

"तुम वहां सोते हो?" कोमव ने पूछा।

"मैं वहां सब कुछ करता हूं। सोता हूं, खाता हूं, विचारता हूं। बस खेलता यहां हूं, क्योंकि मुझे आंखों से देखना अच्छा लगता है। वहां खेलने के लिए जगह तंग है। जैसे पानी में, उससे भी अधिक तंग।"

"पर पानी में तो सांस नहीं लिया जा सकता," कोमव ने कहा।

"क्यों नहीं? लिया जा सकता है। खेला भी जा सकता है। पर तंग जगह है।"

विराम।

"अब तुम्हें मेरे बारे में सब कुछ पता चल गया?" मुन्ने ने जानना चाहा।

"नहीं," कोमव ने दृढ़तापूर्वक कहा। "मुझे तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं पता चला। तुम देख तो रहे हो—हमारे पास समान शब्द नहीं हैं। हो सकता है तुम्हारे पास अपने शब्द हों?"

"शब्द..." मुन्ने ने धीरे-धीरे दोहराया। "यह वह जब मुंह चलता है, फिर कानों से सुनायी देता है। नहीं। यह केवल मानवों में है। मैं जानता था कि शब्द हैं, क्योंकि मुझे याद हैं। ढोल बजा ढम-ढम-ढम। यह क्या है? मैं नहीं जानता। पर अब मैं जानता हूं कि बहुत से शब्द किसलिए हैं। पहले नहीं जानता था। बोलना आनंद था। एक खेल।"

"अब तुम जानते हो कि 'सागर' शब्द का क्या अर्थ है," कोमव बोला, "पर सागर तुम पहले भी देखते थे। तुम उसे क्या कहते थे?"

विराम।

"मैं सुन रहा हूं," कोमव बोला।

"क्या सुन रहे हो? किसलिए? मैंने कह दिया। ऐसे नहीं सुना जा सकता। यह तो अंदर है।"

"शायद तुम दिखा सकते हो?" कोमव बोला। "तुम्हारे पास कंकड़ हैं, टहनियां हैं..."

"कंकड़, टहनियां दिखाने के लिए नहीं हैं," मुझे लगा कि मुन्ना कुछ गुस्से में बोला। "कंकड़ और टहनियां विचारने के लिए हैं। भारी प्रश्न हो तो कंकड़ और टहनियां। यदि पता न हो कि प्रश्न कैसा है तो पत्तियां। यहां बहुत सी चीजें हैं। पानी, बर्फ़—वह अच्छी तरह पिघलती है, इसलिए..." मुन्ना चुप हो गया। थोड़ी देर बाद बोला: "शब्द नहीं हैं। बहुत सारी चीजें हैं। बाल... और भी ऐसा बहुत कुछ, जिसके लिए शब्द नहीं हैं। पर यह वहां है, मेरे यहां।"

10 1001

भारी उसांस सुनायी दी। मेरे ख्याल में वंडरहूज की थी।

अचानक माया ने पूछा:

"तुम्हारे चेहरे पर जो गतियां होती हैं वह क्या हैं?"

"मां..." मुन्ने ने दुधमुंहे बच्चे के कोमल स्वर में कहा। "चेहरा, हाथ, शरीर," माया की आवाज़ में वह आगे बोला, "ये भी विचारने के लिए चीज़ें हैं। ऐसी चीज़ें अनेक हैं। गिनाना मुश्किल है।"

विराम।

"क्या करें?" मुन्ने ने पूछा। "तुमने सोच लिया?"

"सोच लिया," कोमव ने उत्तर दिया। "तुम मुझे अपने यहां ले चलोगे। मैं देखूंगा और तुरंत ही बहुत कुछ जान जाऊंगा। शायद सभी कुछ पता चल जायेगा।"

"इस पर मैंने सोचा है," मुन्ना बोला। "मैं जानता हूं कि तुम मेरे यहां जाना चाहते हो। मेरी भी इच्छा है, पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। यह प्रश्न है! जब मेरी इच्छा होती है तो मैं सब कुछ कर सकता हूं। पर मानवों के मामले में नहीं। मैं नहीं चाहता कि वे हों, पर वे हैं। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे यहां आओ, पर ऐसा नहीं कर सकता। मानव मुसीबत हैं।"

"मैं समझ गया," कोमव बोला, "तो फिर मैं तुम्हें अपने यहां ले चलता हूं। चलोगे?"

"कहां?"

"अपने यहां। वहां जहां से मैं आया हूं। पृथ्वी पर, जहां सभी मानव रहते हैं। वहां मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जान सकूंगा और बहुत जल्दी ही।"

"पर वह तो दूर है," मुन्ना बोला। "या मैं तुम्हारी बात समझा नहीं?"

"हां, बहुत दूर है," कोमव ने कहा। "पर मेरा यान..."

"नहीं!" मुन्ना बीच में ही बोल उठा। "तुम समझते

नहीं हो। मैं दूर नहीं जा सकता। मैं तो थोड़ी दूर भी नहीं जा सकता, बहुत दूर तो बिल्कुल ही नहीं जा सकता। एक बार मैं हिमखंड पर खेल रहा था। सो गया। डर के मारे जाग पड़ा। बहुत बड़ा डर था, विराट डर। मैं तो चीख उठा। फर्राटा! हिमखंड सागर में चला गया था, मुझे पहाड़ों की चोटियां ही नजर आ रही थीं। मैंने सोचा कि सागर जमीन को निगल गया है। बेशक, मैं लौट आया। मेरी प्रबल इच्छा थी, सो हिमखंड तुरंत वापस तैरने लगा तट की ओर। पर अब मैं जानता हूं मुझे दूर नहीं जाना है। मैं डर ही नहीं रहा था। मुझे कष्ट हो रहा था। जैसे भूख से होता है, उससे भी बहुत ज्यादा। नहीं, मैं तुम्हारे यहां नहीं जा सकता।"

"अच्छा, ठीक है," कोमव के स्वर में कृत्रिम प्रफुल्लता थी। "शायद तुम उत्तर देते और सुनाते-सुनाते तंग आ गये हो। मैं जानता हूं, तुम्हें प्रश्न पूछना अच्छा लगता है। तुम पूछो, मैं उत्तर दूंगा।"

"नहीं," मुन्ना बोला। "मैं तुमसे बहुत से प्रश्न पूछना चाहता हूं। पत्थर क्यों गिरता है? गरम पानी क्या है? उंगलियां दस क्यों हैं, जबकि गिनती के लिए एक ही चाहिए? अनेक प्रश्न हैं। पर मैं अब नहीं पूछूंगा। अभी कष्ट हो रहा है। तुम मेरे यहां नहीं आ सकते, मैं तुम्हारे यहां नहीं जा सकता। मतलब, तुम मेरे बारे में सब कुछ नहीं जान सकते। गड़बड़ झाला! मतलब, जा नहीं सकते। मैं विनती करता हूं: सोचो, क्या करना चाहिए। अगर तुम तेजी से नहीं सोच सकते, तो अपनी मशीनों को सोचने दो, जो करोड़ गुना तेज सोचती हैं। मैं जा रहा हूं। बातें करते हुए विचारा नहीं जा सकता। जल्दी जल्दी विचारो, क्योंकि आज मुझे कल से ज्यादा कष्ट हो रहा है, कल परसों से ज्यादा हो रहा था।"

एक पत्थर घड़घड़ाता हुआ लुढ़क गया। वंडरहूज ने फिर से लंबी आह भरी। मैं पलक भी न झपकने पाया

था कि मुन्ना निर्माण स्थली के पार टीलों की ओर दौड़ा जा रहा था। मैंने उसे उड़ान पट्टी पार करते देखा और फिर वह एकाएक अंतर्ध्यान हो गया, मानो वहां था ही नहीं। उसी क्षण, मानो किसी के आदेश पर, चोटियों के ऊपर रंग-बिरंगी मूंछें विलुप्त हो गयीं।

"हां," कोमव बोला। "कोई उपाय नहीं है। जैकव, कृपया सीदोरोव को रेडियो संदेश भेज दीजिये कि उपकरण यहां भेज दे, मुझे लगता है मेंटोस्कोप के बिना काम नहीं चलेगा।"

"अच्छा," वंडरहूज़ ने कहा, "पर, गेन्नादी, मैं एक बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं... इस सारी बातचीत के दौरान एक बार भी हरी बत्ती नहीं जली।"

"मैंने देखा है," कोमव का जवाब था।

"पर ये मात्र नकारात्मक भावनाएं नहीं हैं, प्रखर नकारात्मक भावनाएं हैं।"

कोमव का उत्तर मुझे सुनायी नहीं दिया।

सारी शाम और आधी रात तक मैं चौकी पर पहरा देता रहा। न शाम को और न ही रात को मुन्ना फिर आया। मूंछें भी नहीं दिखीं। और माया भी।

अध्याय सात

प्रश्न और संदेह

नाश्ते के समय कोमव बहुत बातें कर रहा था। मुझे लगा रात को वह बिल्कुल भी नहीं सोया था। उसकी आंखें लाल थीं, गाल धंस गये थे, पर वह प्रसन्न और उत्तेजित था। वह कड़क चाय के कप पर कप पी रहा था और हमें अपने आरंभिक अनुमान और निष्कर्ष बता रहा था।

वकौल कोमव के, इस बात में कोई संदेह नहीं रह

गया था कि मूलनिवासियों ने बालक के शरीर में आमूल परिवर्तन किये थे। वह आश्चर्यजनक साहसी और जानकार प्रयोगकर्ता थे: उन्होंने उसकी शरीरक्रिया और अंशतः शरीर-रचना भी बदल दी थी, उसके मस्तिष्क के सक्रिय क्षेत्र में अकल्पनीय विस्तार किया था, यही नहीं उसमें कुछ नये शरीरक्रियात्मक क्रियातंत्रों का समावेश किया था, जिनका विकास पृथ्वी के समसामयिक विज्ञान की दृष्टि से फ़िलहाल असंभव था। इन शरीररचनात्मक एवं प्रक्रियात्मक परिवर्तनों का प्रयोजन, संभवतः, कोई पहेली नहीं है: वे निस्सहाय मानव शिशु को यहां की दुनिया में अस्तित्व की पूर्णतः अमानवीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाना चाहते थे। यह बात स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने केंद्रीय तंत्रिका-तंत्र के काम में ऐसा गंभीर हस्तक्षेप क्यों किया है। बेशक, यह माना जा सकता है कि ऐसा संयोगवश ही हो गया, शरीर रचनात्मक एवं क्रियात्मक परिवर्तनों के आनुषंगिक परिणाम के रूप में। परंतु यह भी माना जा सकता है कि उन्होंने लक्ष्यबद्ध रूप से मानव मस्तिष्क में अंतर्निहित गुप्त क्षमताओं का उपयोग किया है। यदि ऐसा है तो इससे अनुमानों का एक पूरा सिलसिला बनता है। उदाहरणतः, उन्होंने मुन्ने की शैशव की सभी यादों और छापों को इसलिए ज्यों का त्यों बनाये रखने की कोशिश की ताकि यदि वह पुनः मानव समाज में पहुंच जाये तो उसके लिए अनुकूलन आसान हो। वाक़ई, मुन्ना आश्चर्यजनक आसानी से हमारे साथ हिल-मिल गया है, हम उसे न कुरूप लगते हैं, न भयावह जीव। परंतु इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि मुन्ने की अथाह स्मरणशक्ति और उसके ध्वनि उच्चारण केंद्रों का अद्‌भुत विकास भी उसके मस्तिष्क में किये गये परिवर्तनों का परिणाम है। मुमकिन है, मूलनिवासियों ने सर्वप्रथम अपने और मुन्ने के केंद्रीय तंत्रिका-तंत्र के बीच स्थिर मानसिक संबंध स्थापित करने की चेष्टा की हो। इसकी तो पूरी-पूरी संभावना है कि ऐसा

संबंध वास्तव में है। अन्यथा, इन तथ्यों की और क्या व्याख्या हो सकती है कि उसके मस्तिष्क में एकाएक, तर्केतर ढंग से प्रश्नों के उत्तर प्रकट होते हैं, कि उसकी सभी सचेतन और यहां तक कि अवचेतन इच्छाएं अनिवार्यतः पूरी हो जाती हैं। लोगों के आने के सिलसिले में मुन्ना जिस तीव्र मानसिक तनाव की दशा में है उसे भी शायद ऐसा ही तथ्य मानना चाहिए। स्वयं मुन्ना यह समझाने में असमर्थ है कि उसे मानवों के आने से क्या परेशानी है। परेशानी मूलनिवासियों को है। यहां हम मूलनिवासियों की प्रकृति पर आते हैं।

साधारण तर्क से यह अनुमान लगता है कि मूलनिवासी या तो सूक्ष्म जीव हैं या अतिविराट—जो भी हो वे मुन्ने के शारीरिक आकार से अतुलनीय हैं। यही कारण है कि मुन्ना उन्हें अपने प्राकृतिक परिवेश का अंश ही मानता है। ("जब मैंने उससे मूंछों के बारे में पूछा तो मुन्ने ने बड़ी उदासीनता से उत्तर दिया कि वह उन्हें पहली बार देख रहा है, पर वह रोजाना ही कुछ न कुछ पहली बार देखता है। ऐसी परिघटनाओं को कोई संज्ञा देने के लिए हम शब्द नहीं ढूंढ़ पाये"।) स्वयं कोमव का अनुमान यह है कि मूलनिवासी कोई अतिविराट अवयवी हैं, जो मानवाभों से भी और मानव को अब तक मिली अमानवाभ संरचनाओं से भी अत्यंत दूर हैं। हम उनके बारे में अभी तक अत्यल्प जानकारी पा सके हैं। हमने देखा है: क्षितिज पर भयावह निर्मितियां (या फिर अवयव?), जिनका प्रकट और लुप्त होना मुन्ने के हमारे यहां आने के साथ जुड़ा हुआ है। हमने सुना है: वे ध्वनियां, जिनका मुन्ने ने अपने "घर" का वर्णन करते हुए उच्चारण किया और जिनसे हमारे मस्तिष्क में कोई साहचर्य उत्पन्न नहीं होता। हमने समझा है: मूलनिवासी सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के अत्युच्च स्तर पर हैं—इस बात को देखते हुए कि एक साधारण मानव शिशु को उन्होंने क्या बना दिया है। बस, यही सब

कुछ है। हमारे पास तो अभी प्रश्न भी थोड़े से ही हैं, हालांकि ये प्रश्न आधारभूत हैं। मूलनिवासियों ने मुन्ने को किसलिए बचाया और किसलिए उसका पालन कर रहे हैं, उन्होंने उसमें दिलचस्पी ही क्यों ली, उनका उससे वास्ता ही क्या था? वे मानवों को कहां से जानते हैं—जानते भी खूब अच्छी तरह हैं, उनके मनोविज्ञान और समाजविज्ञान के आधारभूत तत्वों का उन्हें ज्ञान है। यह सब होते हुए भी वे मानवों से संसर्ग को इतनी दृढ़ता से अस्वीकार क्यों करते हैं? क्या कारण है कि एक ओर जहां ज्ञान का स्तर इतना ऊंचा है, वहीं दूसरी ओर किसी भी तरह के बौद्धिक क्रियाकलाप के कोई चिह्न नहीं हैं? या फिर ग्रह की वर्तमान शोचनीय दशा इस क्रियाकलाप का परिणाम ही है? या फिर यह दशा केवल हमारी दृष्टि से शोचनीय है? बस, यही प्रमुख प्रश्न हैं। कोमव इस बारे में अपने कुछ विचार रखता है, परंतु उसके ख्याल में फ़िलहाल उन्हें व्यक्त करना असामयिक होगा।

बहरहाल, इतना तो स्पष्ट है कि यह जो खोज हुई है यह अत्यंत महत्वपूर्ण खोज है, इसका उपयोग करना आवश्यक है, परंतु उपयोग मुन्ने की मध्यस्थता से ही संभव है। शीघ्र ही मेंटोस्कोप और दूसरी विशेष मशीनें आ जायेंगी। उनका शत प्रतिशत लाभ हम तभी उठा सकेंगे जबकि मुन्ना हम पर पूरी तरह विश्वास करेगा, यही नहीं, उसे हमारी काफ़ी सख्त जरूरत महसूस होगी।

"मैंने तय किया है कि आज उसके साथ संपर्क नहीं करूंगा," खाली कप एक ओर सरकाते हुए कोमव बोला। "आज आपकी बारी है। पपोव, आप उसे अपना टॉम दिखाना। माया, आप उसके साथ गेंद खेलेंगी, ग्लाइडर पर उसे ले जायेंगी। कोई संकोच मत करिये, मित्रो, सहज ढंग से हंसिये-खेलिये! कल्पना करिये कि वह आपका मेधावी छोटा भाई है... जैकब, आपको चौकी पर ड्यूटी देनी होगी। आखिर आप ही ने यह ड्यूटी लगायी है... हां,

अगर मुन्ना किसी तरह आपके पास पहुंच गया तो ज़रा हिम्मत बांध लीजियेगा और उसे अपने गलमुच्छे छूने दीजियेगा—वड़ी दिलचस्पी दिखा रहा है वह उनमें। मैं मकड़ी की तरह छिपकर इस सब पर नज़र रखूंगा और सब कुछ दर्ज करता जाऊंगा। सो, नौजवानो, "तीसरी आंख" पहनना मत भूलियेगा। अगर मुन्ना मेरे बारे में पूछे तो कह देना मैं सोच रहा हूं। उसे गाने सुनाइये, फ़िल्म दिखाइये... पपोव, उसे केलकुलेटर दिखाना, बताना कैसे वह काम करता है, उसके साथ गिनती करने का मुकाबला करना, मैं सोचता हूं यहां आप कुछ आश्चर्यजनक बातें पायेंगे।... हां, और उसे ज़्यादा से ज़्यादा सवाल पूछने दीजिये। जितने ज़्यादा पूछे, उतना अच्छा है.... तो चलिये, सब अपने-अपने काम में लग जायें।"

वह उठा और तुरंत भाग गया। हमने एक दूसरे की ओर देखा।

"कोई सवाल, मि० साइबरटेक्नीशियन?" माया ने पूछा। भावशून्य स्वर में उसने पूछा, उसका लहजा ज़रा भी दोस्ताना नहीं था। सुबह से ये पहले शब्द थे। आज उसने 'सुप्रभात' भी नहीं कहा था।

"नहीं, मिस क्वार्टरमास्टर," मैंने कहा। "कोई प्रश्न नहीं हैं, मिस। आप दिखायी दे रही हैं, आपकी आवाज़ सुनायी नहीं दे रही।"

"वह तो सब ठीक है," विचारमग्न वंडरहूज़ बोला। "गलमुच्छों का मुझे अफ़सोस नहीं है। पर!"

"पर ही तो!" माया उठते हुए बोली।

"मैं बताना चाहता था," वंडरहूज़ आगे बोला, "कल शाम को गर्बोव्स्की का रेडियो संदेश आया था। उसने बड़ी विनम्रता से, परंतु बिना किसी अस्पष्टता के कोमव से अनुरोध किया कि वह संपर्क स्थापित करने में जल्दबाजी मत दिखाये। उसने फिर से इशारा किया कि हमारे साथ काम करके उसे खुशी होगी।"

"कोमव ने क्या जवाब दिया?" मैंने पूछा।

वंडरहूज ने सिर ऊपर उठाया और अपना बायां गलमुच्छा सहलाते हुए नाक के ऊपर से मुझ पर नजर डाली।

"कोमव ने इस पर अनादर प्रकट किया," वंडरहूज ने बताया। "बेशक, ज़बानी ही। उत्तर इस आशय का दिया कि परामर्श के लिए आभारी हूं।"

"और?" मैं बोला। मुझे गर्वोव्स्की को देख पाने की बहुत उत्सुकता थी। कभी उसे ढंग से नहीं देखा था।

"और बस," वंडरहूज भी उठते हुए बोला।

माया और मैं शस्त्रागार में गये। वहां 'तीसरी आंख' वाले प्लास्टिक के चौड़े छल्ले ढूंढ़कर उन्हें माथे पर लगा लिया—ये एकाकी टोहियों के लिए ऐसे पोर्टेबल टेलीट्रांसमीटर हैं ताकि टोही जो कुछ देखता और सुनता है वह सारी सूचना निरंतर संप्रेषित होती रहे। सीधी-सादी पर बड़ी सूझ-बूझ से बनायी गयी चीज़ है, अभी कुछ समय पहले ही इसे इ० आर० यानों के साज-सामान में शामिल किया गया है। छल्ले को ठीक-ठाक करने में काफ़ी उलझना पड़ा ताकि वह कनपटियों पर कसे नहीं, न नाक पर गिरे और न लैंस पर हुड आये। यह सब करते हुए मैं पूरे जतन से चुटकियां ले रहा था, माया को उकसा रहा था ताकि वह मेरा मज़ाक उड़ाये, बस यह समझिये कि किसी तरह उससे कुछ बुलवाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहा था। सब बेकार—माया उखड़ी हुई थी, चुप थी या ज़्यादा से ज़्यादा हां-ना में ही जवाब दे देती थी। वैसे तो माया को उदासी के ऐसे दौरे पड़ते रहते हैं, ऐसे मौकों पर उसे अकेली छोड़ देना ही सबसे अच्छा होता है। पर अब मुझे लग रहा था कि वह खिन्न नहीं, बल्कि नाराज़ है, और नाराज़ भी मुझसे है; पता नहीं क्यों मुझे अपराध बोध हो रहा था और मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं।

फिर माया अपने केबिन में गेंद ढूंढ़ने चली गयी, मैंने

टॉम को बाहर निकाला और अवतरण पट्टी पर दौड़ा दिया। सूरज निकल आया था, रात का पाला कुछ कम हो गया था, तो भी काफ़ी ठंड थी। मेरी नाक तुरंत ही जम गयी। ऊपर से समुद्र की ओर से हल्की, मगर चुभती हवा बह रही थी। मुन्ना कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

मैंने टॉम को पट्टी पर थोड़ा दौड़ाया, ताकि उसकी जड़ता दूर हो जाये। टॉम मेरे ऐसे ध्यान से फूला न समा रहा था और बार-बार मुझसे आदेश मांग रहा था। फिर माया गेंद ले आयी और हम खेलने लगे ताकि ठंड से अकड़ न जायें। पांचेक मिनट तक हम खेलते रहे, सच पूछें तो खूब अच्छा रहा। मुझे उम्मीद थी कि माया अपनी आदत के मुताबिक खेलते समय जोश में आ जायेगी, लेकिन यहां भी मेरे सारे प्रयास निष्फल रहे। आखिर मैं तंग आ गया और मैंने सीधे-सीधे पूछ लिया कि आखिर हुआ क्या है। माया ने गेंद ज़मीन पर रख दी, उस पर बैठकर फ़रकोट समेटा और सिर लटका लिया।

"आखिर हुआ क्या है?" मैंने फिर से पूछा।

माया ने मेरी ओर देखकर मुंह मोड़ लिया।

"कुछ तो जवाब दो," मुझे गुस्सा आने लगा था।

"हवा चल रही है," भटकती नज़रों से आकाश को देखते हुए वह बोली।

"क्या?" मैंने पूछा। "कैसी हवा?"

उसने 'तीसरी आंख' के लैंस के पास अपने माथे पर उंगली टकटकायी और बोली:

"कवु-कद्व ककवा-कहीं कके। कह-कमा-करी कवा-कतें कनु-कन कर-कहे कहूं।"

"कवु-कद्व कतो कतु-कम कहो," मैंने जवाब दिया। "कवा-कहां कतो कद्रां-कस-कले-कटर कहै..."

"ठीक कहते हो," माया बोली। "यही तो मैं कह रही हूं: हवा चल रही है।"

"हां," मैंने हामी भरी। "वाकई हवा चल रही है।"

मुझे लगा जैसे मेरी जीभ पर किसी ने ताला लगा दिया है। थोड़ी देर तक चुप खड़ा मैं बातचीत का कोई अन्य विषय सोचता रहा, पर ले-देकर हवा की ही बात दिमाग में आ रही थी। तभी मुझे यह सूझा कि क्यों न घूमा जाये। एक बार भी यहां आस-पास की जगहों में मैं घूमा नहीं था—यहां आये हफ़्ता हो चला था, पर ढंग से इस ज़मीन पर खड़ा भी नहीं हुआ था, बस मॉनीटरों पर ही उसे देखता रहा था। साथ ही इस बात की संभावना थी कि झुरमुटों में कहीं मुन्ना मिल जाये, खास तौर पर यदि वह स्वयं मिलना चाहेगा, यह तो खुशी की ही नहीं, काम के लिए उपयोगी बात भी होगी: उसके परिचित परिवेश में उससे बातचीत हो जायेगी। ये विचार मैंने माया को बताये। वह चुपचाप उठी और दलदल की ओर चल दी। फ़र के कालर में नाक छिपाकर और हाथ जेबों में गहरे धंसाकर मैं भी उसके पीछे हो लिया। कृतज्ञता से अभिभूत टॉम भी मेरे पीछे आने लगा, पर मैंने उसे यहीं रहने और आगे के आदेशों का इंतज़ार करने को कहा।

बेशक हम दलदल में नहीं गये, झाड़ियों के झुरमुट से होते हुए उसका चक्कर काटते आगे बढ़े। यहां की वनस्पतियां भी कैसी मनहूस थीं: बदरंग, मरियल, मुरझायी सी नीलछौंहीं पत्तियां, जिनमें धात्विक चमक थी, गांठदार भंगुर टहनियां, धब्बेदार नारंगी छाल। विरली ही कोई झाड़ी मेरे जितनी ऊंची थी, सो वंडरफ़्लूक के गलमुच्छों के लिए यहां शायद ही कोई खतरा था। पांवों तले पुरानी पत्तियों की मोटी परत थी, जिसमें रेत मिली हुई थी। छाया में तुषार चमक रहा था। यह सब होते हुए भी इन वनस्पतियों को देखकर मन में आदर भाव उठता था। कितना कठिन होगा यहां उगना: रात को तापमान शून्य से बीस सेंटीग्रेड नीचे तक चला जाता है, दिन में विरले ही शून्य से ऊपर जाता है, जड़ों तले केवल खारी रेत है। मैं

नहीं सोचता कि पृथ्वी की कोई वनस्पति ऐसी निरानंद परिस्थितियों के अनुकूल ढल पायेगी। यह कल्पना करना भी विचित्र लगता था कि इन ठिठुरी झाड़ियों के बीच कहीं तुषाराच्छादित बालू पर नंगे पांव नंगा मानव घूमता फिरता है।

दायीं ओर के घने झुरमुट में मुझे हलचल का अहसास हुआ। मैंने रुककर आवाज़ दी: "मुन्ना!" लेकिन कोई जवाब नहीं आया। हमारे चारों ओर बर्फ़ीला सन्नाटा था। न पत्तियों की मर्मर, न कीड़े-मकोड़ों की भिनभिन—इस सब से विचित्र अनुभूति होती थी मानो हम किसी सजे हुए विराट रंगमंच पर भटक रहे हों। गरम दलदल से निकली कोहरे की लंबी जिह्वा का चक्कर काटकर हम पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पहाड़ी क्या बालुई टीला ही था, जिस पर झाड़ियां उग आयी थीं। हम जितनी ऊपर चढ़ते जा रहे थे, हमारे पांवों तले बालुई सतह उतनी ही कठोर होती जा रही थी। शिखर पर पहुंचकर हमने चारों ओर नज़र दौड़ायी। हमारा यान कोहरे के बादलों के पीछे छिपा हुआ था, लेकिन अवतरण पट्टी अच्छी तरह दिख रही थी। उसके बीचोंबीच रखी रह गयी गेंद का काला धब्बा नज़र आ रहा था। भारी भरकम टॉम किंकर्तव्यविमूढ़ सा उसके गिर्द चक्कर काट रहा था—प्रत्यक्षतः दुस्साध्य प्रश्न हल कर रहा था: इस फ़ालतू की चीज़ को पट्टी से हटा दे, या फिर मानव से छूट गयी इस चीज़ के लिए मौका पड़ने पर जान दे दे।

तभी मुझे जमी हुई रेत पर पदचिह्न दिखे—रुपहले तुषार के बीच काले, नम पदचिह्न। मुन्ना यहां से गुज़रा था, थोड़ी देर पहले ही। टीले के शिखर पर बैठा रहा था, फिर उठकर ढलान पर नीचे चल दिया था, यान से दूर। पदचिह्न टीलों के बीच तलहटी में फैले झुरमुटों की ओर चले गये थे। "मुन्ना!" मैंने फिर से पुकारा और फिर से उसने जवाब नहीं दिया। तब मैं नीचे उतरने लगा।

मैंने तुरंत ही उसे ढूंढ़ लिया। बालक औंधे मुंह लेटा हुआ था, सारा बदन फैलाये, गाल ज़मीन से सटाये और

सिर हाथों में थामकर। वह यहां बड़ा ही विचित्र लग रहा था, बिल्कुल ही असंभव, इस बर्फ़ीले दृश्य से उसका ज़रा भी मेल नहीं बैठता था। पल भर को तो मैं डर गया, कहीं कुछ हो तो नहीं गया। यहां बहुत ही ठंड थी और सब कुछ बहुत ही अप्रिय। उसके बगल में पंजों के बल बैठकर मैंने उसे पुकारा, फिर जब वह चुप रहा तो फिर उसके नितंबों पर हल्की सी चपत मारी। मैंने पहली बार उसे छुआ था और यह स्पर्श इतना अप्रत्याशित था कि मेरे मुंह से चीख निकलते-निकलते बची: वह मुझे इस्तरी की तरह तपा हुआ लगा।

"उसने उत्तर सोच लिया?" सिर उठाये बिना मुन्ने ने पूछा।

"वह विचार रहा है," मैं बोला। "कठिन प्रश्न है।"

"मुझे कैसे पता चलेगा कि उसने सोच लिया है?"

"तुम आना और वह तुरंत तुम्हें बता देगा।"

"मां-मां," सहसा मुन्ना बोला।

मैंने सिर उठाया, माया पास ही खड़ी थी।

"मां-मां," हिले-डुले बिना मुन्ने ने फिर से कहा।

"हां, मेरे मुनुआ," माया हौले से बोली।

मुन्ना बैठ गया—लेटने की मुद्रा बैठने की मुद्रा में बदल गयी।

"फिर से कहो!" उसने मांग की।

"हां, मेरे मुनुआ," माया बोली। उसका चेहरा फक हो गया।

"कमाल है!" नीचे से ऊपर को माया पर नज़र डालते हुए मुन्ना बोला। "लट्टू!" मैं खांसा।

"हम तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे, मुन्ना," मैं बोला।

वह मेरी ओर देखने लगा। बड़ी मुश्किल से मैं अपने को नज़रें चुराने से रोक पाया। खासा डरावना था उसका चेहरा।

"तुम मेरा इंतज़ार क्यों कर रहे थे?"

"क्यों की क्या बात है..." मैं पल भर को सकपका गया, पर तभी मुझे जवाब सूझ गया। "हम तुम्हारे बिना उदास होते हैं। तुम्हारे बिना हमें कष्ट होता है। चैन नहीं है, समझे?"

मुन्ना उछलकर खड़ा हुआ और तुरंत ही फिर से बैठ गया। बहुत ही असुविधाजनक ढंग से—मैं तो दो सेकंड भी ऐसे न बैठ पाता।

"तुम्हें मेरे बिना कष्ट होता है?"

"हां," दृढ़तापूर्वक मैंने कहा।

"कमाल है," वह बोला। "तुम्हें मेरे बिना कष्ट होता है, मुझे तुम्हारे बिना। गड़बड़ झाला!"

"गड़बड़ झाला क्यों?" मैं दुखी हुआ। "अगर हम मिल न पाते, तब गड़बड़ झाला होता। अब तो हम मिले हैं, खेल सकते हैं... तुम्हें खेलना अच्छा लगता है, पर तुम सदा अकेले खेलते..."

"नहीं," मुन्ने ने मेरी बात काटी। "पहले मैं अकेला खेलता था। फिर मैं झील पर खेल रहा था, वहां मैंने पानी में अपनी छवि देखी। मैं उससे खेलना चाहता था, वह बिखर गयी। तब मेगी बड़ी इच्छा हुई की मेरी छवियां हों, बहुत सारी छवियां और मैं उनसे खेलूं। बस ऐसा ही हो गया।"

वह उठकर हल्के कदम भरता गोल घेरे में दौड़ने लगा और अपनी विचित्र प्रेतच्छायाएं छोड़ने लगा—काली, सफ़ेद-पीली, लाल, फिर घेरे के बीचोंबीच बैठकर उसने गर्व भरी नज़र दौड़ायी। वाकई, गज़ब का नज़ारा था: रेत पर बैठा नंगा बालक और उसके गिर्द नाना मुद्राओं में दर्जन भर मूर्तियां।

"कमाल है," मैंने कहा और माया पर नज़र डाली ताकि वह भी बातचीत में हिस्सा ले। मुझे यह अटपटा लग रहा था कि अकेला मैं ही बोलता जा रहा हूं, वह चुप है। लेकिन वह कुछ नहीं बोली, बस खिन्न सी देखती रही,

उधर प्रेतच्छायाएं डोलती हुई धीरे-धीरे घुलती जा रही थीं, अमोनिया की गंध फैला रही थीं।

"मैं सदा पूछना चाहता था," मुन्ना बोला, "तुम लिपटे क्यों रहते हो? यह क्या है?" मेरे पास आकर उसने फ़रकोट का दामन खींचा।

"वस्त्र," मैंने कहा।

"वस्त्र," उसने दोहराया। "किसलिए?"

मैंने उसे वस्त्रों के बारे में बताया। मैं कोमव तो हूं नहीं। कभी लेक्चर नहीं दिये हैं, सो भी वस्त्रों के बारे में। पर बिना किसी डींग के मैं कह सकता हूं: मेरा लेक्चर सफल रहा।

"सभी मानव वस्त्र पहनते हैं?" चकित मुन्ने ने पूछा।

"सभी," मैं बोला। मेरी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस बात पर इतना चकित है।

"पर मानव तो बहुत हैं! कितने हैं?"

"पंद्रह अरब।"

"पंद्रह अरब," उसने दोहराया। बिना नाखूनवाली अपनी उंगली आगे करके उसे मोड़ने और सीधी करने लगा। "पंद्रह अरब!" उसने कहा और प्रेतच्छायाओं के धूमिल अवशेषों पर नजर डाली। "और सभी वस्त्र पहनते हैं... और क्या?"

"समझा नहीं।"

"और क्या करते हैं?"

गहरी सांस लेकर मैं उसे यह समझाने लगा कि लोग क्या करते हैं। बेशक, बात तो अजीब है, अभी तक मैंने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था। मुझे डर है, मुन्ने को लगा होगा कि मानवजाति ज्यादातर साइबर मशीनों के काम में ही लगी रहती है। वैसे, मैंने सोचा कि शुरुआत के लिए यह बुरा नहीं है। मुन्ना इस बार वैसे लोट नहीं रहा था, गठरी नहीं बन रहा था, जैसा कोमव के लेक्चर सुनते समय हुआ था, तो भी वह मंत्रमुग्ध सा सुन रहा था।

आखिर जब मैं बिल्कुल उलझ गया और उसे कला के बारे में कुछ बता पाने की सारी उम्मीद छोड़कर मैंने अपनी बात खत्म की तो उसने तुरंत ही नया प्रश्न पूछ डाला।

"इतने सारे काम हैं," वह बोला। "तो यहां क्यों आये?"

"माया, अब तुम बताओ," मैंने भर्रायी आवाज़ में विनती की। "मेरी नाक जम गयी है..."

माया ने भावशून्य दृष्टि से मुझे देखा, पर खैर 'नूह' योजना के बारे में अनमने ढंग से बताने लगी। मुझे लगा कि उसका वर्णन ज़रा भी रोचक नहीं है। मुझसे रहा न गया, मैं उसे टोकने लगा, वर्णन में रोचक ब्योरे जोड़ने लगा और अंततः मैंने पाया कि फिर से अकेला मैं ही बोल रहा हूं। अपने वर्णन का अंत मैंने नैतिक निष्कर्ष के साथ करना उचित समझा।

"तो देखा तुमने," मैंने कहा। "हम एक बड़ा काम करने जा रहे थे, पर जैसे ही हम यह समझे कि तुम्हारा ग्रह खाली नहीं है, हमने यह इरादा बदल दिया।"

"मतलब मानवों को यह जानना आता है कि क्या होगा?" मुन्ने ने पूछा। "पर यह सही नहीं है। अगर मानवों को यह आता तो वे कब के यहां से चले गये होते।"

मुझे कोई उत्तर नहीं सूझा। इस विषय से कन्नी काट लेना ही मैंने उचित समझा।

"सुनो, मुन्ना—चलो खेलने चलें," उत्फुल्ल स्वर में मैं बोला। "देखना, मानवों के साथ खेलने में कितना मज़ा आता है।"

मुन्ना चुप था। मैंने गुस्से से माया को घूरा, यह भी क्या बात है भला, संपर्क का सारा बोझ क्या अकेला मैं ही ढोऊं!

"चलो, मुन्ना, खेलते हैं," बिना किसी उत्साह के

माया ने मेरी बात का समर्थन किया। "या चाहो तो मैं अपनी उड़नेवाली मशीन पर ले चलती हूं।"

"तुम हवा में उड़ोगे," मैंने उसकी बात आगे बढ़ायी, "और पहाड़, दलदल, आइसबर्ग सब कुछ नीचे होगा..."

"नहीं," मुन्ना बोला। "उड़ना तो एक आम सुख है। मैं खुद उड़ सकता हूं।"

मैं उछल पड़ा।

"कैसे खुद उड़ सकते हो?"

उसके चेहरे पर पलाश की ऊर्मियां दौड़ गयीं, कंधे ऊपर उठे और नीचे हो गये।

"शब्द नहीं हैं," वह बोला, "जब इच्छा होती है, उड़ता हूं..."

"तो उड़ो!" मेरे मुंह से निकला।

"अभी इच्छा नहीं है," वह अधीरता से बोला। "अभी मुझे तुम्हारे साथ चैन है।" वह उठा। "खेलना चाहता हूं। कहां खेलेंगे?"

"चलो यान की ओर दौड़ चलें," मैंने कहा।

उसने कर्णभेदी किलकारी भरी। उसकी प्रतिध्वनि शांत भी न होने पायी थी कि हम झुरमुट में दौड़ते जा रहे थे। माया से मैंने सारी उम्मीद छोड़ दी थी: जो चाहे करे।

मुन्ना झाड़ियों के बीच यों फिसल रहा था, जैसे दर्पण से टकराकर चमकती किरण। मुझे लगा वह एक बार भी किसी टहनी से नहीं टकराया, उसका पांव भी जमीन पर नहीं पड़ा। जबकि मैं बिजली से गरम होनेवाला अपना फ़रकोट पहने टैंक की तरह बढ़ रहा था, टहनियां चटखती जा रही थीं। मैं उस तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी प्रेतच्छायाएं मुझे भ्रम में डाल देती थीं। पल-पल में वह उन्हें छोड़ता जा रहा था। झुरमुट खत्म होने पर मुन्ना मेरा इंतजार करता मिला।

"तुम्हारे साथ ऐसा होता है? तुम जागते हो और याद करते हो कि अभी-अभी कुछ देखा था। कभी यह

जाना-पहचाना होता है। जैसे यह कि मैं उड़ता हूं। कभी बिल्कुल नया, जो पहले नहीं देखा था।"

"हां, होता है," मैंने सांस संभालते हुए कहा। "इसे सपना कहते हैं। तुम सोते हो और सपने देखते हो।"

हम पैदल चलने लगे। पीछे दूर कहीं झुरमुट में माया के चलने से टहनियां चटख रही थीं।

"यह कहां से आता है?" मुन्ने ने पूछा। "सपना क्या होता है?"

"भूतपूर्व छापों के अभूतपूर्व संयोजन," मैंने रटा-रटाया जवाब दोहरा दिया।

कहना न होगा कि वह समझा नहीं और मुझे एक और लेक्चर देना पड़ा—कि सपने क्या होते हैं, कैसे उत्पन्न होते हैं, उनकी आवश्यकता क्या है और यदि वे न होते तो मानव के लिए कितना बुरा होता।

"कलुआ बिल्ला! पर यह तो मेरी समझ में आया नहीं कि मैं सपने में ऐसी बात क्यों देखता हूं, जो पहले कभी नहीं देखी।"

"जैसे?"

"कभी-कभी मुझे सपना आता है कि बड़ा हूं, बहुत ही बड़ा, कि मैं विचारता हूं, कि मुझमें एक के बाद एक प्रश्न उठते हैं, बड़े जगमगाते प्रश्न, आश्चर्यजनक प्रश्न और मैं उनके उत्तर खोज लेता हूं, आश्चर्यजनक उत्तर, और मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं कि उत्तर कैसे बनते हैं। यह सबसे बड़ा सुख होता है, जब पता हो कि कैसे प्रश्नों से उत्तर बनता है। पर जब मैं जागता हूं तो मुझे न प्रश्न याद होते हैं, न उत्तर। बस सुख-चैन याद होता है।"

"हूं, रोचक सपना है," बात को टालते हुए मैंने कहा। "पर मैं तुम्हें यह सपना समझा नहीं सकता। कोमव से पूछना। शायद वह समझा दे।"

"कोमव से... कोमव क्या है?"

मुझे हमारी नामों की प्रणाली उसे समझानी पड़ी।

दलदल का चक्कर हम काट चुके थे, दूर सामने यान था और अवतरण पट्टी। मैंने जब अपनी बात पूरी की तो मुन्ना अचानक बोला:

"अजीब बात है। मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ।"

"क्या नहीं हुआ?"

"कि मैं अपने लिए कुछ चाहूं और न कर सकूं।"

"तुम चाहते क्या हो?"

"मैं चाहता हूं कि आधा-आधा हो जाऊं। अभी मैं एक हूं, चाहता हूं कि दो हो जायें।"

"अरे, मुन्ना," मैं बोला, "यह भी कोई चाहने की बात है। यह तो असंभव है।"

"अगर संभव हो तो? अच्छा है या बुरा?"

"जरूर बुरा है," मैंने कहा। "मैं ठीक-ठीक समझा नहीं कि तुम क्या कहना चाहते हो... दो टुकड़े हो सकते हैं। यह तो बिल्कुल ही बुरी बात है। बीमारी हो सकती है: व्यक्तित्व की विखंडता कहते हैं। यह भी बुरी बात है, पर इसका उपचार है।"

"दर्द होता है?" मुन्ने ने पूछा।

हम अवतरण पट्टी पर पहुंच गये। टॉम गेंद लुढ़काता हमारी ओर आ रहा था और खुशी से अपनी संकेत बत्तियां टिमटिमा रहा था।

"छोड़ो ये बातें," मैंने कहा। "तुम तो पूरे ही अच्छे हो।"

"नहीं, अच्छा नहीं हूं," मुन्ने ने आपत्ति की, पर तभी टॉम आ गया और हंसी-मेला शुरू हो गया।

मुन्ने ने सवालों की बौछार कर दी। मैं एक उत्तर न दे पाता कि अगला प्रश्न तैयार होता। टॉम एक आदेश पूरा न कर पाता कि अगला आदेश तैयार होता। गेंद तो जमीन पर लग ही नहीं रही थी। बस मुन्ना ही सब कुछ करता जा रहा था।

कोई देखता तो उसे यह सब बहुत मजेदार लगता। हमें

सचमुच ही मजा आ रहा था, माया की खिन्नता के बादल भी आखिर छंट गये। हम शरारती बच्चों जैसे लग रहे होंगे, जो क्लास से भागकर समुद्र तट पर चले आये। पहले तो कुछ-कुछ अटपटापन था, यह चेतना कि हम मनबहलाव नहीं काम कर रहे हैं, कि हमारी हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है, कि हमारे और मुन्ने के बीच कुछ अनकहा रहा गया है, फिर हम यह सब भूल गये। केवल गेंद रह गयी, जो सीधे मुंह पर आती थी, और निशाने से फेंकी गेंद पर खुशी, और बेढब टॉम पर गुस्सा और उल्लासमय किलकारियों की गूंज और मुन्ने के ठहाके—हमने तब पहली बार उसकी हंसी सुनी थी, बिल्कुल बाल सुलभ, सब कुछ भुला देनेवाली हंसी।...

यह विचित्र खेल था। मुन्ना खेलते-खेलते ही उसके नियम सोचता जा रहा था। वह अत्यंत सहनशील था और पूरी तरह खेल में रमनेवाला खिलाड़ी। वह हमें अपनी शारीरिक श्रेष्ठता दिखाने का एक भी मौका नहीं चूकता था, उसने हम पर मुकाबला थोप दिया और अपने आप ही ऐसे हो गया कि वह अकेला हम तीनों के खिलाफ़ खेलने लगा, और हम बराबर हारने लगे। पहले तो हम उसे जिता रहे थे। फिर वह इसलिए जीतने लगा कि हम उसके नियम नहीं समझते थे। फिर हम नियम समझ गये, लेकिन माया और मैं अपने फ़रकोटों के कारण ठीक से नहीं खेल पा रहे थे। फिर हमने यह तय किया कि टॉम बहुत ही बेढब है, सो उसे भगा दिया। माया जोश में आ गयी और पूरे ज़ोर से खेलने लगी, मैं भी अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन फिर भी हर बार नंबर हार जाते थे। बिजली की रफ़्तार से दौड़ते इस शैतान का हम कुछ नहीं कर सकते थे, कैसे भी गेंद फेंको वह पकड़ लेता था, खुद बहुत ज़ोर से और ठीक निशाने से गेंद फेंकता था, हमारे हाथों में यदि गेंद सेकंड भर से ज्यादा रुकी रहती तो वह नाराजगी से चीखता। अपनी प्रेतच्छायाओं से हमें

बिल्कुल ही मतिभ्रम में डाल रहा था, यही नहीं पलक झपकते ही वह बिल्कुल ही अंतर्ध्यान हो जाता और उतनी ही तेजी से बिल्कुल दूसरे स्थान पर अवतरित हो जाता। बेशक, हम हार नहीं मान रहे थे—हम हांफ रहे थे। पसीने से तर हो गये थे, एक दूसरे पर चिल्ला रहे थे, लेकिन मैदान छोड़कर हम नहीं भागे। और एकाएक सब कुछ समाप्त हो गया।

मुन्ना रुक गया, दूर जाती गेंद को देखता रहा और फिर रेत पर बैठ गया।

"अच्छा था यह," वह बोला। "मुझे पता भी नहीं था कि इतना भी अच्छा लगता है।"

"क्या?" हांफते हुए मैं चिल्लाया। "थक गये, मुन्ना?"

"नहीं। याद आ गया। भूल नहीं पा रहा। किसी भी तरह। कोई भी चैन याद को नहीं भगाता। अब मुझे खेलने के लिए मत बुलाना। मुझे कष्ट हो रहा है, अब तो और भी ज्यादा। उससे कह दो जल्दी-जल्दी सोचे। उसने जल्दी से कुछ न सोचा तो मैं आधा-आधा हो जाऊंगा। मेरे अंदर सब कुछ दर्द कर रहा है। मैं आधा-आधा होना चाहता हूं, पर डरता हूं, इसलिए नहीं हो रहा। बहुत दर्द होगा तो मेरा डर खत्म हो जायेगा। जल्दी विचारे।"

"क्या कह रहे हो तुम, मुन्ना!" मैं परेशान हो गया। मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहा था कि उसे क्या हो रहा है, पर देख रहा था कि वह सचमुच दुखी है। "मत सोचो ये सब बातें! तुम बस मानवों के आदी नहीं हुए हो! ज्यादा मिलना चाहिए, खेलना चाहिए..."

"नहीं," मुन्ना बोला और खड़ा हो गया। "अब मैं नहीं आऊंगा।"

"पर क्यों?" मैं चिल्ला उठा। "कितना अच्छा रहा था! और भी अच्छा लगेगा। दूसरे खेल भी हैं, सिर्फ़ गेंद के नहीं... छल्ले के, पंखों के!"

वह धीरे-धीरे जाने लगा।

"शतरंज है!" मैं जल्दी-जल्दी पीछे से बोला रहा था। "तुम जानते हो शतरंज क्या है? यह तो कमाल का खेल है!"

वह थम गया। मैं जल्दी-जल्दी और बड़े भावावेश से उसे समझाने लगा कि शतरंज क्या है—सादी शतरंज, त्रिविम शतरंज, एन-विम शतरंज। वह खड़ा हुआ था और एक ओर को देखता सुन रहा था। शतरंज की बात खत्म करके मैं पोकर के बारे में बताने लगा। सभी खेल, जो कभी मैं जानता था, याद करने के लिए मैं दिमाग के घोड़े दौड़ा रहा था।

"हां," मुन्ना बोला। "मैं आऊंगा।"

और अब रुके बिना वह दलदल की ओर चल दिया। थोड़ी देर तक हम चुपचाप उसे जाता देखते रहे, फिर माया ने उसे पुकारा: "मुन्ना!"—दौड़कर उस तक गयी और उसके साथ चलने लगी। मैंने अपना फ़रकोट उठाकर पहना, माया का फ़रकोट ढूंढ़ा और किंकर्तव्यविमूढ़ सा उनके पीछे चल दिया। मेरा मन न जाने क्यों खट्टा था और मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि बात क्या है। लगता था सब कुछ ठीक-ठाक रहा है: मुन्ने ने लौटने का वायदा किया है, मतलब उसे हमसे लगाव हो गया है, मतलब हमारे बिना उसे और भी अधिक दुख होगा... "आदी हो जायेगा," मैं मन ही मन दोहराता जा रहा था। "कोई बात नहीं, आदी हो जायेगा..." मैंने देखा कि माया थम गयी और मुन्ना आगे बढ़ गया। माया मुड़ी और अपने कंधों को बांहों में समेटकर मेरी ओर दौड़ी। उसे फ़रकोट पकड़ाकर मैंने पूछा:

"तो?"

"सब ठीक है," वह बोली। उसकी आंखें पारदर्शी थीं और उनमें अद्भुत संकल्प का भाव था।

"मैं सोचता हूं कि आखिरकार..." मैंने कहना शुरू किया और अटक गया। "माया," मैं बोला, "तुमने तो 'तीसरी आंख' खो दी!"

"मैंने खोयी नहीं है," माया बोली।

अध्याय आठ

संदेह और समाधान

मुन्ना यान से पश्चिम दिशा को चला जा रहा था—सागर तट के समानांतर, टीलों और झुरमुटों को सीधा पार करता। शुरू में वह 'तीसरी आंख' में रुचि ले रहा था। वह रुक जाता, छल्ला उतार लेता, उसे हाथों में घुमाता और तब हमारे मॉनीटर स्क्रीन पर कभी धूमिल आकाश, कभी नीला-हरा चेहरा-मुखौटा, तो कभी ठंड से जमी रेत नज़र आती। फिर उसने छल्ले की ओर ध्यान देना छोड़ दिया। पता नहीं, उस दिन वह सदा की भांति नहीं चल रहा था, या फिर उसने छल्ला ठीक से नहीं पहना था, ऐसा लगता था कि लैंस गति की सीध में नहीं, थोड़ा दायें को दिखा रहा है। स्क्रीन पर एक जैसे रेतीले टीले और ठंड से जमी झाड़ियां गुज़र रही थीं, कभी-कभी सुरमई पर्वत शिखर दिख जाते थे, या फिर अचानक काला समुद्र और क्षितिज पर चमचमाता आइसबर्ग दिखता।

मुझे लग रहा था कि मुन्ना बिना किसी लक्ष्य के चल रहा है, बस जिधर नज़र जाती उधर ही चलता जाता—हमसे दूर। कुछेक बार टीलों की चोटी पर चढ़कर उसने हमारी ओर देखा। तब स्क्रीन पर हमारे ई० आर०-2 का हिमधवल शंकु, रुपहली अवतरण पट्टी और अधूरे बने मौसम केंद्र की दीवार से सटकर खड़ा नारंगी टॉम नज़र

आता। लेकिन परिदृश्य पटल पर मुन्ने को हम नहीं देख पाये।

लगभग एक घंटे बाद मुन्ना अचानक पहाड़ों की ओर मुड़ गया। अब सूरज की किरणें सीधे लैंस पर पड़ रही थीं, सो ठीक से दिखाई नहीं देता था। शीघ्र ही टीले खत्म हो गये। मुन्ना विरल वन से होकर जा रहा था, सड़ी-गली डालों को फांदता, टेढ़े-मेढ़े तनों के बीच, जिनकी धब्बेदार छाल जगह-जगह उखड़ी हुई थी, बर्फ़ीली नमी सी ज़मीन का रंग जंग जैसा था। एक बार वह एकाकी पड़े ग्रेनाइट के गोल शिला खंड पर चढ़ गया, इधर-उधर नज़र डालता खड़ा रहा, फिर ज़मीन पर कूदकर उसने दो चिपचिपी टहनियां उठायीं और उन्हें एक दूसरी से टकराता आगे चल दिया। शुरू में यह ठकठक बेतरतीब थी, फिर उसमें ताल आ गयी और इस ताल के साथ गूंज या भिनभिनाहट जैसी कोई आवाज़ सुनायी देने लगी। यह अनवरत और अप्रिय ध्वनि तेज़ होती जा रही थी। यह शायद मुन्ना ही भिनभिना या गुंजार कर रहा था—पता नहीं यह उसका गीत था, या अपने आप से बातचीत।

इस तरह ठकठक, गुंजार करता और भिनभिनाता मुन्ना चला जा रहा था। अब पेड़ों के बीच बिखरे कंकड़, काई भरे गोलाश्म और विशाल शिला-खंड नज़र आने लगे थे। फिर सहसा स्क्रीन पर झील प्रकट हुई। मुन्ना रुके बिना ही उसमें घुस गया, पलांश को हमने उफनता पानी देखा, फिर तस्वीर धुंधली पड़ गयी और लुप्त हो गयी—मुन्ने ने डुबकी लगा ली थी।

वह बहुत देर तक पानी में रहा, मैं तो सोचने लगा था कि उसने ट्रांसमीटर खो दिया है और हम अब कुछ नहीं देखेंगे, पर दसेक मिनट बाद तस्वीर फिर से आ गयी धुंधली, फैली-फैली सी, धारीदार। पहले तो हमें कुछ भी स्पष्ट नहीं दीख रहा था, पर शीघ्र ही स्क्रीन के दायें

सिरे पर हथेली की तस्वीर आयी, जिस पर पांटा की कुरूप मछली उछल और छटपटा रही थी।

जब 'आंख' का लैंस पूरी तरह साफ़ हो गया तो मुन्ना दौड़ रहा था। पेड़ों के तने हमारी ओर बढ़ते आ रहे थे, अंतिम क्षण में तेज़ी से कभी दायीं तो कभी बायीं ओर चले जाते थे। वह बहुत तेज़ी से दौड़ रहा था, मगर न उसकी पदचाप सुनायी दे रही थी, न ही उसकी सांस—बस हवा सांय-सांय कर रही थी और बूची टहनियों के पीछे सूरज झिलमिला रहा था। अचानक एक अबोध बात हुई: एक धूसर गोलाश्म के सामने मुन्ना एकाएक ठिठककर बुत सा खड़ा हो गया और अपनी बांहें कोहनियों तक उसमें घुसेड़ दीं। पता नहीं शायद वहां खूब अच्छी तरह छिपाया हुआ छेद रहा हो। मेरे ख्याल में नहीं था। कुछेक सेकंड बाद जब उसने हाथ बाहर निकाले तो वे काले थे और चमक रहे थे, यह काला और चमकीला पदार्थ उसकी उंगलियों के सिरों से टपक रहा था, ज़मीन पर उसके गिरने की टपाटप साफ़ सुनायी दे रही थी। फिर हाथ दृश्य क्षेत्र से ओझल हो गये और मुन्ना आगे भाग चला।

टेढ़ी हो गयी मीनार जैसी संरचना के सामने वह रुका। मैं तुरंत ही नहीं समझ पाया कि यह ध्वस्त 'पेलिकन' यान है। अब मैं स्वयं यह देख रहा था कि गिरते समय उसकी कैसी दुर्दशा हुई है और इस ग्रह पर बीते वर्षों ने उसकी क्या दुर्गति की है। यह दृश्य प्रिय नहीं था। इस बीच मुन्ना यान के बिल्कुल पास चला गया, हैच के छेद में उसने झांका, पल भर को स्क्रीन पर अभेद्य अंधकार छा गया। फिर उसने वैसे ही धीरे-धीरे चलते हुए अभागे यान की परिक्रमा की, पुनः हैच के सामने रुका, पंजा फैलाकर हाथ ऊपर उठाया और यान के क्षरणग्रस्त साइड पर रख दिया। एक मिनट तक वह ऐसे ही खड़ा रहा और हमने फिर से उसकी भिनभिन और गुंजार सुनी, मुझे लगा कि उसके पंजे तले से नीला सा धुआं उठ रहा है। आखिर

उसने हाथ हटा लिया और एक कदम पीछे हट गया। यान के काले पड़े साइड पर पंजे का छापा साफ़ नज़र आ रहा था।

"वाह रे, मेरे ललवा," मधुर पुरुष कंठ बोला।

"मुनुआ!" कोमल नारी स्वर ने जवाब दिया।

"नन्हा!" पुरुष कंठ ने प्रायः बुदबुदाते हुए कहा। "मेरे ननवा!"

नन्हा बच्चा रो पड़ा।

पंजे का छापा झटके से एक ओर हटा और ओझल हो गया। अब स्क्रीन पर पहाड़ी ढलान दिख रही थी—दरारों से भरा ग्रेनाइट, पुरानी कटानें, नुकीले पत्थर, जिनके क्षत-विक्षत पक्ष चमक रहे थे, जहां-तहां उगती मरियल कठोर घास, गहरे, अभेद्य काले संकरे दर्रे। मुन्ना ढलान पर चढ़ रहा था, उभारों को पकड़ते उसके हाथ हम देख रहे थे, दानेदार पत्थर स्क्रीन पर नीचे जा रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से चलती एकसार सांस सुनायी दे रही थी, फिर उसकी गतियों में झटके नहीं रहे, गति तेज़ हो गयी, मेरी आंखें चुंधियाने लगीं, ढलान सहसा दूर हो गयी, कहीं एक ओर को नीचे चली गयी और हमने मुन्ना की फटी-फटी सी, तुरंत ही रुक गयी हंसी सुनी। मुन्ना उड़ रहा था—इसमें कोई संदेह नहीं था।

स्क्रीन पर सुरमई-बैंगनी आकाश चमक रहा था, बगल में कुछ धुंधले अर्धपारदर्शी चिथड़े स्पंदित हो रहे थे, धूल से सने मलमल के टुकड़ों जैसे। चकाचौंध करता बैंगनी सूरज धीरे-धीरे स्क्रीन के आर-पार चला गया, धूल भरे मलमल के टुकड़े ने सब कुछ छिपा दिया और फिर तुरंत ही ओझल हो गया। बहुत दूर नीचे हमें पठार दिखा, जिस पर हल्की बैंगनी धुंध छायी हुई थी, अथाह दर्रे थे, अकल्पनीय नुकीली चोटियां थीं, चिर हिम से आच्छादित—क्षितिज के पार जाता निरानंद, निष्प्राण, जगह-जगह चटखा, कंटीला बर्फ़ीला संसार था यह। फिर

हमने मुन्ने का मजबूत, लुक की तरह चमकता घुटना देखा और उसका काला हाथ, जिसने किसी ठोस चीज़ को कसकर पकड़ लिया था। सच पूछें तो इस क्षण मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, मैंने पलटकर देखा कि रिकार्डिंग हो रही है या नहीं। रिकार्डिंग हो रही थी। पर वंडरहूज़ के चेहरे पर भी उलझन थी, माया अविश्वासपूर्वक आंखें सिकोड़कर गर्दन यों घुमा रही थी, जैसे कि कालर उसे देखने न दे रहा हो। केवल कोमव ही पूरी तरह शांत था, ज़रा भी हिल-डुल नहीं रहा था, कोहनियां स्विचबोर्ड पर टिकाये और ठोड़ी गुंथी उंगलियों पर रखे वह बैठा हुआ था।

मुन्ना नीचे गिर रहा था। पथरीली उजाड़ ज़मीन तेज़ी से पास आ रही थी, किसी अदृश्य धुरी के गिर्द धीरे-धीरे घूम रही थी, यह स्पष्ट था कि यह धुरी कहां जा रही है–शिला-खंडों से भरे मटमैले मैदान को चीरती काली दरार में। दरार फैलती जा रही थी, धूप में चमकता उसका सिरा एकदम चिकना था और बिल्कुल सीधा नीचे जा रहा था, तला देख पाने का तो सवाल ही नहीं उठता था–वहां सूचीभेद्य अंधकार था। और इस अंधकार में मुन्ना तेज़ी से समा गया; स्क्रीन पर कोई तस्वीर नहीं रही, माया ने हाथ बढ़ाकर एम्प्लीफ़ायर ऑन किया, परंतु फिर भी स्क्रीन पर अस्पष्ट स्लेटी धारियों के अलावा कुछ भी नज़र नहीं आया। मुन्ने की कर्णभेदी चीख सुनायी दी और गति रुक गयी। "मर गया!" यह भयावह विचार मेरे मस्तिष्क में कौंधा। माया ने पूरे ज़ोर से मेरी कलई अपने हाथ में भींच ली।

स्क्रीन पर कुछ धुंधले निश्चल धब्बे नज़र आ रहे थे, सब कुछ स्लेटी और काला था, विचित्र ध्वनियां सुनायी दे रही थीं–कोई बुदबुद, फटी-फटी घरघर, सूं-सूं। खुले पंजे की जानी-पहचानी काली आकृति दिखी और ओझल हो गयी। धुंधले धब्बे चलने लगे, बुदबुद और घरघर कभी

ज़ोर से सुनायी देती थी, कभी धीमे, नारंगी बत्ती जली और बुझ गयी, फिर एक और, उसके बाद एक और... पलांश को कुछ गरजा और उसकी प्रतिध्वनियां गूंजने लगीं। "इन्फ़ारेड ऑन करो," कोमव ने दांत भींचकर कहा। माया ने इन्फ़ारेड एम्प्लीफ़ायर का प्लग पूरा घुमा दिया। स्क्रीन उजला हो गया, लेकिन मुझे पहले की ही भांति कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

सारे विस्तार में फ़ास्फ़ोरस की तरह चमकता कोहरा छाया हुआ था। वैसे यह आम कोहरे जैसा कोहरा नहीं था, उसमें किसी संरचना का आभास होता था, जैसे कि ठीक से फ़ोकस न किये गये माइक्रोस्कोप में जैव ऊतक की काट देख रहे हों। इस संरचनात्मक कोहरे में कहीं-कहीं अधिक उजले घने स्थलों का आभास होता था, कहीं काले स्पंदनशील दानों के पुंज थे और यह सब मानो हवा में मंडरा रहा था, कभी बिल्कुल ओझल हो जाता था और फिर से प्रकट हो जाता था। मुन्ना इस सब के बीच यों चला जा रहा था, मानो वास्तव में यह सब न हो, वह अपने चमकते हाथ आगे फैलाये चलता जा रहा था, और उसके इर्द-गिर्द बुदबुद, घरघर, कलकल, टिकटिक हो रही थी।

इस तरह वह बहुत देर तक चलता रहा। हमारा ध्यान इस बात की ओर तुरंत नहीं गया कि संरचना फीकी पड़ती जा रही है, स्क्रीन पर केवल दूधिया चमक बची थी और फैले हुए पंजे का हल्का सा आभास हो रहा था। और तब मुन्ना रुक गया। हम यह समझ गये, क्योंकि ध्वनियां अब न पास आ रही थीं, न दूर जा रही थीं। वही ध्वनियां। ध्वनियों का पूरा निर्झर, पूरा प्रपात। फटी-फटी गुंजार, मंद्र फुसफुसाहट, दबी-दबी चीं-चीं... छपाक से कुछ फटा और खनकती बूंदें फैलीं... चरमराहट, ताम्र आघात... फिर एकसार चमक में काले धब्बे उभरने लगे, दसियों धब्बे, बड़े और छोटे; शुरू में वे अस्पष्ट थे, परंतु धीरे-धीरे

निश्चित आकार ग्रहण करते जा रहे थे, और यह आकृति बेहद जानी-पहचानी थी, सहसा मैं समझ गया कि यह क्या है। यह बिल्कुल असंभव था, परंतु इस विचार से मैं अब छुटकारा नहीं पा सकता था। लोग। दसियों, सैकड़ों लोग, जो निश्चित क्रम में खड़े थे और मानो थोड़ी ऊपर से उन पर नजर पड़ रही थी... और तभी कुछ हो गया। एक पल के भी अत्यलप अंश के लिए तस्वीर एकदम स्पष्ट हो गयी। पर इतने कम समय के लिए कि कुछ देख पाना असंभव था। फिर भयावह चीख गूंजी, तस्वीर पलट गयी और बिल्कुल खत्म हो गयी। तुरंत ही आग बबूला कोमव गरजा:

"क्यों किया आपने यह?"

स्क्रीन बुझ गया था। कोमव अस्वाभाविक ढंग से सीधा तना खड़ा था, उसकी कसकर भिंची मुट्ठियां स्विचबोर्ड पर जमी हुई थीं। वह माया की ओर देख रहा था। माया का चेहरा फक्क था, मगर वह शांत थी। वह भी उठ गयी। अब कोमव और वह बिल्कुल आमने सामने खड़े थे। वह चुप थी।

"क्या हो गया?" वंडरहूज़ ने धीरे से पूछा। प्रत्यक्षत:, वह भी कुछ नहीं समझ पा रहा था।

"क्या गुंडागर्दी है यह, या..." कोमव कुछ और कहते-कहते रुक गया। "संपर्क ग्रुप से आपको निकाल रहा हूं। यान से निकलना, रेडियो रूम में और चौकी पर जाना मना। दफ़ा हो जाइये यहां से।"

माया पहले की ही भांति एक शब्द भी कहे बिना मुड़ी और बाहर निकल गयी। पल भर को भी सोचे बिना मैं उसके पीछे चल दिया।

"पपोव!" कोमव की सख्त आवाज़ आयी।

मैं थम गया।

"कृपया यह रिकार्डिंग तुरंत केंद्र को भेज दीजिये। अर्जेंट।"

वह मेरी आंखों में आंखें डालकर देख रहा था। उसकी

इस नज़र से मेरा कलेजा दहल गया। कोमव का यह रूप मैंने आज तक नहीं देखा था। निस्संदेह ऐसे कोमव को लोगों को आदेश देने, नज़रबंद करने और किसी भी तरह के विद्रोह को बीज रूप में ही कुचल डालने का पूरा अधिकार था। मुझे लग रहा था कि मेरे दो टुकड़े हो जायेंगे। "मुन्ने की तरह," मस्तिष्क में कौंधा।

वंडरहूज़ खंखारकर बोला:

"वो... गेन्नादी। सीधे केंद्र को न भेजें तो कोई हर्ज है? गर्बोव्स्की तो बेस कैंप में आ चुका है। शायद बेस कैंप को ही भेजना ठीक रहे, क्या ख्याल है आपका?"

कोमव की नज़रें अभी भी मुझ पर गड़ी हुई थीं। उसकी सिकुड़ी आंखें बर्फ़ के टुकड़ों जैसी लगती थीं।

"हां, ज़रूर," वह बोला और अब उसका स्वर एकदम शांत था। "कॉपी बेस कैंप को, गर्बोव्स्की को भेज दीजिये। धन्यवाद, जैकब। पपोव, जाइये काम करिये।"

हुक्म बजाने के अलावा और कोई चारा नहीं था। पर मुझे यह सब बुरा लग रहा था। वीडियो रिकार्डर में से कैसट निकालते हुए मैंने चुनौती भरे स्वर में पूछ ही लिया:

"आखिर हुआ क्या है? ऐसा क्या कर डाला उसने?"

थोड़ी देर तक कोमव चुप रहा। वह फिर से अपनी कुर्सी में बैठ गया था और होंठ चबाता हुआ, कुर्सी की बांह पर उंगलियां पटपटा रहा था। वंडरहूज़ भी अपने गलमुच्छे फुलाये उत्तर की प्रतीक्षा करता उसकी ओर देख रहा था।

"उसने प्रोजेक्टर ऑन कर दिया," अंततः कोमव बोला।

मैं तुरंत ही समझा नहीं।

"कैसा प्रोजेक्टर?"

कोमव ने कोई जवाब दिये बिना दबे हुए बटन की ओर इशारा कर दिया।

"हुं," खेद भरे स्वर में वंडरहूज़ बोला।

मैंने कुछ नहीं कहा। कैसट लेकर वायरलैस सेट की ओर चल दिया। सच पूछें तो कहने को कुछ था नहीं। इससे कहीं कम कसूर के लिए लोगों को अंतरिक्ष में काम से हटाया गया था। माया ने दुर्घटना का फ़्लैश लैम्प ऑन कर दिया था, जो छल्ले में लगा होता है। यह अनुमान लगाया जा सकता था कि गुफ़ा के निवासियों पर क्या बीती होगी, जब चिर अंधकार में एक छोटा सा सूरज चमक उठा। चेतना खो बैठे टोही को इस फ़्लैश की मदद से अंतरिक्षीय कक्षा से ग्रह के दिन के भाग पर भी ढूंढ़ा जा सकता था... अगर वह ज़मीन में दब गया हो तो भी... ऐसा प्रोजेक्टर पराबैंगनी किरणों से लेकर अतिलघु तरंगों तक के परिसर में सभी किरणें छोड़ता है।... ऐसा कोई मौका नहीं हुआ है कि ऐसे फ़्लैश की मदद से टोही भयानक से भयानक, खूंखार से खूंखार पशु को डराने में सफल न रहा हो। ताखोर्ग तक, जो किसी चीज़ नहीं डरते हैं, दौड़ते-दौड़ते रुक जाते हैं... "सिर फिर गया है," मैंने सोचा। "बिल्कुल ही पागल हो गयी है..." परंतु अपनी सीट पर बैठते हुए मैं बोला:

"ऐसी भी क्या बात हो गयी। गलती से दूसरा बटन दब गया..."

"वाकई," वंडरहूज़ ने कहा। "शायद यही हुआ होगा। वह इन्फ़ारेड प्रोजेक्टर का बटन दबाना चाहती होगी... बटन तो पास-पास ही हैं... क्या ख्याल है आपका, गेन्नादी?"

कोमव चुप था। वह स्विचबोर्ड पर कुछ कर रहा था। मैं उसकी ओर देखना नहीं चाहता था। मैंने स्वचालित ट्रांसमीटर ऑन कर दिया और सिर दूसरी ओर घुमा लिया।

"घटना तो अप्रिय है," वंडरहूज़ बुदबुदा रहा था। "च-च-च... वाकई, इसकी प्रतिक्रिया हो सकती है...

सक्रिय प्रभाव... शायद ही वह उन्हें अच्छा लगा हो... हुं... हम सभी इधर बहुत तनाव में हैं, गेन्नादी। आश्चर्य की कोई बात नहीं, लड़की से चूक हो गयी... मेरा अपना जी कर रहा था, कुछ करूं ताकि तस्वीर किसी तरह सुधरे... बेचारा मुन्ना। मेरे ख्याल में वही चीखा था..."

"लीजिये," कोमव बोला। "देख लीजिये। साढ़े तीन शॉट हैं।"

वंडरहूज़ चिंतित सा नाक से सूं-सूं कर रहा था। मुझसे रहा न गया, सिर घुमाकर उनकी ओर देखा। उनके सटे सिरों के पीछे कुछ नज़र नहीं आता था, सो मैं उठकर पास गया। स्क्रीन पर वही दृश्य था जो अंतिम क्षण में मैंने देखा था पर ग्रहण नहीं कर पाया था। तस्वीर एकदम स्पष्ट थी, तो भी मैं कतई नहीं समझ पा रहा था कि यह है क्या। अनेक लोग थे, अनगिनत काली आकृतियां, बिल्कुल एक जैसी शतरंजी क्रम में लगी। वे मानो सपाट और अच्छी तरह रोशन चौक में खड़े थे। आगे की आकृतियां बड़ी थीं, पीछे की छोटी–परिप्रेक्ष्य के नियम के अनुरूप। वैसे ये कतारें अनंत लगती थीं और दूर कहीं काली धारियों में मिल गयी थीं।

"यह मुन्ना है," कोमव बोला। "पहचाना?"

अब मेरी समझ में आया: वाकई यह मुन्ना था, अनगिनत दर्पणों में अनगिनत बार दोहराये गये प्रतिबिंब सा।

"अनगिनत प्रतिबिंब लगते हैं," वंडरहूज़ बुदबुदाया।

"प्रतिबिंब..." कोमव ने दोहराया। "तो फिर लैंप का प्रतिबिंब कहां है? मुन्ने की छाया कहां है?"

"पता नहीं," वंडरहूज़ ने ईमानदारी से कहा। "वाकई, छाया होनी चाहिए।"

"आप क्या सोचते हैं, पपोव?" कोमव ने मेरी ओर सिर घुमाये बिना पूछा।

"कुछ नहीं," मैंने कहा और अपनी सीट पर लौट आया।

वास्तव में तो मैं सोच रहा था, इतना जोर लगाकर कि दिमाग के सारे पुर्ज़े चरमरा रहे थे, लेकिन मुझे सूझ कुछ नहीं रहा था। मुझे तो यह कलम से बने आकारवादी चित्र की ही याद दिलाता था।

"हां, कोई बहुत जानकारी नहीं मिल पायी," कोमव बोला। "लंगोटी भी फटी हुई निकली..."

"ओफ़्फ़," वंडरहूज भारी उसांस लेकर उठा और बाहर चला गया।

मेरा भी बहुत मन था कि बाहर जाऊं, देखूं माया कैसी है। पर कालमापी पर नजर डालने पर मैंने देखा कि ट्रांसमिशन खत्म होने में दस मिनट बचे हैं। मेरी पीठ पीछे कोमव कागज सरसराता कुछ कर रहा था। फिर मेरे कंधे के ऊपर से उसका हाथ आगे बढ़ा और मैंने मेज पर रेडियो संदेश का नीला फ़ार्म रखा पाया।

"यह स्पष्टीकरण है," कोमव ने कहा। "रिकार्डिंग का ट्रांसमिशन पूरा होते ही भेज देना।"

मैंने संदेश पढ़ा।

'ई० आर०-2, कोमव—बेस कैम्प, गर्बोव्स्की को, कॉपी: केंद्र, बादेर को। 'तीसरी आंख' ट्रांसमीटर से हुई रिकार्डिंग आपको भेज रहे हैं। वाहक मुन्ना। रिकार्डिंग 13.46 से 17.02 तक हुई। रिकार्डिंग भंग होने का कारण: मेरी लापरवाही से संयोगवश फ़्लैश लैम्प ऑन हो गया। इस क्षण स्थिति अनिश्चित है।'

मैं समझा नहीं, फिर से मैंने संदेश पढ़ा। फिर मुड़कर कोमव पर नजर डाली। वह अपनी पहलेवाली मुद्रा में बैठा हुआ था, गुंथी उंगलियों पर ठोड़ी टिकाये, और परिदृश्य स्क्रीन को देख रहा था। ऐसा तो नहीं था कि मैं उसके लिए कृतज्ञता से अभिभूत हो गया होऊं। नहीं, ऐसी कोई बात नहीं थी। इस व्यक्ति के लिए मेरे हृदय में कोई

12—1091

विशेष आसक्ति नहीं थी। लेकिन उसके किये की दाद तो देनी ही होगी। ऐसी स्थिति में हर कोई ऐसी दृढ़ता और सरलता न दिखाता। यह बात कोई मामने नहीं रखती कि उसने ऐसा क्यों किया: इसलिए कि उसे माया पर तरस आ गया (यह तो संदेहास्पद है), या फिर वह अपनी रुखाई के लिए शर्मिंदा है (यह बात सच्चाई के अधिक समीप लगती है) या इसलिए कि वह उन अधिकारियों में से है, जो अपने अधीनस्थों की चूक को सच्चे मन से अपनी चूक मानते हैं। जो भी हो, माया के लिए अंतरिक्ष का काम खोने का खतरा काफ़ी घट गया था, जबकि स्वयं कोमव की स्थिति और साख काफ़ी बिगड़ गयी थी। ठीक है, जनाब गेन्नादी कोमव। याद रखी जायेगी यह बात। ऐसे सुकर्मों को हर तरह का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। माया से हम बात कर लेंगे। सच, क्या भूत सवार हुआ है उसके सिर पर? नन्ही बच्ची है क्या? गुड्डे-गुड़ियां खेलने आयी है यहां?

स्वचालित ट्रांसमीटर की घंटी बजी और वह ऑफ़ हो गया। मैं रेडियो संदेश भेजने लगा। ट्राली धकेलता वंडरहूज अंदर आया। ज़रा भी आवाज़ किये बिना और असाधारण फुर्ती से, जिसकी सर्वोत्तम साइबर से उम्मीद की जा सकती है, उसने खाने की ट्रे कोमव की दायीं कोहनी के पास रख दी। कोमव ने अन्यमनस्कता से आभार प्रकट किया। मैंने टमाटर के रस का गिलास लिया, उसे पीकर फिर से गिलास भर लिया।

"सलाद?" वंडरहूज़ ने खेदमय स्वर में पूछा।

मैंने सिर हिला दिया और मेरी ओर पीठ किये कोमव से कहा:

"मेरा काम पूरा हो गया। मैं जा सकता हूं?"

"हां," कोमव ने मुड़े बिना उत्तर दिया। "यान से नहीं निकलना।"

गलियारे में वंडरहूज़ ने मुझे बताया:

"माया खाना खा रही है।"

"सिरफिरी," मैंने गुस्से से कहा।

"मुझे तो नहीं लगता। वह तो बिल्कुल शांत है और प्रसन्न। पश्चाताप जैसी कोई बात ही नहीं है।"

हम इकट्ठे ही डाइनिंग रूम में घुसे। माया बैठी सूप पी रही थी और कोई किताब पढ़ रही थी।

"सलाम कैदी को," अपना गिलास लेकर उसके सामने बैठते हुए मैं बोला।

माया ने किताब से नज़र हटाकर मेरी ओर देखा।

"बॉस के क्या हाल हैं?" उसने पूछा।

"गहरी सोच में डूबा है," उसे घूरते हुए मैंने कहा। "सोच रहा तुरंत ही तुम्हें मस्तूल पर लटका दे या डून ले जाये जहां तुम्हें ज़ंजीरों में बांधकर लटकाया जायेगा।"

"क्षितिजों का नज़ारा क्या कहता है?"

"कुछ नहीं बदला।"

"हां," माया बोली, "अब वह यहां नहीं आयेगा।"

उसने यह बात बड़े संतोष से कही। उसकी आंखों में हर्ष का भाव था और तब की ही भांति दृढ़ संकल्प का। मैंने जूस का घूंट भरा और कनखी से वंडरहूज़ पर नज़र डाली। वह उदासीन बना मेरे हिस्से का सलाद खा रहा था। तभी मेरे दिमाग में यह बात आयी: हमारा कप्तान तो इस बात पर खुश है कि इस वक्त कमांडर वह नहीं है।

"हां," मैं बोला। "लगता है, तुमने संपर्क की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।"

"अपराधिनी हूं," माया ने बस इतना ही कहा और फिर से नज़रें किताब पर गड़ा दीं। मगर वह पढ़ नहीं रही थी, वह बातचीत आगे बढ़ने का इंतज़ार कर रही थी।

"उम्मीद रखनी चाहिए कि मामला इतना नहीं बिगड़ा है," वंडरहूज़ ने कहा। "उम्मीद रखनी चाहिए कि यह एक और पेचीदगी ही है।"

"आप सोचते हैं मुन्ना लौट आयेगा?" मैंने पूछा।

"मैं सोचता हूं—आयेगा," वंडरहूज़ ने आह भरकर कहा। "उसे सवाल पूछने का बहुत शौक है। अब तो ढेरों नये प्रश्न उसके पास होंगे।" सलाद खत्म करके वह उठा। "रेडियो रूम में जाता हूं," उसने बताया। "सच पूछो तो बड़ी बेहूदी घटना है यह। मैं तुम्हारी बात समझता हूं—माया, पर तुमने जो किया है उसे सही नहीं ठहरा सकता। ऐसे नहीं किया जाता..."

माया ने कोई उत्तर नहीं दिया और वंडरहूज़ ट्राली धकेलता चला गया। जैसे ही उसके कदमों की आहट आनी बंद हुई, मैंने विनम्रता और साथ ही सख्ती से बोलने का यत्न करते हुए पूछा:

"तुमने यह जान-बूझकर किया था या गलती से?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" किताब पर नज़रें गड़ाये माया ने पूछा।

"कोमव ने कसूर अपने ऊपर ले लिया है।"

"मतलब?"

"फ़्लैश लैम्प उसकी लापरवाही से ऑन हुआ।"

"बहुत खूब," माया बोली। किताब रखकर उसने अंगड़ाई ली। "क्या उदारता है!"

"बस? और कुछ नहीं कहना चाहती हो तुम?"

"तुम चाहते क्या हो? सच्चे मन से अपराध स्वीकार करूं? प्रायश्चित करूं? आंसू बहाऊं?"

मैंने फिर से एक घूंट भरा। मैं अपने गुस्से पर काबू रख रहा था।

"सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहता हूं: यह संयोगवश हुआ या जान-बूझकर?"

"जान-बूझकर। और क्या?"

"और यह कि तुमने किसलिए यह हरकत की?"

"इसलिए कि यह बेहूदगी सदा के लिए खत्म हो जाये। आगे बोलो।"

"कैसी बेहूदगी? तुम कह क्या रही हो?"

"क्योंकि घिनौना है यह सब!" माया ज़ोर देकर बोली। "क्योंकि अमानवीय है यह। क्योंकि मैं हाथ पर हाथ धरे बैठी यह नहीं देख सकती थी कि यह भोंडा तमाशा कैसे एक त्रासदी बन रहा है।" उसने किताब परे फेंक दी। "क्या मुझे यों घूर रहे हो? कोई जरूरत नहीं मेरा हिमायती बनने की। आहा-हा, कितना दरियादिल है वह! डाक्टर म्वोगा का चहेता! मैं हर हालत में चली जाऊंगी। स्कूल में काम करूंगी, बच्चों को शिक्षा दूंगी ताकि वे समय रहते अमूर्त विचारों के इन सभी मतांधों का और उनकी हां में हां मिलानेवाले भोंदुओं का हाथ पकड़कर उन्हें रोकें!"

मैंने अंत तक शिष्टतापूर्वक, विनम्रता से बात करने का नेक इरादा बनाया था। लेकिन अब मेरा धीरज जाता रहा। ऐसे मामलों में मुझसे ज़्यादा धीरज नहीं बरता जाता।

"बदतमीज़ी है यह!" और कोई शब्द मुझे नहीं मिला। "बदतमीज़ी!"

मैंने एक और घूंट भरना चाहा, पर पता चला कि गिलास खाली है। अनजाने में ही मैं सारा जूस पी गया था।

"और क्या?" व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ माया ने पूछा।

"बस," खाली गिलास को घूरते हुए मैं खिन्न स्वर में बोला। वाकई, मेरे पास कहने को और कुछ नहीं था। सारे तीर छोड़ चुका था मैं। शायद मैं यहां माया के किये की वजह समझने नहीं, बस उसे खरी-खोटी सुनाने ही आया था।

"बस तो जाओ रेडियो रूम में," माया बोली, "गले मिलो अपने कोमव से। और अपने टॉम से, दूसरी सभी साइबर मशीनों से। हम तो इंसान हैं और इंसान की अच्छाइयों-बुराइयों से परे नहीं हैं।"

गिलास परे हटाकर मैं खड़ा हो गया। कहने को कुछ

नहीं था। सब कुछ स्पष्ट था। था अपना एक साथी—अब नहीं है साथी। कोई नहीं, जी लेंगे जैसे-तैसे।

"नमस्ते," मैंने कहा और मन भर भारी पांव घसीटता गलियारे को चल दिया।

मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, होंठ थरथरा रहे थे। अपने केबिन में जाकर मैं बिस्तर पर गिर पड़ा, मुंह सिरहाने में दबा लिया। दिमाग बिल्कुल खाली था और इस शून्य में अनकहे शब्द चक्कर काट रहे थे, एक दूसरे से टकराकर बिखर रहे थे। मूर्खता है। मूर्खता!.. माना तुम्हें यह इरादा पसंद नहीं। किसी की पसंद-नापसंद का यहां क्या सवाल है? आखिर तुम्हें यहां आमंत्रित तो नहीं किया गया, यह तो संयोग ही है कि तुम यहां मौजूद हो, तो ढंग से काम करो। कुछ भी तो समझ नहीं है तुम्हें संपर्कों की, अभागी क्वार्टरमास्टर... जो तुमसे कहा जाता है वह करो। क्या समझ है तुम्हें अमूर्त विचारों की! कहां देखा है तुमने अमूर्त विचार? आज वह अमूर्त है, कल उसके बिना इतिहास की गति रुक जायेगी... ठीक है, तुम्हें पसंद नहीं। तो इंकार कर दो। ...कितना अच्छा चल रहा था सब कुछ, मुन्ने के साथ कुछ समझ बनी ही थी, कितना प्यारा बालक है, कितना बुद्धिमान, उसे साथ लेकर क्या कुछ नहीं किया जा सकता! वाह री, क्वार्टरमास्टर। मित्र कहलाती है। ...अब न मुन्ना रहा, न मित्र... कोमव के भी क्या कहने हैं: टैंक की तरह बढ़ता जाता है, न किसी से कोई सलाह लेगा, न कुछ समझायेगा।... कान पकड़े मैंने, फिर कभी इन संपर्कों-वंपर्कों में भाग न लूंगा! यह सारा टंटा खत्म हो जाये, तुरंत ही 'नूह-2' परियोजना में नाम लिखवा लूंगा—वादिक के साथ, तान्या के साथ और उस होशियार नीना के साथ। दिन-रात काम करूंगा, बेकार की बातें किये बिना, और किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं दूंगा। कोई संपर्क-वंपर्क नहीं!.. मुझे पता भी नहीं चला कब मैं सो गया और सोया भी घोड़े बेचकर, जैसा कि मेरे

परदादा कहा करते थे। पिछले दो दिनों में मैं कुल मिलाकर चार घंटे भी तो नहीं सो पाया था। बड़ी मुश्किल से वंडरव्यूज़ मुझे जगा पाया। ड्यूटी देने का समय हो गया था।

"माया नहीं देगी?" उनींदे में मैं पूछ बैठा, पर तभी मुझे ध्यान आ गया। वंडरव्यूज़ ने मेरा प्रश्न न सुनने का दिखावा किया।

मैंने स्नान किया, कपड़े पहने और रेडियो रूम में चला गया। फिर से अप्रिय अनुभूतियों ने मुझे आ घेरा। न किसी से बात करने का मन था, न किसी को देखने का। वंडरव्यूज़ ने मुझे ड्यूटी सौंपी और यह बताकर कि यान के गिर्द कुछ नहीं हो रहा, कि छह घंटे बाद कोमव मेरा स्थान लेगा, सोने चला गया।

यान के समय के अनुसार रात के ठीक दस बजे थे। स्क्रीन पर चोटियों के ऊपर चमकती मेरु ज्योति नज़र आ रही थी, समुद्र से तेज़ हवा बह रही थी, गरम दलदल पर छाये कोहरे के चीथड़े उड़ा रही थी, बूची झाड़ियों को ठंड से जमी रेत पर झुका रही थी, समुद्र की तुरंत ही जमती जा रही झाग को तट पर उड़ा रही थी। अवतरण पट्टी पर हवा के सामने ज़रा सा झुका टॉम अकेला खड़ा था। उसकी सभी संकेत बत्तियां यह संदेश दे रही थीं कि वह खाली खड़ा है, कोई काम उसे नहीं सौंपा गया है, कोई भी आदेश पूरा करने के लिए तत्पर है। बड़ा ही मनहूस दृश्य था। मैंने बाहर का ध्वनि-ग्राहक ऑन किया, दो मिनट तक समुद्र की गरज, हवा की सांय-सांय और यान के कवर पर बर्फ़ीली बूंदों की ठकाठक सुनता रहा और फिर से उसे ऑफ़ कर दिया।

मैंने यह कल्पना करने की कोशिश की कि मुन्ना इस समय क्या कर रहा होगा। मुझे याद आया वह खानेदार गरम कोहरा, प्रकाश के अस्पष्ट पिंड, सही-सही कहा जाये तो प्रकाश नहीं उष्मा के थे वे, और वह एकसार उजाला,

और प्रतिबिंबों की वे रहस्यमय कतारें, उन प्रतिबिंबों की, जो वास्तव में प्रतिबिंब नहीं थे।... हां, वहां उसे गरमाहट मिल रही होगी, उसके लिए सब कुछ अपना, आरामदेह होगा और उसके पास अब सोचने-विचारने को कुछ होगा—बहुत कुछ होगा। बेचारा किसी पथरीले कोने में दुबक गया होगा और इस ठेस पर बुरी तरह दुखी हो रहा होगा, जो माया ने उसे पहुंचायी थी। ("मां-मां..."—"हां, मेरे मुनुआ"—मुझे याद आया।) मुन्ने की दृष्टि में यह सब बहुत बड़ा धोखा होगा। उसकी जगह मैं होता तो कभी न आता... कोमव कितना खुश हुआ था, जब माया ने मुन्ने को अपना छल्ला पहना दिया था। "शाबाश, माया," उसने कहा था। "यह बड़ा अच्छा मौका है। मैं तो ऐसा जोखिम न लेता..."। वैसे, तो कोई बात बनी नहीं। 'तीसरी आंख' के डिजाइनरों ने बहुत सी बातों का ध्यान नहीं रखा है। उसका लैंस ऐसा होना चाहिए था कि वह त्रिविम चित्र देता... वैसे तो वह दूसरे उद्देश्य के लिए बनाया गया है।... पर फिर भी कुछ तो हमने देख ही लिया, जैसे कि मुन्ने की उड़ान, पर वह किस तरह उड़ रहा था, क्यों उड़ रहा था, किस चीज़ पर? ... और ध्वस्त 'पेलिकन' के पास वह दृश्य... अदृश्य जीवों का ग्रह है यह। हां, अगर कोमव प्रहरी-टोही छोड़ने की अनुमति दे देता तो बहुत सी दिलचस्प चीज़ें यहां देखी जा सकती थीं। शायद, अब दे दे? प्रहरी-टोही की भी ज़रूरत नहीं है। शुरू में तो सैम्पल लेनेवाला रडार ही क्षितिज पर चला देखें।...

रेडियो कॉल की धुन बजी। मैं वायरलैस सेट के पास गया। अपरिचित स्वर ने बड़ी विनम्रता से, मैं तो कहूंगा झिझकते हुए कोमव को बुलाने को कहा।

"कौन बुला रहा है?" मेरी आवाज़ में कोई विशेष विनम्रता नहीं थी।

"मैं संपर्क आयोग का सदस्य हूं। गर्वोव्स्की नाम है मेरा," मैं बैठ गया। "मुझे गेन्नादी कोमव से ज़रूरी बात करनी है। क्या वह सो रहे हैं?"

"जी, अभी बुलाता हूं," मैं बुदबुदाया। "अभी..." मैंने जल्दी से इंटरकोम ऑन किया। "कोमव रेडियो रूम में आये," मैं बोला। "बेस कैम्प से अर्जेंट कॉल है।"

"नहीं, भई, कोई ऐसी अर्जेंट नहीं है..." गर्वोव्स्की ने आपत्ति की।

"लेओनीद आन्द्रेयेविच गर्वोव्स्की बुला रहे हैं," बड़े जोश-खरोश से मैंने इंटरकोम में कहा ताकि कोमव ज्यादा देर न लगाये।

"नौजवान..." गर्वोव्स्की ने मुझे बुलाया।

"जी, स्तास पपोव, साइबरटेक्नीशियन ड्यूटी दे रहा है!" मैंने रिपोर्ट दी। "मेरी ड्यूटी के दौरान कोई घटना नहीं हुई है।"

गर्वोव्स्की ज़रा देर चुप रहा, फिर कुछ हिचकिचाते हुए बोला:

"विश्राम..."

तेज़ी से बढ़ते कदमों की आवाज़ सुनायी दी और कोमव अंदर आया। उसका चेहरा उतरा हुआ था, आंखें चढ़ी हुई थीं, आंखों के गिर्द काला घेरा था। मैंने उठकर अपनी सीट उसके लिए खाली कर दी।

"कोमव सुन रहा है," वह बोला। "आप हैं लेओनीद आन्द्रेयेविच?"

"हां, मैं हूं, नमस्ते..." गर्वोव्स्की ने उत्तर दिया। "सुनिये, गेन्नादी, ऐसा नहीं कर सकते कि हम एक दूसरे को देख सकें, यहां कुछ बटन हैं..."

कोमव ने मेरी तरफ़ बस देखा ही, मेरे हाथ अपने आप स्विचबोर्ड की तरफ़ बढ़ गये और मैंने वीडियोफ़ोन ऑन कर दिया। हम रेडियो आपरेटर उसे ऑफ़ रखते हैं—कई कारणों से।

"हां," गर्बोव्स्की ने संतुष्ट होकर कहा। "अब मैं आपको देख रहा हूं।"

वीडियोफ़ोन के हमारे स्क्रीन पर भी तस्वीर आ गयी—वही परिचित चेहरा, जिसके कई फ़ोटो मैंने देखे थे और वर्णन सुने थे। चेहरा मानो ज़रा सा अंदर को धंसा हुआ था। फ़ोटो-पोर्ट्रेटों में तो गर्बोव्स्की किसी प्राचीन यूनानी दार्शनिक जैसा लगता था, लेकिन अब वह उदास और निराश लग रहा था। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उसकी बत्तख जैसी चपटी नाक पर खरोंच है, सो भी ताज़ी ही। जब तस्वीर बिल्कुल ठीक से आने लगी तो मैं पीछे हट गया और ड्यूटी देनेवाले की कुर्सी पर बैठ गया। मुझे लग रहा था कि अभी मुझसे बाहर निकल जाने को कहेंगे, सो मैं बहुत एकाग्रचित्त होकर परिदृश्य पटल पर बाहर का दृश्य देखने लगा, जहां बर्फ़ीली आंधी चल रही थी।

गर्बोव्स्की ने कहा :

"पहली बात, आपका बहुत धन्यवाद, गेन्नादी। मैंने आपकी सारी सामग्री देखी है और मैं कहना चाहता हूं कि यह बिल्कुल ही खास चीज़ है। अत्यंत रोचक। बड़ी सूझ-बूझ से काम किया है... बड़ी सफ़ाई से... इतनी तेज़ी से..."

"आभारी हूं," कोमव ने बेरुखी से कहा। "परंतु?"

"'परंतु' क्यों?" गर्बोव्स्की हैरान हुआ। "'और' आप कहना चाहते हैं। और आयोग के अधिकांश सदस्यों का भी यही मत है। विश्वास नहीं होता कि इतना विराट कार्य दो दिनों में कर लिया गया है।"

"इसमें मेरा कोई हाथ नहीं," कोमव शुष्क स्वर में बोला। "बस, परिस्थितियां अनुकूल थीं।"

"नहीं-नहीं, मैं नहीं मान सकता," गर्बोव्स्की ने तुरंत ही आपत्ति की। "यह तो आपको मानना होगा आप पहले से जानते थे कि किसके साथ आपका वास्ता है। पहले

से जानना कोई मामूली बात नहीं है। और फिर आपकी दृढ़ता, आपकी अंतर्दृष्टि... उद्यम..."

"आपकी प्रशंसा के लिए आभारी हूं, लेओनीद आन्द्रेयेविच," कोमव ने जरा तीखी आवाज में दोहराया।

गर्बोव्स्की थोड़ी देर चुप रहा, फिर बहुत ही धीमे से उसने पूछा:

"गेन्नादी, आप मुन्ने के भविष्य की कल्पना किस रूप में करते हैं?"

यह पूर्वानुभूति कि अभी, तुरंत ही, पलक झपकते ही, जल्दी से जल्दी और दो टूक ढंग से मुझसे रेडियो रूम से निकल जाने को कहा जायेगा, चरम बिंदु पर पहुंच गयी। मैं सिकुड़कर, सांस थामकर बैठा रहा।

कोमव ने कहा:

"मुन्ना पृथ्वी और मूलनिवासियों के बीच मध्यस्थ होगा।"

"मैं समझता हूं," गर्बोव्स्की बोला। "यह तो बहुत अच्छा रहे। परंतु अगर संपर्क न हुआ तो?"

"लेओनीद आन्द्रेयेविच," कोमव की आवाज सख्त थी। "आइये, साफ़-साफ़ बात करें। वह सब साफ़-साफ़ कह दें, जो इस वक्त हम सोच रहे हैं और जिसका हमें सबसे ज्यादा डर है। मैं मुन्ने को पृथ्वी का औजार बनाने का प्रयत्न कर रहा हूं। इसके लिए मैं सभी उपलब्ध साधनों से उसमें मानव को पुनरुज्जीवित करने की चेष्टा कर रहा हूं—आप चाहें तो इसे निर्ममता कह लें। कठिनाई सारी यह है कि मानवीय मानसिकता, संसार के प्रति हम पृथ्वीवालों का रुख, प्रत्यक्षतः, यहां के मूलनिवासियों के लिए पूर्णतः विजातीय हैं। वे हमें नहीं चाहते, हमें अपने से परे धकेलते हैं। और यह रुख मुन्ने की भी, जिसे उन्होंने पाला-पोसा है, अवचेतना में गहरा समाया हुआ है। सौभाग्यवश या दुर्भाग्यवश, मूलनिवासियों ने मुन्ने में काफ़ी कुछ मानव-सुलभ रहने दिया है, जिससे हमें उसकी चेतना जीत

पाने का अवसर मिलता है। अब जो स्थिति बनी है वह एक क्रांतिक स्थिति है। टकराव बहुत गंभीर और जोखिम भरा है, मैं यह बखूबी समझता हूं, परंतु इस टकराव का समाधान है। मुझे मुन्ने को तैयार करने के लिए केवल कुछेक दिन ही और चाहिए। मैं उसे वास्तविक स्थिति से अवगत करा दूंगा, उसके अवचेतन को मुक्त कर दूंगा और तब वह पूरी तरह हमारा सहयोगी बन जायेगा। लेओनीद आन्द्रेयेविच, आप यह समझे बिना नहीं रह सकते कि ऐसा सहयोग हमारे लिए कितना मूल्यवान है।... मुझे अनेक कठिनाइयों का पूर्वानुमान है। उदाहरण के लिए जब हम मुन्ने को वास्तविकता से अवगत करा देंगे तो हमारे प्रति उसका अवचेतन विकर्षण अपने 'घर', अपने रक्षकों और पोषकों की रक्षा करने की सचेतन चेष्टा का रूप ले सकता है। शायद, नये खतरनाक तनाव पैदा हो जायें। परंतु मुझे विश्वास है हम मुन्ने को इस बात का कायल कर सकेंगे कि हमारी सभ्यताएं—दो बराबर के सहयोगी हैं, जिनके अपने-अपने गुण और कमियां हैं। और तब वह हमारे बीच मध्यस्थ के नाते जीवनपर्यंत दोनों ओर से संपोषित होता रहेगा, न एक के लिए आशंकित होगा, न दूसरे के लिए। उसे अपनी अद्वितीय स्थिति पर गर्व होगा, उसका जीवन हर्षमय और परिपूर्ण होगा," कोमव पल भर को चुप हो गया। "हमें यह जोखिम उठाना चाहिए, हमारा फ़र्ज़ बनता है यह। ऐसा मौका फिर कभी नहीं आयेगा। यही मेरा दृष्टिकोण है।"

"मैं समझता हूं," गर्बोव्स्की बोला। "आपके विचार जानता हूं, उनकी कद्र करता हूं... यह भी जानता हूं कि किस खातिर आप जोखिम उठाने का सुझाव दे रहे हैं। पर यह भी मानना होगा कि जोखिम की एक सीमा होनी चाहिए। यकीन मानिये, शुरू से मैं आपके पक्ष में था। मैं जानता था कि हम जोखिम उठा रहे हैं, मैं डरता था, लेकिन सोचता था: हो सकता है सब ठीक रहे? कैसी

संभावनाएं हैं, कैसे परिप्रेक्ष्य!... साथ ही मैं यह भी सोचता था कि किसी भी क्षण हम पीछे हट सकते हैं। मुझे यह ख्याल तक नहीं आया कि बालक इतना संसर्गशील निकलेगा, कि दो दिन में ही मामला इतनी दूर पहुंच जायेगा।" गर्बोव्स्की रुका। "गेन्नादी, संपर्क नहीं होगा। यहां से लौटना चाहिए।"

"संपर्क होगा!" कोमव बोला।

"संपर्क नहीं होगा," मृदु स्वर में, किंतु आग्रहपूर्वक गर्बोव्स्की ने कहा। "गेन्नादी, आप भली-भांति समझते हैं कि यहां हमारा वास्ता कुंडली की तरह अपने में बंद, संवृत सभ्यता से, अपने आप में सिमटकर रह गयी बुद्धि से है।"

"यह संवृतता नहीं है," कोमव बोला। "यह आभासी संवृतता है। उन्होंने अपने ग्रह का निजर्मीकरण कर रखा है और स्पष्टतः उसे इस अवस्था में बनाये रख रहे हैं। उन्होंने किसी वजह से मुन्ने की रक्षा की, उसे पाला-पोसा। अंततः, उन्हें मानवजाति का खासा अच्छा ज्ञान है। यह आभासी संवृतता है, लेओनीद आन्द्रेयेविच।"

"पर, गेन्नादी, पूर्ण संवृतता तो केवल सिद्धांत रूप में ही हो सकती है। बेशक, कोई न कोई बहिर्लक्षित प्रकार्यात्मक गतिविधि शेष रहती है, जैसे कि स्वच्छता एवं हाईजीन की। रही बात मुन्ने की... बेशक, ये सब अटकलें ही हैं, पर मान लो कि सभ्यता काफ़ी पुरानी है तो संभव है उसकी परोपकारिता ने निरोपाधिक सामाजिक प्रत्यावर्त का, सामाजिक सहजवृत्ति का रूप ले लिया हो। शिशु की रक्षा मात्र इसलिए की गयी कि ऐसा करने की आवश्यकता थी।..."

"यह सब संभव है," कोमव ने कहा। "बात अनुमानों-अटकलों की नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आभासी संवृतता है और संपर्क के लिए गुंजाइश बची हुई है। बेशक, उनके समीप आने की प्रक्रिया बहुत लंबी होगी।

सामान्य विवृत सभ्यता के साथ सामीप्य स्थापित करने के लिए जितना समय चाहिए उससे डेढ़-दो गुना अधिक।... नहीं, लेओनीद आन्द्रेयेविच, यह सब मैंने सोचा है, और आप स्वयं भी जानते हैं कि आपने मुझे कोई नयी बात नहीं बतायी है। आपका मत मेरे मत के विपरीत है—बस। आप पीछे हटने का सुझाव दे रहे हैं, जब कि मैं इस एकमात्र अवसर का अंत तक उपयोग करना चाहता हूं।"

"गेन्नादी, यह केवल मेरी राय नहीं है कि संपर्क नहीं होगा," गर्बोव्स्की ने हौले से कहा।

"और किसकी है?" कोमव के प्रश्न में हल्के व्यंग्य का पुट था। "ऑगस्ट-योहान्न-मरिया बादेर की?"

"नहीं, केवल बादेर की ही नहीं। सच पूछें तो मैंने अभी तक एक तुरुप चाल आपसे छिपा रखी थी।... गेन्नादी, आपको कभी यह ख्याल नहीं आया कि शूरा सेम्योनोव ने लॉग बुक इस ग्रह पर नहीं मिटायी, अंतरिक्ष में ही मिटा दी थी; इसलिए नहीं कि उसने कोई भयावह बुद्धिसंपन्न जीव देखे, बल्कि इसलिए कि उस पर अंतरिक्ष में ही हमला हुआ और उसने सोचा कि इस ग्रह पर उच्चतः विकसित आक्रामक सभ्यता है? हमारे दिमाग में यह बात आयी। बेशक तुरंत ही नहीं आयी, पहले तो हमने आपकी ही भांति असत्य आधारिका से सत्य निष्कर्ष निकाले। परंतु जैसे ही यह विचार दिमाग में आया, हम ग्रह के समीपवर्ती अंतरिक्ष को छानने लगे। अभी दो घंटे पहले सूचना आयी है कि वह मिल गया," गर्बोव्स्की चुप हो गया।

मैं बड़ी मुश्किल से यह चिल्लाने से अपने को रोके हुए था: "कौन? कौन मिल गया?" मेरे ख्याल में गर्बोव्स्की को भी ऐसे ही प्रश्न की प्रत्याशा थी। परंतु कोमव मौन साधे रहा। गर्बोव्स्की को स्वयं ही बात आगे जारी रखनी पड़ी:

"वह गजब से छिपाया हुआ है। वह प्रायः सभी

किरणों को अवशोषित कर लेता है। यदि हमने विशेष तौर पर उसकी खोज न की होती तो उसे कभी भी न ढूंढ़ पाते, इसमें भी कुछ नवीनतम साधनों से काम लिया गया है, मुझे बताया था, पर मैं पूरी तरह समझा नहीं क्या है–कोई निर्वात सांद्रक। बहरहाल, हमने उसे ढूंढ़ लिया है और अपने स्टेशन से जोड़ लिया है। स्वचालित कृत्रिम उपग्रह है, एक तरह का सशस्त्र प्रहरी। उसके कुछ पुर्जों से लगता है कि पथिकों ने उसे यहां तैनात किया था। बहुत पहले, कुछ लाख साल पहले। 'नूह' परियोजना के सहभागियों का सौभाग्य समझिये कि उस पर केवल दो गोले थे। पहला गोला बहुत पहले कभी छोड़ा गया था, हम तो कभी जान ही नहीं पायेंगे कि किस पर छोड़ा गया था। दूसरे का लक्ष्य सेम्योनोव का यान बना। पथिक इस ग्रह को निषिद्ध मानते थे, और कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता। सवाल उठता है: क्यों निषिद्ध मानते थे? हम जो कुछ जानते हैं, उसे देखते हुए उत्तर केवल एक हो सकता है: वे अपने अनुभव से यह समझ गये थे कि स्थानीय सभ्यता के साथ संसर्ग नहीं हो सकता, यही नहीं, वह संवृत है, इतना ही नहीं, उसके साथ संपर्क स्थापित करने से उसके लिए गंभीर परिणाम हो सकते हैं। अगर केवल बादेर ही मेरे पक्ष में होते... पर, जहां तक मुझे याद पड़ता है, गेन्नादी, आपके मन में पथिकों के लिए सदा गहरी श्रद्धा रही है। गर्बोव्स्की फिर से थोड़ी देर को चुप हो गया। परंतु बात यही नहीं है। और सभी परिस्थितियां समान होतीं तो हम पथिकों के मत के बावजूद बड़ी सतर्कता से, बहुत धीमे-धीमे इन अंतर्मुखी मूलनिवासियों को बहिर्मुखी बनाने का प्रयत्न कर सकते थे। हद से हद यही होता कि हम एक और नकारात्मक परिणाम पाते। हम यहां कोई चिह्न लगा देते और यहां से चले जाते। यह केवल हमारी दो सभ्यताओं का मामला होता।.. परंतु बात यह है कि अब हमारी दो सभ्यताओं के बीच, मानो घन

और निहाई के बीच एक तीसरी सभ्यता आ गयी है, और गेन्नादी, इस तीसरी सभ्यता के लिए, उसके एकमात्र प्रतिनिधि मुन्ने के लिए हम इधर कुछ दिनों से पूरी तरह उत्तरदायी हो गये हैं।"

मुझे कोमव की लंबी उसांस सुनायी दी और एक लंबा मौन छा गया। जब कोमव फिर से बोला तो उसकी आवाज़ अजीब थी, मानो उसके अंतस में कुछ टूट गया हो। उसने पथिकों की चर्चा छेड़ी; पहले इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि प्रहरी उपग्रह तैनात करके पथिकों ने अपराध की हद तक जोखिम लिया, परंतु फिर स्वयं ही इस बात के परोक्ष साक्ष्य उसने याद किये, जिनके अनुसार पथिक सदा यानों के स्क्वाड्रन लेकर यात्रा करते हैं और उनकी कल्पना में कोई भी एकाकी स्वचालित टोही यान के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। उसने यह भी कहा कि पृथ्वी पर भी एकाकी उड़ानों का आधी शताब्दी तक चला बर्बर युग समाप्त हो रहा है—इनमें अत्यधिक क्षतियां हुई हैं, अत्यधिक बेतुकी गलतियां हुई हैं, अत्यल्प परिणाम प्राप्त हुए हैं। "हां," गर्बोव्स्की ने हामी की, "मैं भी यही सोच रहा था। फिर कोमव ने कुछ ग्रहों की ओर छोड़े गये स्वचालित टोही यानों के रहस्यमय ढंग से विलुप्त होने की घटनाएं याद कीं। हमें इन घटनाओं का विश्लेषण करने की फ़ुरसत ही नहीं मिल रही थी; परंतु अब उन्हें नये प्रकाश में देखा जा सकता है। "बिल्कुल सही बात है!" गर्बोव्स्की ने सोत्साह समर्थन किया। "यह तो मैंने सोचा ही नहीं था, बड़ा रोचक विचार है।" वे फिर से प्रहरी उपग्रह की बात करने लगे, हैरान हुए कि उस पर केवल दो गोले थे, यह अनुमान लगाने लगे कि ऐसी हालत में ब्रह्मांड के आवासित होने की पथिकों की धारणाएं क्या हैं, यह पाया कि अंततोगत्वा वे हमारी धारणाओं से बहुत भिन्न नहीं हैं, परंतु यह विचार भी स्वतः आता है कि पथिक प्रत्यक्षतः यहां लौटने का इरादा रखते थे, परंतु किन्हीं कारणों से लौटे

नहीं—शायद बोरोविक का यह अनुमान यही है कि पथिक हमारी मंदाकिनी छोड़कर चले गये हैं। कोमव ने मज़ाक में यह सुझाया कि यहां के मूलनिवासी ही पथिक हैं—बाह्य सूचना से संतृप्त होकर अपने में सिमट चुके, संवृत हो चुके। गर्बोव्स्की ने भी मज़ाक में पूछा कि ऊर्ध्व प्रगति के सिद्धांत को देखते हुए पथिकों के ऐसे उद्विकास को कैसे समझा और आंका जाये?

फिर वे डाक्टर म्बोगा के स्वास्थ्य की बात करने लगे, अचानक किसी द्वीप साम्राज्य में शांति स्थापित करने के प्रश्न पर आ गये, इसमें किसी कार्ल लुड्विग की भूमिका की बात करने लगे, उसे भी पता नहीं क्यों वे पथिक कह रहे थे; कार्ल लुड्विग की बात करते-करते पता नहीं कब और कैसे मंदाकिनी सुरक्षा परिषद के क्षेत्राधिकार के प्रश्न पर आ गये, दोनों इस बात पर सहमत थे कि इस क्षेत्राधिकार में केवल मानवाभ सभ्यताएं आती हैं।... शीघ्र ही उनकी बातें मेरी समझ से परे हो गयीं, सबसे बड़ी बात मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वे इन विषयों की ही चर्चा क्यों कर रहे हैं।

फिर गर्बोव्स्की बोला:

"माफ़ करना, गेन्नादी, मैंने आपको बिल्कुल थका डाला। जाइये, आराम करिये। बड़ी खुशी हुई आपसे बातचीत करके। अरसे से हमारी मुलाकात नहीं हुई थी।"

"पर जल्दी ही फिर मिलेंगे," खेद मिश्रित स्वर में कोमव बोला।

"हां, सोचता हूं दो-एक दिन में। बादेर आ रहे हैं। बोरोविक भी। मैं सोचता हूं, परसों सारा संपर्क आयोग बेस कैम्प पर होगा।"

"तो, परसों मिलेंगे," कोमव बोला।

"अपने वह ड्यूटीवाले को नमस्ते कहना... स्तास पपोव है न। बड़ा... फ़ौजी ढंग का है। और हां जैकब को नमस्ते कहना ज़रूर। बाकी सब को भी।"

उन्होंने विदा ली।

मैं दम साधे बैठा था, परिदृश्य पटल को घूरता जा रहा था, कुछ दिख नहीं रहा था, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मेरी पीठ पीछे कोई आवाज़ नहीं हो रही थी। समय रेंग रहा था। मुड़कर देखने की इच्छा इतनी उत्कट थी कि गर्दन अकड़ गयी थी, छाती में धुकधुक हो रही थी। बिल्कुल स्पष्ट था कि कोमव चारों खाने चित्त हो गया है। कम से कम मेरी दशा तो यही थी। मैं कोमव के बदले उत्तर खोजने का प्रयत्न कर रहा था, लेकिन दिमाग में बस एक ही निरर्थक बात घूम रही थी: "कौन होते हैं ये पथिक-वथिक ? बड़े आये हैं बुद्धिमान! मैं तो खुद किसी पथिक से कम नहीं हूं।..."

अचानक कोमव बोला:

"आपकी क्या राय है, पपोव ?"

मेरे मुंह से निकलने ही वाला था: "कौन होते हैं पथिक?" पर मैं संभल गया। पल भर को पूर्ववत मुद्रा में बैठा रहा, फिर कुर्सी समेत घूमा। कोमव गुंथी उंगलियों पर ठोड़ी टिकाये वीडियोफ़ोन के बुझ गये स्क्रीन को देख रहा था। उसकी आंखें अधमुंदी थीं, मुंह पर शोक का भाव था।

"शायद, इंतज़ार करना पड़ेगा..." मैं बोला। "क्या किया जाये... शायद मुन्ना भी अब न आये... कम से कम जल्दी तो नहीं आनेवाला..."

कोमव के मुंह के कोने पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान खेल गयी।

"मुन्ना तो आयेगा," वह बोला। "मुन्ने को प्रश्न पूछने का बहुत शौक है। ज़रा सोचिये, अब उसके पास कितने नये प्रश्न हैं ?"

यह शब्दशः वही बात थी जो वंडरहूज़ ने डाइनिंग रूम में कही थी।

"तब, हो सकता है..." असमंजस में मैं बुदबुदाया, "हो सकता है, वाकई बेहतर हो..."

मैं भला क्या कह सकता था? गर्बोव्स्की के बाद, स्वयं कोमव के बाद बीस साल का एक मामूली साइबर-टेक्नीशियन, जिसका सारा व्यावहारिक अनुभव साढ़े छह दिन का था, क्या कह सकता था—आदमी तो शायद वह बुरा नहीं है, मेहनती है, जिज्ञासु है, वगैरह-वगैरह, पर, सच कहना होगा, बहुत बुद्धिमान नहीं, भोला है, अज्ञानी है।...

"हो सकता है," मुरझायी आवाज़ में कोमव बोला। वह उठा, पांव घसीटता दरवाज़े की ओर चल दिया, पर दरवाज़े पर पहुंचकर रुक गया। सहसा उसका चेहरा विकृत हो गया। वह चिल्लाया: "क्या तुममें कोई भी यह नहीं समझता कि मुन्ना एकमात्र मौका है, ऐसा होना तो वस्तुतः असंभव है, इसलिए यह एकमात्र और अंतिम अवसर है! ऐसा फिर कभी नहीं होगा। समझे? कभी नहीं!"

वह चला गया। मैं वायरलैस की ओर मुंह किये और परिदृश्य पटल की ओर पीठ किये बैठा था, अपने विचारों को इतना नहीं, जितना भावनाओं को समझने की कोशिश कर रहा था। कभी नहीं!... हां, कभी नहीं। कैसे उलझ गये हैं हम यहां। बेचारा कोमव, बेचारी माया, बेचारा मुन्ना... कौन सबसे बढ़कर बेचारा है? बेशक, अब हम यहां से चले जायेंगे। मुन्ने को राहत मिलेगी, माया अध्यापन का प्रशिक्षण पाने चली जायेगी, सो कोमव ही बेचारा है। ज़रा सोचिये तो: आदमी खुद एक बिल्कुल अद्वितीय अवसर पाये, अपने विचारों के लिए प्रायोगिक आधार बनाने का विरलतम अवसर पाये और फिर सहसा सब कुछ तहस-नहस हो जाये! वही मुन्ना, जिसे सच्चा सहायक, अनमोल मध्यस्थ बनना था, सभी बाधाओं को तोड़नेवाली प्रमुख शक्ति बनना था, वही सबसे बड़ी बाधा बन गया... आखिर ऐसे विकल्प का सवाल यों तो नहीं उठाया जा सकता: मुन्ने का भविष्य या मानवजाति की ऊर्ध्व प्रगति। इसमें कोई तार्किक चाल है, ज़ेनो के असाध्य प्रश्नों जैसी... या ऐसा कुछ नहीं है? शायद प्रश्न ऐसे ही

उठाया जाना चाहिए। आखिर मानवजाति की बात है... अपने विचारों में डूबा मैं कुर्सी पर स्क्रीन की ओर घूम गया, अन्यमनस्क सा बाहर के दृश्य को देखने लगा—और अवाक रह गया। सारे प्रश्न तुरंत काफ़ूर हो गये।

वर्फ़ीली आंधी मानो कभी चली ही नहीं थी। चारों ओर सब कुछ तुषार और हिम से धवल था, टॉम यान के बिल्कुल पास, अदृश्य क्षेत्र की सीमा पर, हैच के पास खड़ा था, और मैं तुरंत ही समझ गया कि वहां हिम पर मुन्ना बैठा है, दो सभ्यताओं के बीच फंसा, एकाकी, अंदर आने का साहस नहीं कर पा रहा है।

मैं उछला और गलियारे में दौड़ चला। निर्गम कक्ष में मैंने यंत्रवत फ़रकोट उठा लिया, पर तुरंत ही फेंक दिया, सारे शरीर से हैच की झिल्ली से जा टकराया और बाहर गिर पड़ा। भोंदू टॉम ने आदेश मांगते हुए बत्ती जला दी। सब कुछ सफ़ेद था और मेरु ज्योति में चमचमा रहा था। हैच के पास ही, मेरे पांवों के पास कोई गोल काली चीज थी। शैतान जाने पल भर को कैसी भयावह कल्पना मस्तिष्क में कौंधी। मैं तुरंत ही झुकने का साहस भी नहीं कर पाया।

यह हमारी गेंद थी और उस पर 'तीसरी आंख' का छल्ला लगा हुआ था। लैंस टूटा हुआ था, छल्ला ऐसा लगता था जैसे उस पर पहाड़ गिरा हो।

और हिम की चादर पर एक भी चिह्न नहीं था।

उपसंहार

हर बार, जब उसकी बात करने की इच्छा होती है, वह मुझे बुला लेता है।

"नमस्ते, स्तास," वह कहता है। "चलो, कुछ बातें करें। करोगे?"

संचार के लिए चौबीस घंटों में से चार घंटे का समय

निर्धारित है, परंतु वह कभी उसकी परवाह नहीं करता। मैं जब सो रहा होता हूं, या नहा रहा होता हूं, या रिपोर्ट लिख रहा होता हूं, उसके साथ अगली बातचीत की तैयारी कर रहा होता हूं, या पथिकों के कृत्रिम उपग्रह का पुर्ज़ा-पुर्ज़ा खोल रहे साथियों की मदद कर रहा होता हूं—किसी भी समय वह मुझे बुला लेता है। मैं नाराज़ नहीं होता। उस पर गुस्सा नहीं किया जा सकता।

"नमस्ते, मुन्ना," मैं जवाब देता हूं। "क्यों नहीं, चलो, बातें करते हैं।"

वह मानो प्रसन्न होकर आंखें सिकोड़ता है और सदा की भांति पहला प्रश्न पूछता है:

"स्तास, तुम सचमुच के हो? या यह तुम्हारी प्रेतच्छाया है?"

मैं उसे यकीन दिलाता हूं कि यह मैं, स्तास पपोव स्वयं हूं, कोई प्रेतच्छाया नहीं। कितनी ही बार मैं उसे समझा चुका हूं कि मैं उसकी भांति प्रेतच्छाया नहीं छोड़ सकता, मेरे ख्याल में वह कब का यह समझ चुका है, परंतु प्रश्न पूछता है। शायद, इस तरह वह मज़ाक करता है, शायद इसके बिना वह अभिवादन अधूरा समझता है, या शायद उसे "प्रेतच्छाया" शब्द अच्छा लगता है। उसके कुछ मनपसंद शब्द हैं—"छवि", "प्रेतच्छाया", "कमाल है", "ढोल बजा ढम-ढम-ढम"...

"आंख क्यों देखती है?" वह शुरू करता है।

मैं उसे समझाता हूं कि आंख क्यों देखती है। वह बड़े ध्यान से सुनता है, बीच-बीच में अपनी लंबी, संवेदनशील उंगलियों से आंखों को छूता जाता है। वह गजब का श्रोता है, किसी बात पर चकित होने पर लोट-पोट होने का अपना वह अंदाज़ उसने छोड़ दिया है, तो भी उसमें मुझे सदा किसी धुन का अहसास होता है, जो अकथनीय है, मेरे लिए अबोधगम्य है, मेरे लिए ज्ञान-प्राप्ति की उसकी यह उमंग सर्वग्राही है।

"कमाल है!" मैं जब बताना खत्म करता हूं तो वह तारीफ़ करता है। "लट्टू! अभी मैं इस पर विचारूंगा, फिर दुबारा से पूछूंगा..."

प्रसंगतः, वह जो सुनता है उस पर अकेले में विचार करने की इस प्रक्रिया में (चेहरे की मांसपेशियों का द्रुत नृत्य, कंकड़ों, टहनियों और पत्तियों की विचित्र आकृतियां) उसके दिमाग में बहुत ही विचित्र प्रश्न उठते हैं। इस बार भी वह पूछता है:

"कैसे पता चला कि लोग मस्तिष्क से सोचते हैं?" मैं कुछ-कुछ भौचक रह जाता हूं और अटकलें लगाने लगता हूं। वह पहले की ही तरह बड़े ध्यान से सुनता है, धीरे-धीरे मैं सही रास्ता ढूंढ़ लेता हूं, सब कुछ ठीक चलता है, हम दोनों ही संतुष्ट प्रतीत होते हैं, पर जब मैं खत्म करता हूं तो वह कहता है:

"नहीं। यह तो एक खास मामला है। सदा और सर्वत्र ऐसा नहीं होता। यदि मैं मस्तिष्क से सोचता हूं तो क्यों हाथों के बिना बिल्कुल ही नहीं विचार सकता?"

मैं महसूस करता हूं कि हम खतरनाक विषय पर आ गये हैं। केंद्र से मुझे सख्त निर्देश मिले हैं कि किसी भी कीमत पर मैं ऐसी बातों से कन्नी काटूं, जिनसे मुन्ने के दिमाग में मूलनिवासियों का विचार पैदा हो सकता हो। बहुत सही निर्देश हैं। ऐसी बातों से पूरी तरह बचना तो नहीं हो पाता और इधर मैं यह देखने लगा हूं कि मुन्ना स्वयं भी यदि अपने जीवन के ढंग का उल्लेख कर देता है, तो उसे इस पर कष्ट होता है। शायद वह भांपने लगा है? कौन जाने... पिछले कई दिनों से मैं इस इंतज़ार में हूं कि वह सीधे-सीधे यह प्रश्न पूछ बैठेगा। मैं चाहता हूं कि वह यह प्रश्न पूछे और डरता भी हूं...

"आप क्यों हाथों के बिना विचार सकते हैं, मैं क्यों नहीं?"

"यह तो हम ठीक-ठीक नहीं जानते," मैं स्वीकार

करता हूं और सावधानी से इतनी बात और जोड़ता हूं: "ऐसा अनुमान है कि तुम पूर्णतः मानव नहीं हो..."

"तो फिर मानव क्या है?" तुरंत ही प्रश्न आता है। "पूर्णतः मानव क्या है?"

मैं नहीं जानता कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जा सकता है, सो वायदा करता हूं कि अगली बार इसका उत्तर दूंगा। उसने तो मुझे पूरा ज्ञान-भंडार बना दिया है। कभी-कभी मैं दिन रात बैठा नयी सूचना आत्मसात करता रहता हूं। प्रधान सूचनालय मेरे लिए काम करता है, नाना ज्ञान शाखाओं के बड़े-बड़े विशेषज्ञ मेरे लिए काम करते हैं, मुझे किसी भी क्षण उनसे संपर्क करने का और उनसे कोई भी प्रश्न पूछने का अधिकार है...

"तुम थके-थके लग रहे हो," मुन्ना सहानुभूतिपूर्वक कहता है। "थक गये हो?"

"कोई बात नहीं," मैं कहता हूं, "खास नहीं।"

"अजीब बात है कि तुम थकते हो।" वह विचारमग्न बोलता है। "मैं तो कभी भी नहीं थकता। यह थकावट होती क्या है?"

मैं गहरी सांस लेकर उसे यह समझाने लग जाता हूं कि थकावट क्या है। मेरी बातें सुनते हुए वह अपने सामने वे पत्थर लगाता जाता है, जिन्हें बुढ़ऊ टॉम ने उसके लिए तराशा और उनसे घन, समांतर षट् फलक, शंकु तथा दूसरी अधिक जटिल आकृतियां बना दी हैं। जब मेरा उत्तर पूरा होता है तो मुन्ने के इन पत्थरों से एक जटिलतम संरचना तैयार होती है, मेरी देखी किसी भी चीज जैसी नहीं, परंतु फिर भी उसमें अपने ढंग का सामंजस्य है, विचित्र ढंग से उसे सोचा गया है।

"बड़ी अच्छी तरह समझाया है तुमने," मुन्ना कहता है। "अच्छा, यह बताओ, हमारी बातचीत रिकार्ड हो रही है?"

"हां, ज़रूर।"

"छवि अच्छी है, स्पष्ट है? छवि!"

"सदा की भांति।"

"तब दादा जी यह आकृति देख लें। देखो दादा जी, शीतलन के कोण यहां, यहां और यहां हैं..."

मुन्ने के दादा पावेल अलेक्सान्द्रोविच सेम्योनोव पार्सिवल के सिद्धांत के क्षेत्र में काम करते हैं। वह बहुत बड़े वैज्ञानिक तो नहीं हैं, पर उनका ज्ञान व्यापक है, मुन्ने का उनके साथ स्थायी सृजनात्मक संबंध है। पावेल अलेक्सान्द्रोविच ने मुझे बताया है कि मुन्ना अक्सर बड़े भोलेपन से सोचता है, परंतु सदा मौलिक ढंग से और उसकी कुछ संरचनाएं पार्सिवल सिद्धांत के लिए रोचक हैं।

"ज़रूर," मैं कहता हूं। "आज ही उन्हें भेज दूंगा।"

"हो सकता है, यह बेकार की बात हो," अचानक मुन्ना कहता है और हाथ के एक झटके से ही सारी संरचना ढहा देता है। "ल्योवा क्या कर रहा है?" वह पूछता है।

ल्योवा हमारे बेस कैम्प का सीनियर इंजीनियर है, बड़ा ही हंसोड़ और मज़ाकिया आदमी। जब ल्योवा मुन्ने से बात करता है तो हंसी के ठहाके और किलकारियां गूंजती हैं। मुझे कुछ जलन सी होती है। मुन्ने को ल्योवा बड़ा अच्छा लगता है, हर बार वह जरूर उसके बारे में पूछता है। कभी-कभी वह वंडरहूज़ के बारे में भी पूछता है और तब यह महसूस होता है कि गलमुच्छों का मधुर रहस्य वह अभी तक नहीं सुलझा पाया है। एक-दो बार उसने कोमव के बारे में पूछा। तब मुझे उसे यह समझाना पड़ा कि 'नूह-2' योजना क्या है, और यह भी कि इस योजना के लिए विजातिमानोविज्ञानी की क्या जरूरत है। माया के बारे में उसने एक बार भी नहीं पूछा। जब मैंने खुद उसकी बात छेड़ी, मुन्ने को यह समझाना चाहा कि अगर माया

ने धोखा दिया भी था तो मुन्ने के हित के लिए ही, कि हम चारों में से माया ही सबसे पहले यह समझी थी कि मुन्ने पर क्या गुज़र रही है और उसे मदद की ज़रूरत है—जब मैंने उसे यह समझाने की कोशिश की तो वह उठकर चला गया। ठीक ऐसे ही वह तब उठकर चला गया था, जब प्रसंगवश उसे यह समझाने लगा कि झूठ क्या है।...

"ल्योवा सो रहा है," मैं कहता हूं। "हमारे यहां यान के समय के अनुसार रात है।"

"तो तुम भी सो रहे थे? फिर मैंने तुम्हें जगा दिया?"

"कोई बात नहीं," मै सच्चे मन से कहता हूं। "मुझे सोने के बजाय तुमसे बातें करने में ज्यादा आनंद आता है।"

"नहीं। तुम जाकर सोओ," वह पक्का फैसला सुना देता है। "हम भी अजीब प्राणी हैं। हमारे लिए सोना ज़रूरी है।"

आह, कैसी ठंडक पहुंचती है मेरे कलेजे को इस "हम" से। वैसे तो इधर मुन्ना अक्सर "हम" कहने लगा है और मैं इसका अभ्यस्त होने लगा हूं।

"जाओ सोओ," मुन्ना फिर से कहता है। "पर पहले मुझे इतना बता दो, जब तुम सो रहे होगे तो यहां कोई नहीं आयेगा?"

"कोई नहीं," सदा की भांति कहता हूं। "निश्चिंत रहो।"

"यह तो अच्छी बात है," वह खुश होकर कहता है। "अच्छा, तुम सोओ, मैं जाकर विचारता हूं।"

"ज़रूर जाओ," मैं कहता हूं।

"नमस्ते," मुन्ना कहता है।

"नमस्ते," मैं जवाब देता हूं और स्विच ऑफ़ कर देता हूं।

पर मैं जानता हूं कि आगे क्या होगा और मैं सोने नहीं जाता। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आज फिर मेरी नींद पूरी नहीं होगी।

वह अपनी सामान्य मुद्रा में बैठा है, जिसका मैं आदी हो गया हूं और जो मुझे अब पीड़ादायक नहीं लगती। थोड़ी देर तक वह टॉम के माथे पर लगे, बुझ गये स्क्रीन को देखता रहता है, फिर आंखें आकाश की ओर उठाता है, मानो उसे वहां दो सौ किलोमीटर की ऊंचाई पर मेरे वेस कैम्प को, जो पथिकों के कृत्रिम उपग्रह से जुड़ा हुआ है, देख पाने की उम्मीद हो। उसकी पीठ पीछे निषिद्ध नूह ग्रह का मेरा परिचित दृश्य है—बालूई टीले, गरम दलदल के ऊपर डोलती कोहरे की टोपी, दूरी में निरानंद पर्वत शृंखला और उसके ऊपर विराट, पहले की ही भांति और शायद सदा के लिए रहस्यमय संरचनाओं की पतली, लंबी रेखाएं, जैसे कि किसी भयावह कीट के थरथराते श्मश्रु।

वहां अब वसंत है, झाड़ियों पर बड़े-बड़े, अप्रत्याशित चटकीले फूल खिले हैं—टीलों पर गरम हवाएं बहती हैं। मुन्ना अन्यमनस्क सा इधर-उधर देखता है, उसकी उंगलियां चिकने, तराशे पत्थरों को टटोलती हैं। वह कंधे के ऊपर से पर्वत शृंखला पर नजर डालता है। मुंह मोड़ लेता है और थोड़ी देर तक सिर लटकाये निश्चल बैठा रहता है। फिर हिम्मत करके हाथ सीधे मेरी ओर बढ़ाता है और टॉम की नाक तले लगा कॉल बटन दबा देता है।

"नमस्ते, स्तास," वह कहता है। "तुम सो लिये?"

"हां," मैं जवाब देता हूं। मुझे हंसी आती है, हालांकि नींद से आंखें भारी हैं।"

"कितना अच्छा होता अगर अभी हम मिलकर खेल सकते, है न?"

"हां," मैं कहता हूं। "अच्छा होता।"

"ललवा," वह कहता है और थोड़ी देर चुप रहता है।

मैं इंतज़ार करता हूं।

"अच्छा," वह प्रफुल्ल स्वर में कहता है। "तो चलो कुछ बातें करें। करोगे?"

"ज़रूर," मैं कहता हूं। "चलो, बातें करते हैं।"

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा।

हमारा पता है:
रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

प्रकाशित हो चुकी है:

बीसवीं शताब्दी का साहित्य, खंड ५, 'देश मेरा'

सोवियत साहित्य माला के इस खंड में रूसी गीतात्मक गद्य के दो मूर्द्धन्य लेखकों—कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्स्की और मिखाइल प्रीश्विन की रचनाएं प्रस्तुत हैं।

प्रकाशित हो चुकी है:

तोलस्तोय अलेक्सेई, सोने की चाबी: किस्सा बुरातीनो का

प्रख्यात रूसी लेखक की यह एक लोकप्रिय बाल-कथा है, जिसका नायक है कठपुतला बुरातीनो। बुरातीनो के रोचक, साहसिक कारनामे बाल-मन की गहराइयों में सहज ही उतरते जाते हैं। कथाकार की चमत्कारिक लेखनी से तराशा हुआ कठबबुआ बुरातीनो बेहद फुर्तीला और जीवन्त हो उठता है। पढ़ते समय बाल-जिज्ञासा बढ़ती ही जाती है। रूसी बाल-साहित्य की इस कालजयी रचना को देश-विदेश में पर्याप्त यश मिला है।

प्रकाशित हो चुकी है:

अ० कोरोत्स्काया, भारत के नगर

इस पुस्तक की लेखिका अ० कोरोत्स्काया वास्तुशिल्प में डी०एस-सी० और भारतीय संस्कृति के इतिहास की मानी-जानी सोवियत विषेपज्ञा हैं।

कला-इतिहासज्ञों, वास्तुशिल्पयों, कला विद्यालयों के छात्रों और सामान्य पाठकों के लिए लिखी गयी इस पुस्तक का विषय है प्राचीन काल से लेकर आज तक के भारतीय नगर और भारतीय नगर निर्माण कला। पुस्तक के लिए अधिकांश सामग्री लेखिका ने अपनी भारत यात्राओं के दौरान जुटायी थी, यद्यपि भारतीय, सोवियत और पश्चिमी भारतीय सोवियत और पश्चिमी यूरोपीय साहित्यिक स्रोतों से भी भरपूर लाभ उठाया गया है।

पुस्तक में अनेक दुर्लभ चित्र, तालिकाएं, खाके और ग्राव्यूरों की प्रतिकृतियां दी गयी हैं।

२०७

मुन्ना

...मनुष्य प्रकृति नहीं है, वह शून्यता को बरदाश[illegible] कर सकता। यदि वह अपने को शून्य में पाता है त[illegible] भरने के प्रयास करता है। यदि किन्हीं ठोस वस्तु[illegible] रिक्तता दूर नहीं कर सकता तो उसमें कल्पित दृश्य[illegible] और ध्वनियां भर देता है।...

